

श्रीजिनदत्तसूरिप्राचीनपुस्तकोद्धारफण्ड(सुरत)प्रयाङ्ग -४३

२ आ ॐ

अहम् ।

श्रीमत्खरतरगच्छापीश्वर-श्रीअकवर्मसिद्धिप्रतिभोषक जङ्गम-युगप्रज्ञान-महारक-श्रीम-
जिनचन्द्रसूरिशिष्य पण्डितभूतार-महाप्राध्याय-सुकलचन्द्रगणेशिष्यप्राध्याय-
श्रीसमपेसुन्दरगणिसिद्धि

श्री गाथासहस्री ।



जङ्गम-युगप्रधान-महारक-श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरीश्वराणा शिष्यरत्नोपाध्याय-
श्रीसुखसागरोपदेशात् (मुम्बय्या) कोटस्थानस्थ-श्रीशान्तिनाथजैनमन्दिर-
पेढीकार्यवाहकप्रदत्तेन शा मानच-दभाई भगनभाई भेषिवर्यस्य
धर्मपत्नी श्रीमती चुनीबाईप्रदत्तेन च द्रव्यसाहाय्येन
मुम्बय्या निर्णयसागरमुद्रणालये
मुद्रापयित्वा प्रकाशितम् ।

प्रकाशक-ज-हेरी मुलचन्द हीराचन्द भगत, मुम्बई ।

विद्यमान १९९९

प्रतय -५०० मेट

ईसीएन १९४०

द्रव्यसाहाय्यक—

१५१) श्रीशान्तिनाथस्वामि-जैनमन्दिर पेढी, कोट, (मुम्बई)

१००) शा० मानचन्द्रभाई मगनभाई धर्मपत्नी चुनीवाई, (पालनपुर-निवासी)

Published by Jhawari Moolchand Hirachand Bhagat, Mahavir Jain Mandir, Pydhuni, Bombay.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, Nirnaya Sagar Press, 26-28 Kolbhat Street, Bombay.

पुस्तकप्राप्तिस्थानम्—

श्रीजिनदत्तसूरिज्ञानभंडार, ठि० गोपीपुरा,
सीतलवाडी उपासरा, मु० सुरत



निवेदनम्

सुप्रसिद्ध कविवर्य उपाध्याय श्रीसमयसुन्दरगणि सगृहीत यह "गाथासहस्री" नामक अत्यन्त विद्वज्जनोंके विनोदार्थ प्रकाशित किया जा रहा है इनका अखिन्वसमय सत्रहवीं (१७) शताब्दी है। श्रीजिनचन्द्रसूरिजीके मुख्य शिष्य उ० सुकलचद्रगणि थे (कल्पसूत्र कल्पलताटीका पृ ६८२) उनके शिष्य समयसुन्दरजी थे जिन्होंने लघुनयमेंही तर्क-व्याकरण साहित्य वगैरहका इन्होंने अभ्यास करलिया था और गुरुमुखसे जैनागमोंका अभ्यासकरके फलस्वरूप सस्कृतभाषामें प्रयोगी रचना की और बहुतसे स्तवन-रास चोपाइ वगैरह गुजरातीभाषामें निर्माण किये।

प्रस्तुत ग्रन्थ उ० समयसुन्दरजीने स १६८६ में रचा है। यह ग्रन्थ पंडित जनोंके मुखकी शोभा रूप ताबुलके सदृश है और व्याख्यानदाताओंके लिये तो बहुतही उपयोगी है ग्रन्थकार खुदही इस प्रकार कहते हैं—

व्याख्याचातुर्यवान्छा यदि भवति तदा शास्त्रमेवम् समग्रम्,

कटे कृत्वा विदोपाऽवगमपरमार्थं गृहीत्वा गुरुषु ।

व्याख्याकाले विचाले प्रवरमवसर भाष्य वाच्य प्रसक्त,

सम्यग्भ्यानां पुरस्तात् चतुरनरचमत्कारकारं च भावि ॥ ३ ॥ (पृ० ५०)

यदि आप प्रखर वक्ता बनना चाहते हों तो यह सारा ग्रन्थ मुँह जबान करके, गुरुके मुखारविंदसे ग्रन्थका गूढार्थ समग्रके दृढमेधा गमा समझ प्रवचन करते समय समयानुसार सुभाषित पद्य श्रोत्रसे सज्जनोंके चित्तको (आप अवश्य) आकर्षक करनेवाले होंगे

आभारदर्शन—

[१] श्रीमोहनलालजी ज्ञानभण्डार (सूरत), [२] श्रीजिनदत्तसूरि^१ ज्ञानभण्डार (सूरत)

[३] श्रीजिनदत्तसूरि ज्ञानभण्डार (बम्बई), [४] श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि ज्ञानभण्डार (वीकानेर)

प्रस्तुत ग्रन्थके सशोधन करनेमें उपरोक्त भटारोंकी प्रतियोगी सहायता ली गई है अतएव उक्त भण्डारोंके सहायकमहाशयोंको और द्रव्यसहायक सज्जनोंको यहाँपर धन्यवाद दिया जाता है

१ कल्पसूत्रकी व्याख्याटीका जो इसी सीरीसूत्री ओरसे प्रकाशित हो चुकी है—जिसमें H D चेलणकर (प्रो० ऑफ सररून विल्सन कॉलेज बॉम्बे) महाग्रन्थके विद्वत्तापूर्ण लिखा हुआ Introduction है और श्रीयुक्त मोहनराज श्लीचंद देशाई (B A LL B Advocate) का अति परिश्रमसे लिखा हुआ उपोद्घात लिया गया है इस ग्रन्थके देखनेसेही इसका महत्व विद्वानोंको अच्छी तरहसे पता हो सकेगा।

२ समयसुन्दरजी महाग्रन्थके व्याख्यात्मकमें विद्याकी ओर प्रेम रखते थे उसी तरह बड़ी अवस्थामें अपने शिष्योंकी भी शिक्षा बननेके लिये परिश्रम करते थे। उन्होंने अपने वाङ्मनिसांके बोध देनेके लिये एक स्वाध्याय भी बनाया था जो इस ग्रन्थ है—

भणोरे चेलामाह भणोरे भणो, भणया मागमने आदर घणो।

भणयाने हुण् भलो यद्दरावणो, सत्तरवस्त्र पहिर ओठणो।

पद हुये वाचक पाठ्य तणो, चाजोठ उपर धेसणो।

भणिया पाले हुण् देसणो ग्रांघ शोली हाथमें दोहणो (= घटो)।

समयसुन्दररो गद्द मानणो इह परलोक मुहायणो। इति ॥

३ सं० १९०२ वर्षे कार्तिक वदि पांचमी तिने बुधवारे धीमपत्तने साठविंशत्ये श्रीजिनचन्द्रसूरिजिनदत्तग्ये प्रिण्टा प्रतिधिय विनेय ५० रंगविल्लेन धीरस्तु।

४ सं० १९०६ मिति वैशाख शुक्लपंचमी ११ तिथी गुरुवारे डिप्टिन ५ मतिनिरेन इद पुस्त्रिय धीरस्तु ॥

५ सं० १९५६ धरवा वद १३ प रिद्वर्ण ॥

संशोधन—

“श्रीजिनदत्तस्वरि प्राचीन पुस्तकोद्धार फण्ड”-(मूरत) से ४१ वॉ “सामाचारी शतक नामक ग्रन्थ प्रकाशित किया गया है उसके निवेदनमें “४ प्रति पाठशुना लंडारभांथी साहित्यप्रेमी मुनि श्री पुण्यविषयशुना अनुग्रही” इस प्रकार लिखा है लेकिन वह प्रति पाठनके भण्डारकी न समझकर प्रवर्तक मुनि श्रीकान्तिविजयजीके भंडारकी समझना.

पूज्य गुरुवर्य श्रीउपाध्याय सुखसागरजीमहाराजने यह ग्रन्थका सगोवन करनेमें अति परिश्रम उठाया है, और श्रीयुत मोहनलाल भगवानदास श्वेरी सोलिसिटर महाशयने भी ग्रुफ देखनेमें त्वसमयका भोग दिया है और इस ग्रंथकी प्रस्तावना तथा ग्रंथसार लिखनेका भी परिश्रम लिया है प्रस्तुत ग्रन्थमें किसी भी तरहकी अशुद्धि रह गई हो तो सज्जन महाशय सुधारेंगे और पठन-पाठन कर संशोधक महाशयका परिश्रम सफल करेंगे यही शुभेच्छा.

संवत् १९९६ मार्गशीर्ष शु० ३
ता० १३-१२-३९, वस्त्रई.

}

निवेदक—
मुनिमंगलसागर.

गाथासहस्री ।

भन्तावना

सच्छदा य सरूना सालकारा य मरमउल्लाना ।
वरयामिणिघ गाहा गाहिज्जती रस देई ॥ ८३३ ॥

अथकर्ता ने अथरचनाकार

आ अथ 'गाथासहस्री ना कर्ता उपाध्याय श्रीसमयभुएर उ युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसुरि इ ने भरतरगच्छना अिक मुप्रसिद्ध आचार्य दत्ता ने जेले सभ्राट् अकारने संवत् १६४८मा हादोरमा जैन धर्मने उपदेश कथे दतो तेभना सिध्द उपाध्याय श्रीसमयभुएरजिनना तेमो सिध्द दत्ता आ अ उपाध्याय श्रीसमयभुएर संवत् १६८६मा रच्यो दतो

गाथासहस्राती अने गाथाभट्टती

आ अथमा मित्र मित्र आगम तेमज प्रकरल अथोभायी व्याख्यानमा उपयोगी यर्ष पडे तेमज धर्मव्याओमा पलु प्रमल्लभूत गालुम तेवा अवनरज्जोने तेमज केषाड सुभाषितोने अन्योहितज्जोने अमद म्पचामा आओ उ मोटे भागे गाथाओने ज अमद उ जेनेतर अथो मदाभारत पथपुराल मानवी स्मृति आदिभायी पलु उतासा अपाया उ आ अथनुं नाम गाथासहस्री राष्य उ ते परथी प्रसिद्ध गाथासहस्रीनुं आपखने सट्ठ स्मरल्लु थाय प्रसिद्ध जैनआचार्य पादविभक्तुि ७ पाषित म्चि तरी उ पलु न्जित्ता उ तेज्जि गाथा ससहस्री मानी गाथाओने मोटे भाग रच्यो उ जेवी मा यता दोर प्रमुत गाथा समद रवाने अथकर्ताने प्रेरणा मनी द्योय अने गाथासहस्रीने जेम शुभारिक सुभाषितोने उदयगम रसमय समद उ तेवोज सावरसने रसमय समद रवानो उद्देश अथकर्तानो द्योय ते संभवित उ अनवा जेम उ के अानुं नाम पलु गाथासहस्री राषचानो रात्रमा तेमनो उरासे द्योय कारु उ उचठना बागना संसृत सुभाषितो वाद कीये तो सा स्रगतसोनी आसपास आ त सैद्धान्तिक गाथाओनी मध्य थाय उ पछी अथनुं नाम लुहु राष्य जेधये जे देवुथी के ममदमा गाथाओ वधी जवाथी-जे के पूरीसहस्रनीधी पल-संगतग सदस्र होवाथी अथनु नाम गाथासहस्री' पसद करवामा आनु द्योय.

अने अथो वच्ये जीउ रीने मुकणसो योय नथी कारु के गाथा ससहस्री मा म्बव गृगार रसने पोषवामा देवुथी धान्वनी दृष्टिये उतम कोटिनी गाथाओनो समद करवामा आओ उ ज्यारे अद्विया तो व्याख्यानमा तथा धर्मव्यामा ससेपथी पलु सथोठ रीते म्थन करी राकाय जेवी मुंर गाथाओनो समद करवामा आओ उ दुकमा अद्विया सगृहीत गाथागी सम्भ्याना प्रमालमा भोगी सम्भ्याना विरयनी यथा तथा मादिनी मने उ आ ज कारु अथो कर्षे विरतुत सार नीये आपवामा आओ उ ते परथी वाचने उपायाय श्री समयभु रना सैद्धान्तिक अथोनुं तेमज अ य अथोनुं विशाल वाचन विवेक धुद्धि, उदयगमता सभार म्ता व्याख्यान-कुरावता आनि उभाव आवरो अने तेनी म्दुतुवता प्रीत धरो

अथकर्तानु अरित्र तथा तेना अ य यथी

उपाध्याय श्रीसमयभुएरजिनो ज म सायोर-सयपुर (जे रथग श्रीमहावीरस्वामिना प्रसिद्ध जैनने लधने भूज प्पानि पायुं दउ)मा यथो दतो ते उधीउ तेमले रवरदिन तीताराम योपाध ना छडा अानी नीछ हागमा ज्जुवापी उ पोरेवा-ज्ञानिना इपणी पिना तथा लीबाहे गाथाथी तेमनो ज म यथो दतो तेमनी ज मसाव चोक्ष मणी नथी पल ते संवत् १६७०नी आसपास दरो जेम तेमले रवेका पडेबा सुंरुत-अष भावशनक नी साव संवत् १६४१ उ ते परथी लो उ वणी तेमने हीमा आपनार श्रीजिनचन्द्रसुरिने सुंरिपद स १६१२मा मज्जु द्य ते परथी श्रीसमयभु-रने स १६१२ पछी ज ही हा आपवामा आवी दगे ते सिद्ध थाय उ संवत् १६२८ना श्रीजिनचन्द्रसुरि आमाथी साभलिना संधने लभेव धनमा तेमनु नाम न दोवाथी श्रीसमयभुएरे खारभाह हीसा हीधी दगे जेम अनुमान थाय उ

अथकाने रवेका सुंरुत प्रान्त अथो ही ज्जो साववार नीये दशाओ उ (१) भावचक्रम् स १६४१ (२) म्दुल्लही स १६४४ (३) रूपकमाचार्युं स १६४५ (४) वातुनोसव-व्याख्यानवद्धी स १६६५ (५) कानिकाचावकथा स १६६६, (६) भावचक्रम् स १६६७ (७) सामाचरीउतकम् स १६७२ (८) सिधेवचक्रम् स १६७२ (९) गावाह्यम् स १६७३, (१०) विचाह्यम् स १६७४ (११) इतिवरसमीरुद्धि (श्रीजिनचन्द्रसुरिदिग्द वीररत्नव-वृत्ति) स १६८४ (१२) सिधेव संमह स १६८५, (१३) सिंहाव्याख्यम् स १६८५ (१४) जैनवच्य-कल्पमाहृति स १६८५ (१५) गावमहरी स १६८६ (१६) महावच्युतोर्वीरुद्धि स १६८७ (१७) जयतिदुग्दमाहृति स १६८७ (१८) ज्वररत्न-रत्नमाहृति स १६८८ तथा १६६६ (१९) म्दुनेकासिंरुद्धि स १६६६ (२०) संधेनोलावरीरवाय स १६६७ (२१) वृषभावरुद्धि स १६६४ (२२) रघुवज्जडीका स १६६५ (२३) १६६२ श्रीनाथप्रभाणे (२४) म्दुमाहृति स १६६५ (२५) कल्पमाहृतीरी स १६६५ (२६) ज्जममसाार स १६६५ (२७) अत्र-वच्य-वर्णित महावीरवच्यो-वृद्धि-वर्णित (२८) मिमलवमहत्तु-वृद्धि (२९) शागुटाह्यारुद्धि, (३०) प्रलोचनार्थमह (३१) म्दुमाहृत्स (३२) युग-प्रधान श्रीजिनचन्द्रसुरि ५ १६८-१७१

अमेनी उ५१ डी वृत्तियो भाटे जुओ श्री मोदनवाव हलीयह देसाहृते कविार समयभुएर नामने लेख जे आन-वसा-वमदोदधि भोजिक उभानी प्रस्तावनामा मुनि यथो उ

એમના હપર દર્યાવેલા સમ્પત પ્રાપ્ત તથા શુભગતી અપરિ પચ્છી તેમજ તેમાં અર્ચવા વિગિમ વિષયો પચ્છી તેઓ અનેક વિષયમા પાંચત અદ્વૈત વિદ્યાન દતા, તેમજ પ્રવચન ગનિના ધ્વિ, યજ્ઞગી, વૈયાકર ગી, ગિ દ્વાંતના દતા, સ્વયંકાગ, વ્યાખ્યાનકાર તથા શીકાકાર દતા, અને સંસ્કૃત પ્રાકૃત પદ પચ્છી ગાજ્ઞાની સાધાની જેન પ્રમુલ ધરવતના દતા-તે સ્પષ્ટ યાથ છે તેમના મુખ્ય સિખ્ય સંપનને સવન્ ૧૯૭૭મા એવી 'સમ્પાદક'ના પાતક દવિ'ના તેમને માટે કરેલા ઉદ્ગાંવના સાર શુભગતીમા એ છે કે તેમને વ્યાખ્યાનકાર, કવિ, ગાની, વૈયાકર ગી, સાન્વિક, નાતિવવેના તથા કૈ ગાનિક તન્કિ ગચાનિ એવી હતી, તેમને સિખ્ય પ્રગિચ્છની ગાની સ્વતિ હતી, તેઓ લોક પ્રિય તથા વાગ્ચિય દતા, અને એક જ પદમા આદ લાખ અર્થ પ્રાપ્ત કરવાની ચમત્કારી શક્તિ ધરાવતા દતા છે. શ્રી બાબત તેમને સ્વયં 'અમ્બુચ્છી' અને કહેવાને છે કે તેમા એક જ પદના તેમને આદ લાખ અર્થ ક્યાં છે તે ક્ય તેમને સવન્ ૧૯૪૮મા સ્વયં શ્રીનિતનંદનસુત્રિ બાદશાહ અન્વચ્છી યાનેગમાં મુલાકાત લીધી ત્યારે તેમની સાથે દબારમા બહિ બાગાદને સ્નેને વાગી નવાળી પ્રચ્છા ન્યાં દતો બાદશાહે તે ગ્રંથ પોતાના હાથમા લઈ 'પદન કમળે, સર્વેસ વિગાર-વેવાવો પામે સિતિ પાના' એવી શબ્દશા ક્ષાંતી શ્રી સમયસુદના દાખમા તે ગ્રંથને મુચો હતો તેજ વર્ષમા એટલે સવન્ ૧૯૪૯ના કારણ સુદ ખીજને દિને સ્વયં શ્રીનિતનંદનસુત્રિ બાદશાહે યગપ્રધાન પદ આપ્યુ, ત્યારે શ્રી નાનનિતને શ્રીનિતનંદનસુત્રિ નામ ગાળી આપ્યું પદ, તથા શ્રીસમયસુદ તેમજ શ્રીગુ વિનયને વચ્ચે પદ આપાયુ હતુ શ્રીસમયસુદને સ્વાસ્થાદ દુષા ગણ-પાદ:પદ તવેટ ગરુદમા દક્ષ શ્રીનિતનંદનસુત્રિ આપ્યુ હતુ સવન્ ૧૯૭૮મા શ્રીનિતનંદનસુત્રિ સ્વર્ણસ્થ યથા અને તેમની પાટે શ્રીનિતનંદનસુત્રિ નામ તેમની સાે જ એક જ દિવને મૂચિપદ પામેવા શ્રીનિતનંદનસુત્રિ બાગ વર્ષ મુધી શ્રીનિતનંદનસુત્રિના આદામા તથા પછી સવન્ ૧૯૮૧માં ૮ વાચાર્થિય બન્વર ગચ્છની સિત શાખા કાટી એમાં શ્રી સમયસુદના નવન્યાય-નિષ્ઠાન વિદ્યાન ગિચ્છી શ્રી સર્વનંદન કાગ-અત દતા એમ કહેવાય છે ત્યારથી શ્રીનિતનંદનસુત્રિના વાણામા શ્રીસમયસુદ દુષા-આય ગાંત મુડી તથા સવન્ ૧૯૮૨મા શ્રી સમયસુદને ટ્રિઓ-દાર ક્યો સવન્ ૧૭૦૨ના ચૈત્ર શુક્ર ૧૩ને દિને અમરાગદમાં, સ્વયં સવન્ ૧૯૮૨થી ૧૩ વસ્થાને લદને તેઓ મૃદેતા દતા ત્યા દાન પટેલની પોળના દુષાઅયના, દુષા-આય શ્રીસમયસુદ સ્વસ્થ યથા ત્યારે તેમની હસ્ત ૮૦ વર્ષ આસપાસની હતો તેમની ગિચ્છ પદપત્ર સવન્ ૧૮૭૭ મુધી લો હતી જ એમ તેમની પચ્છગના ચયેલ શ્રીસમયસુદ દુષા-પચ્છા ગિચ્છ શ્રીઆગ-કરુણા ગિચ્છ શ્રીઆલમચરે તે વર્ષમા એવી 'અમ્બુચ્છી કાંસરી અનુભવી'ની પ્રગલિત પચ્છી ગાયમ પટે છે દુષા-આય શ્રીસમયસુદના શિચ્છ શ્રીદર્પનદને શ્રીનુમનિકીવ માથે શ્રીઆનાગચ્છ-દનિમાની ગાથાગ્ગા પર ૧૩૬૦૮ યોક-પ્રમા ! વૃત્તિ ગ્ચી હતી તથા એકલા ઉનગ-અયનશ્ચિત્તિ ગ્ચી હતી

પ્રસ્તુત ગ્રંથ ગાથાસહસ્રીમા ગ્રંથકર્તાએ સ્વાત મિદ્ધગેની આઅચ્છાનુર્ગિમાંની ૧૬ ગાથા ઠાકી તેના વિવેચન માટે પોતાના 'વિશેષસમઢ'નો દવાલો આપ્યો છે એ દપગત પોતાના 'વિશેષવતઢ'નો પણ હક્ષેષ આ ગ્રંથમાં ક્યો છે એમનો 'વિસવાદગતક' ગ્રંથ સિદ્ધાંતમાના વિસવાદ સળથી દપયોગી અર્થાનો ગ્રંથ છે આ ગ્રંથો દપગત 'વિચાન્વતક' 'સામાચારી-શતક', તેમની સિદ્ધાંતપ્રિવા દર્ગાવે છે તેમને બિહ્કપુરમા મદ્મદ ગેખને પ્રતિગે'ઓ હતો શ્ચિવના મખત્તમ રોખને પ્રતિગોધી પાંચ નદીના જલચર સ્વે તથા ગાયોની રક્ષા કરી હતી જેસલમેરમા ગવલ લીમડને દપદેગ આપી સારાનો-સારનો વધ અટકાવ્યો હતો આ તેમની પ્રતિગોધકગનિના પ્રચ્છક દૃષાતો છે

પ્રસ્તુત ગ્રંથ વાચના જ એ તરી આવે છે કે કર્નાને કવિદૃષ્ટિ હતી (ગા ૭૬૬-૭૬૮) તથા મુખાપિતનો અ યત ગોષ હતો કાચુકે પ્રાકૃત સિદ્ધાંતની ગાથાઓમા પણ વચ્ચે વચ્ચે કવચિન્ત અન્વૈત ને અચિન્ત પ્રાકૃત મુખાપિતો ઠાન્ચા છે (ગા ૨૭૨-૨૯૦, ૩૪૨-૪૨૮) કેવલ ન્યોતિપ ને સત્તુને લગની ગાવાઓ પણ તે વિષયના ગ્રંથમાથી હતાગી છે (ગા ૪૩૭-૪૪૦, ૪૫૮, ૭૬૬-૭૭૦) પ્રાણાધારાન્ધાન પણ તેમનો પ્રિય-વિષય દરો (ગા ૧૯૮-૨૦૭) વ્યવહારની ગલવના પણ તેઓ બતાવે છે (ગા ૨૦૮-૨૦૯) ગાનાર તથા સાન્વિદાની વિવિધ મંદલી પણ તેમણે લૌકિક નાટક માટે વર્ણવી છે (ગા ૩૨૨-૩૨૩). ગ્રંથકર્તા સમઢ સ્ત્રી વખતે ગચ્છાદિ બેદને લક્ષમા હેવા તથી તેમણે સ્વરોખચ્છુરિના 'આકલિવિ', આચાર પ્રદીપ' તેમજ શ્રીદેવમુન્દરની તથા શ્રીસોમમુન્દરની સામાચારીમાંથી અને છેવટે ૧૧ સુદર ગાથા ચિત્રાવાલગચ્છીય (તપાગચ્છીય) શ્રીદેવેન્દ્રસુત્રિના 'સુદન્ગાચરિવન્' (જેતુ ખંડે નામ 'સુદન્ગાકશ' છે)માથી આપી છે ટુંડમાં મુવાપિત ન્તોનો સમઢ સાચી શુણ્ઘાહિતાથી સ્થળે સ્થળેથી એવરી જેમ સ્ત્રીનો સમઢ કરે તેમ ક્યો છે 'આવકલિવિ' આવક પરિત ધનપાલની સ્વેલી છે તેમાથી પણ તેમણે અવતળ્યો ગ્ચો છે (પૃષ ૧૯) એમનો હામ્યપ્રિય આનંદીસ્વલાવ પણ (ગા ૨૫૬, ૮૪૦) સ્થળે સ્થળે તરી આવે છે વિશેષ ગ્રંથના અખ્યાસથી માલમ પટે એમ છે. હતા શુભગતી વાચક માટે નીચે ગાથા સહસ્રીનો સાર આપ્યો છે તે દપરથી તેમને પણ ખાતરી થશે.

આ ગ્રંથ સાદે ટિપ્પણુ અપાયું છે તે મ્નોપક્ષ નથી. તેના કર્તાનું નામ આપેલ નથી તેથી તે કોણે રચ્યુ તે કહી ગકાય એમ નથી તેમાં અશુદ્ધિ વિગેષ માલમ પરી છે ને કેટલેક સ્થળે મૂળ ગ્રંથની ગાથા સાથનો સંબંધ સ્પષ્ટ નથી (નુઓ પૃષ ૬ના ૩ વા ટિપ્પણુમાની "મદનૈ પૂજી અર્ચના મન્ગી" ઇલાદિ) ટિપ્પણુકાર ન્યા મૂળમાંની ગાથા પર કીડા દપલખ્ધ છે ત્યા કીડાભાગ પૂકાની પ્રાય તેજ શબ્દોમાં ટિપ્પણુ આપે છે ભાષા પરથી ટિપ્પણુકાર સવત્ ૧૮૦૦ આસપાસ થયાતુ અતુમાન યાથ છે

ગાથાસહસ્રીસાર

હવે ગાથા સહસ્રીનો પૃષ્ઠાનુક્રમથી સાર આપીશુ જે પ્રાકૃતથી અનલિલ વાચકોને હપયોગી થઈ પડને, તેમજ વિષયાતુ-કમની પણ ગરજ સારશે

પ્રથમ આચાર્યના ૩૬, સાધુના ૨૭ તથા શ્રાવકના ૨૧ શુણ્ઘો દર્યાવી નવકારવળીના ૧૦૮ માણુકાનો સળધ પંચ-પરમેષ્ઠિના ૧૦૮ શુણ્ઘો સાથે છે, તે દર્યાવ્યું છે પૃષ ૧

પછી જિનકલ્પીના ૮ ભેદ ને ૧૨ દપકરણો તથા સ્થવિરકલ્પીના ૧૪ દપકરણો વર્ણુગ્યા છે શ્રાવક દુળમા જનની પ્રરંસા અને તપસ્વી અને જ્ઞાની જે પ્રકારના શુભા જ્ઞાની પોતાને તેમજ પરને તારે છે એમ કહ્યું છે. પૃષ ૨

... (The text is extremely faint and mostly illegible due to low contrast and blurring. It appears to be a continuation of a narrative or a list of items.)

... (Another block of faint text, likely describing a scene or a character's actions.)

... (A third block of faint text, possibly a dialogue or a descriptive passage.)

... (A fourth block of faint text, continuing the narrative.)

... (A fifth block of faint text, possibly a concluding paragraph or a section header.)

... (A sixth block of faint text, likely another part of the story.)

... (A seventh block of faint text, possibly a list or a detailed description.)

... (An eighth block of faint text, continuing the text.)

... (A ninth block of faint text, possibly a final paragraph or a signature area.)

... (The final block of faint text at the bottom of the page.)

પછી ધ્યાતા અને પ્રાણાયામના પ્રકાર વર્ણવી, તેથી થતો મનનો જ્ય વર્ણવી, મન તથા પવનની વિકીનતાથી ઇદ્રિયશુદ્ધિ, ને તેના જ્યથી મોક્ષપ્રાપ્તિ કહી છે સાધુ કથી દશાએ વર્ને છે તે નિશ્ચયથી નાલુવું રાક્ય નથી, તેથી દીક્ષા પર્યાયમાં જ્યેષ્ઠને વ્યવહારથી વહન થાય છે વ્યવહારની બલવત્તામાં ખીનં દૃષ્ટાતો આખ્યા છે સુવિહિત વસતિ, વિહાર, રિયતિ, ગતિ, ભાષા તથા નિનયથી માલમ પડે છે માતાપિતા ન્યેષ્ઠપાઈ તથા રત્નાધિક પાસે કૃતિ-કર્મ ન કરાવવું પૃષ્ઠ ૧૩

જિનપૂતવિધાન, તથા કલ વર્ણવી, ગર્ભોત્પત્તિનો ખાર સુદર્તનો સમય કહી, સ્ત્રીલ તથા પુરુષવત્તની અવધિ કહી છે કાચા ધરામા ભજુ જલ જેમ તેનો નાગ કરે છે તેમ ઓછા પાત્રને આપેલુ સિદ્ધાતરહસ્ય તેનો નાશ કરે છે સાત વખત શ્રીસુવિધિ-નાયથી શ્રીગાતિનાથ સુધીમા, દુષ્ટે ખોણા ત્રણ પદ્યોપમ સુધી, તીર્થ-વિચ્છેદ થયો છવોના ઉત્પત્તિભેદે આઠ પ્રકાર છે પૃષ્ઠ ૧૪

ચૌદ પ્રકારે આત્મિક અધિ કહી છે એક જ વસતિમાં જિનકલ્પી વધાએમા વધારે સાત હોય આર્તધ્યાનથી તિર્યચગતિ, રૌદ્રધ્યાનથી નરકગતિ, ધર્મ-ધ્યાનથી દેવગતિ અને શુકલધ્યાનથી મોક્ષ થાય આર્તધ્યાન કામરજિત, રૌદ્ર, હિંસારજિત, ધર્મધ્યાન ધર્મરજિત અને શુકલધ્યાન નિરંજન છે ન્યારે પાલુ પૂજાય છાટે એ જ ઉત્તર હોય કે એક નિગોદનો અનંતમો ભાગ સિદ્ધિ ગયો છે. પછી ચરણ-સિત્તરી તથા કચ્છ-સિત્તરી વર્ણવી છે 'આચીલુ'ની વ્યાખ્યા કરી એકેંદ્રિય જીવોને પાલુ દશ સજ્ઞા હોય છે તે દૃષ્ટાત પૂર્વક કહી, જે છ સજ્ઞા તેમને નથી હોતી તે પાલુ કહી છે ગીતાર્થનો વિહાર તથા ગીતાર્થ મિશ્રિત વિહાર એ સિવાય ત્રીને કોઈ જિનેશ્વરે કહ્યો નથી ચતિવરોને ઉપાશ્રયદાન વચ્ચારપાણી રાચન ને આસન આખ્યા બરોબર છે પૃષ્ઠ ૧૫

આશ્રયદાનનું લોકોત્તર કળ કહી ચૌદ શુભસ્થાનોના નામ કહ્યા છે નવ અભવ્યનો નામોક્ષેષ કરી, શાશ્વતી પ્રતિમાના ઉત્સેષ અંશુલથી પાચસે ધ્રુવ તથા સાત હાય એ જ પ્રમાણુ કહ્યા છે અનુક્રમે ત્રણ વર્ષ, પાચ વર્ષ, તથા સાત વર્ષ સુધી સચિત રહે એવા ધાન્યો વર્ણવ્યા છે હાય નચાવી અન્યને ઉપદેશ આપે પાલુ પોતે ન કરે તો શું ધર્મ વકરો કરવાની બનાઝ વસ્તુ છે? રાખ્ધી મૃગ, રૂપથી પતંગિયું, ગંધથી ભમરો, આહારથી મસ્ત્ય, અને અપરંદ્રિયથી હાથી પાશમા પડે છે કવચિત્ જીવને કવચિત્ કર્મ બલવાન થાય છે, જીવ અને કર્મને અનાદિ તળથી વેર છે ગઈ અને સરસવ જેટલા પાલુ પારકા છિટો જીવે છે તો ખેલાકળ જેટલા મોટા પોતાના કેમ ભેતો નથી? માયું ધ્રુવયુ, ચિત્ત ચમકયુ, અંગ પુલકિત થયુ, છતા પાલુ પરશુલુ ઝહલુ કરવા બજ પુરકની વાણી ન જ નિકળી એક સમયે ઉદ્દેષપણે નવલાખ પચેંદ્રિય મનુષ્યની સ્રીગર્ભે ઉત્પત્તિ હોય સઘ આદિના કાર્યમદિ ચક્રવર્તી સ્ત્રેન્યને પાલુ ચૂર્ણુ કરે એવી લખ્ધિ યુક્ત તે પુલાક લખ્ધિવાળો નાલુવો ઉત્તમ નર (શલાકાપુરુષ), પાચ અનુત્તર વિમાનવાસિ દેવો, ત્રાયસિરા દેવો, પૂર્વધર, ઇદ્રો, કેવલિદીક્ષિત, શાસનદેવી, ને શાસનયક્ષ, એ આઠ અભવ્ય ન હોય અનિહત, સિદ્ધ, ચૈલ, તપ, કૃત, ગુરુ, સાધુ, તથા સવનો વિરોધી દર્શનમોહનીય કર્મ બાવે તેથી અનંત સસારી થાય સાધુ કે ગુહસ્થી જે ધર્મદાન કરે તે જ ધર્મશુક આરંભ હોય તો દ્યા નથી, સ્રીસગંહોય તો બ્રહ્મચર્ય નથી, શંકા હોય તો સમ્યકલ નથી, અને કલ્પજાલુ હોય તો પ્રવન્યા નથી ગૃહસ્થીના વ્યાપાર પરિશ્રમથી મિત્ર થયેલા કેટલાકને રમણી વિશ્રામસ્થાન હોય ને કેટલાકને જિનધર્મ વિશ્રામસ્થાન હોય ઉદરભરણુ સરખું જ હોવા છતા મૂઠ અને અમૂઠના કર્મવિપાકમા કેટલું અતર છે મૂઠ નરક દુ ખ પામે છે અને અમૂઠ ગાશ્વત સુખ પામે છે પૃથ્વીપર પરેલા ભૈરવ-જપાપાત કંચેલા, તરવારથી હેઠાયલા પાલુ જીવે છે, પરંતુ ક્ષુધાથી પીડિત જીવતા નથી. લૌકિક પ્રેમ વટારવ જેવો પહેલા ગંભીરને પર્યંતે ધીમો હોય છે બ્રમરની અન્યોક્તિ કહી છે. અતિહાસ્ય, અતિસતોષ, અતિદુર્ભન મનુષ્યો સાચનો સહવાસ, અતિહૃદય વેષ-પાચે મોટાને પાલુ હલકાં પાડે છે પૃષ્ઠ ૧૬

અનિહંત પાલુ એમને એમ તારવાને સમર્થ નથી, તે દુશળ માર્ગદર્શક છે, તેના દર્શાવેલ માર્ગે જીવ તે તરે દશપૂર્વ તથા અર્દ્ધનારાચ સઘયણુ શ્રીવજ સ્વર્ગે જતા વિચ્છિન્ન થયા ઋપભદવ, તેમના નવાણુ (ભગવતિના) પુત્રો અને ભરતના આઠ પુત્રો એમ દુષ્ટે એકસો આઠ એક જ સમયે સિદ્ધ થયા અર્દ્ધ આમળા જેટલી પૃથ્વીકાયમાના જીવો કષુતર જેટલુ જ રૂપ ધારણુ કરે તો પાલુ જંશુદ્ધીપમા ન માય આ ભરતજેત્રમા કેટલાક મિથ્યાદષ્ટિ જીવો પાલુ એવા ભદ્રિક છે કે મરીને નવમે વર્ષે કેવળી થયો. પાચે ઇન્દ્રિયોની ઉદ્દેષ વિષય-ઝહલુ-અવધિ વર્ણવી સોળ પ્રકારના વચન કરી કહ્યા છે પાંચ પ્રકારના મિથ્યાલવ કહી, કુસીન સમર્થ પુરુષે પ્રતિજ્ઞા પૂર્ણ કરવી કે યુદ્ધમા મગ્નું, પાલુ પોતાથી ઉતરતા મનુષ્યોના ઉપાલભ ન સહેવા એમ કહુ છે જંશુદ્ધીપમાં ઉદ્દેષપણે ત્રીગ ચક્રવર્તી અને જઘન્યથી ચાગ હોય ધાતકીખરમા તથા પુષ્કન્દીપમા દરેકમા બમણા હોય વાસુદેવ આદિનુ પાલુ તેમજ નાલુવું એક દિવસે જે દેવો અ્યે છે તેમાથી યોડા જ મનુષ્યભવ પામે છે, તેથી કચારે મનુષ્યભવ મળશે એ ચિંતાથી દેવો દુ ખી મ્દે છે ભિન્ન ભિન્ન પ્રકારના દેવોની ઉપર નીચે તથા તિર્યક જવાની શક્તિની મર્યાદા બતાવી છે પૃષ્ઠ ૧૭

પિસ્તાળીશ આગમોતુ પ્રમાણુ દુષ્ટે છ લાખ પિસ્તાળીશ હનર પાંચસો શુમાળીશ શ્લોક જેટલુ છે સ્વર્ગની વાવોમાં મન્યાદિ જલચર હોતા નવી, ત્રેવેયકવિમાનોમાં વાવો નથી અને જળ પાલુ નથી ચૈલદ્રવ્યના પૂતનદ્રવ્ય ને નિર્માલ્યદ્રવ્ય એમ બે પ્રકાર વર્ણવ્યા છે પછી પચ્ચખાણુનુ મહત્વ કહુ છે વિહરમાન જિનેશ્વરો ઉદ્દેષપણે એકસો સિત્તર તથા જઘન્યથી વીશ હોય દશ કલ્પવૃક્ષોના નામ તથા કળ વર્ણવ્યા છે પૃષ્ઠ ૧૮

યોગપટ (સ્થવિર, જ્ઞાનકે વાચનાચાર્યને) ચાર અંશલ વિવૃત્ત સધિરહિત ગરીરવિશ્રામ અર્થે હોય તો અવષ્ટભલ દોષ ન થાય શ્રાવક પાચ તિથિ પાળે અને અન્ય તિથિમા તીનાસિલાપ નિના વિષયસુખ ભોગવે એક દીવામાથી સો દીવા પ્રકટાવવામાં આવે તો ય દીવો પ્રકારો છે, તેમ દીપ જેવા આચાર્ય અન્ય દીપ પ્રકટાવે છે ઉદ્દેષ શ્રાવકના છ શુલુ કહી ચૈથુનવી યતી જીવહિંસા બતાવી છે મલ્યોદ્ધાર અર્થે આલોચના માટે ગીતાર્થની ગવેષણા સાતસો ચોજન સુધી બાગ વરસ પર્યંતે કરે અગીતાર્થ આલોચના આપના સ્વ તથા પરને પાડે અગીતાર્થ જેમ વર્તે, અગીતાર્થ-નિશ્ચિત જેમ વર્તે, તેમ ગચ્છને વર્તાવે અને અનંતસસારી થાય પછી શ્રાવકની વ્યુત્પત્તિ ઢાગ વ્યાખ્યા કરી છે જ્ઞાનની, કેવળની, ધર્માચાર્યની, કે સાધુની નિદા કરનાર માયાવી જિલ્લિખિક ભાવના કરે છે પછી માન, ઉન્માન, તથા પ્રમાણુથી મુવક્ષલુવાળો વર્ણવ્યો છે પૃષ્ઠ ૧૯

તીર્થકરના જન્મ, અભિષેક, દીક્ષા, જ્ઞાન, ને નિર્વાણના મ્યળો, સ્વર્ગના ચૈલો, મદ્દ, નંદીશ્વર તથા મનુષ્ય લોકના ચૈલો, અષ્ટાપદ, ગિરિનાર, ગનથપદ, ધર્મચક્રસ્થળ (તક્ષશિલા), અહિચ્છરા, રવાવર્ત તથા ચમરના ઉત્પાનસ્થળને વહન ક્યુ છે. પરને

શ્રાવકે યથારાત્નિ ગુણ્ણીન સાધુને ઉચિત દાન ને ગુણવાનને ભક્તિપૂર્વક દાન દેવું પછી સમવસગ્નુમા વિવિધ પર્યંદા કેમ ખેસે ને અન્યોન્ય વિનય વળવે તે કહ્યું છે નદીથર દ્વીપના અજનાદિ પર્વતપરના પર તથા ઇંદ્રની રાજધાનીઓના ડર મળી ૮૪ ચૈલ્યને વંદના કરી છે અગિયાર અગો કલિકથુત છે પણ દૃષ્ટિવાદમા વિકલ્પ છે. કાલિન્દુનનો અ યથનકાળ દિવસ તથા રાત્રિના પહેલા ને છેક્ષા પ્રહર છે. લેત્રાદિક કર્મના ઉદયનું કાળ છે તે લક્ષમા ગણી શુભ ક્ષેત્રમા શુભ દિગ્મા સન્મુખ શુભ તિથિ નક્ષત્ર મુહૂર્તમા દીક્ષા વ્રતારોપણુ આદિ કરવા. પ્રભાસ્વ (સાધારણ દ્રવ્ય), યજ્ઞહૃત્યા, દરિદ્રનું ધન, ગુરુપત્ની, દેવદ્રવ્ય એ સ્વર્ગમા રહેલાને પણ પાડે પૃષ્ઠ ૨૮

આચાર્ય, ગચ્છ, કુલ, ગણુ, સપ કે ચેલ્યનો વિનાગ ઉપચિત્ત યતા સ્વધીર્માનુસાર પગઢમ કહે ને નાગ અટકાવે, તેમ કરતા દોષ લાગે તેની ગુરુસમક્ષ આલોચના કરી મિચ્છામિ દુક્કર માત્ર દેવાથી શુદ્ધ થાય, કાળુ કે મોટી નિર્લગ્ન થાય છે જિનેશ્વરનાં ચમર છત્ર કલગ આદિ ઉપકરણો નક્ષરો આપ્યા વિના જે વાપરે તે દુષ્ટ થાય. વદનથી નીચ ગોત્ર કર્મ ખપાવે, ઉચ્ચ ગોત્ર કર્મ ખાધે ને કર્મચયિ ઠીલી કરે ક્રિક્કા, હોમ, ને દ્વાદશાવર્ત એ ગુરુવંદનના ત્રણે પ્રકાર વર્ણુવ્યા છે ખીજી ચૈલ્ય ન હોય તો નિત્રાકૃત ચૈલ્યમા પાલુ સમવસગ્નુ થાય મોક્ષ નક્ષી હોવા છતા તીર્થકર ભગવાનુ પણ બલ વીર્ય ગોપચ્યા વિના સર્વત્ર સર્વથા ઉલુક્ત રહે છે કેવલી ને હન્નચની પરિલેહલુનાનો ભેદ દેખાઓ છે પૃષ્ઠ ૨૯

સવાટક (સિવોટા)નો ગુચ્છો અનેક જીવવાળો ને પત્ર પ્રત્યેક જીવવાળા બાલુવા, ને કળમા બન્ને પ્રકારે જીવો હોય મધ, માખણુ, સઘાટક, ગોરસથી થયેલ વિદલ ત્રાત અનંતકાય, અજ્ઞાત કળ, વેગલુ ને પાય ઉમગ ન ખાય ભાવતીર્ય વિવિધ રીતે સમન્વયુ છે ઉપગમત્રેણિઆરઠને જે સમ્યકત્વ હોય તે ઉપગમિક સમ્યકત્વ, તેનો સમય અતર્મુદ્દર્તનો છે સર્વં, સમારભ ને આગ્સ તે અનુક્રમે મકલ્પ, સંતાપ, ને પૃથિવ્યાદિના ઉપમર્દન બાલુવા શુભજ્ઞાનમાં અભક્તિ, લોકવિરદ્ધતા, પ્રમત્તની છલના, ને વિદ્યાસાધનમા વૈગુણ્ય ન કરવા દાન, પૂલ, હોમ ને આ'યાય અગિરત, સાવેલા, હિન્ન, ગતા કે રૌદ્ર વસ્ત પહેરીને કરવાથી નિષ્કળ થાય છે પછી દરા પ્રકારના પ્રાયશ્ચિત્ત કલા છે ને વદનના આઠ પ્રસંગ કલા છે પૃષ્ઠ ૩૦

સામાયિકમા શ્રાવક, ન ચાલે તો, એક કે બે અધિક વસ્ત્ર-પ્રાવરણુ રાખે, છતા ન ચાલે તો ત્રણુ રાખે સામાયિકમા શ્રાવિકા કટિવસ્ત્ર-અણિયો, ટ્યુક તથા ઉતરીય (ઉપર ઓઠવાનુ) એમ ત્રણુ પહેરે, અપવાદે ખીન ત્રણુ પહેરે, ખન્તુ પ્રતિકમલુ સમયે ત્રણુ જ રાખે, વધારેનો લ્યાગ કહે જે સળી વિના મુખશુદ્ધિ ન કરી ગકે તે કરવા કે તુરા સ્વાદની સળી લે, તેથી વ્રતાદિનો ભગ થતો નથી. અદ્ધાની જે કર્મ ઘણા કરોડો વર્ષ ખપાવે તે ત્રણુ શુભિયુક્ત જ્ઞાની ઉદ્ધારસમાત્રમા ખપાવે સમવસગ્નુમા, જિનભવનમા, શેરડીના વનમા, અશ્વત્થાદિ ક્ષીર વૃક્ષના વનખણુમા, ગભીર નાદવાળા કે દક્ષિણાવર્તે જળવાળા ભાગમા દીક્ષા આપવી તપ એવું કરવુ કે જેથી મનના પરિણામ અશુભ ન થાય, જેથી ઇદ્રિય હાનિ કે યોગનો હારા ન થાય પૃષ્ઠ ૩૧

જિનેશ્વરએ (એકાદે) કગાની અનુસાર કે કરાનો નિષેધ કર્યો નથી, તેમની આજ્ઞા કાર્યમા સત્ત્વ હોય તે જ કરવાની છે જે દીક્ષા માટે અસમર્થ હોય, બાલક, વૃદ્ધ, કે રોગી હોય તે નિર્લરા ઇચ્છે તો આવચ્યકયુક્ત રહે દર્શનથી ભ્રષ્ટ છતા ચારિત્ર-યુક્તનો સામાન્યત ઞૈવેયક વિમાન સુધી ઉત્પાત થાય ઉદ્દિષ્ટ લોજન કહે, છ કાયનુ મર્દન કહે, દેવના મિરો વર કરે, પ્રલક્ષ સચિત્ત જલ ખીએ તેને સાધુ કેમ કહેવાય? સુવ્રતી વન્સ્વામિએ દ્રવ્ય-સ્તવ (યુષ્પાદિપૂજન) કરાવવાનુ પણ વિધિ તરીકે કહ્યું છે, ને વાયકના અયોમા પણ આ સંબંધી દેશના છે નિર્દિષ્ટ ગુણો રહિત હોવા છતા જે ગણુ સોપે કે પ્રવર્તિની પદ આપે તથા જે લે તેને આણુ-લંગનો દોષ થાય ગણુધરપદ શ્રીગોતમે ને પ્રવર્તિનીપદ આર્યા યદનાએ ધાગ્લુ કર્યા હતા તે છતા જાણુને અપાત્રને તે પહે જે અર્પે તે, તથા જે લે તે, તથા ધારણુ કરીને વિશુદ્ધ ભાવથી પદને સર્વથા યોગ્ય ન થાય તે મહાપાપી-વિરાધક છે આવહિસય, નિશીહિય, ને ઉપસપદ સિવાયની સાતે સામાચારી પ્રયોજનના અભાવે જિનસ્ત્પીને હોતી નથી પૃષ્ઠ ૩૨

જિનકલ્પી છ ગૃહ-પક્તિ કરી એકેકમા પ્રતિદિન ગોચરી માટે વિચરે, તથા એક વસતિમા સાતથી વધુ ન રહે, ને પરસ્પર સલાપણુ ન કરે ગુણી સાધુના ગુણોની સુવર્ણુના ગુણો સાથે સરખામણી કરી છે જિનકલ્પીને જેથી માટી બાર પ્રકારની, સ્થવિરને ચૌદ પ્રકારની, ને આર્યાને પચ્ચીસ પ્રકારની ઉપધિ હોય તે દરેક વર્ણુવી છે ૪૦ અગ્નલ પરિધિવાળું ભાજન મધ્યમ ને તેથી ઓછુ વધવું જવન્ય તથા ઉત્કૃષ્ટ હોય પૃષ્ઠ ૩૩

પાત્રમથાપન, ગોચ્છક, તથા પ્રતિલેખનીનુ પ્રમાણુ એક વેંત ને ચાર અગ્નલ કહી, વિવિધ ખન્તુ પરત્વે પરલની સખ્યા કહી, પ્રમાણુ ખતાવી રજશ્ચાણુ, ત્રણુ કલ્પ (ખે સુતગના ને એક ઉનનો), ગ્લેહરણુ (૨૪ અંગ્શલ દંડ ને આઠ અંગ્શલ દક્ષિયા મળી ડર અંગ્શલ), મુહપત્તી, માત્રક, ચોલપટ્ટો ને કમઠના પ્રમાણુ વર્ણુવી, પીઠક, નિસન્ન, દડક, પ્રમાર્જની, લોહકટ્ટક, ડગલ, પિખ્પલક (અસ્તરો), સોય, નેરણિ તથા કાનકોરણી ને દાતકોરણીનો હ્લેષ્પ કર્યો છે જેમ પરતુ કારણુ તત્ત, ને તંતુતુ ૩ છે, તેમ મોક્ષતુ કાગ્લુ જ્ઞાનદર્શન ને ચાગ્ત્રિ અને એ ત્રણેતુ કાગ્લુ આહાર છે નિશ્ચય નયના મતે ચારિત્રવાતથી જ્ઞાન ને દર્શનનો પણ નારા થાય છે, ન્યારે વ્યવહાર નયના મતે ચારિત્રવાતથી જ્ઞાનદર્શનનો નાશ વિકલ્પે થાય આજ્ઞામા રહેવાથી જ ચારિત્ર હોય તેથી આણુ લંગથી સર્વનો લંગ થાય છે વાસ્તવિક કથન ન કરનાર મિથ્યાદૃષ્ટિ અન્યને પણ શકા ઉપજવી મિથ્યાવત્તે જ વધારે છે પૃષ્ઠ ૩૪.

ઇધણુ, અગ્નિ, અન્નગધ, ધૂમાડો, ને વરાળના અશોથી થતી અશુદ્ધિ ઠાળી શકાય એવી નથી અર્થાત્મનુ મહલ્વ કહ્યું છે. ભાવિ ચોવીસીના બારમા 'અમમ' તીર્થકરની શીઘ્ર શિક્ષિ વર્ણુવતા તે નરકમાથી મનુખ્યલવ પામી, પાયમા દેવલોકે ઉત્પત્ત થઈ, ત્યાથી મ્યવી, તીર્થકરપણુ જન્મી મોક્ષે જરો-એ કહ્યું છે વાઠી, ક્ષમાશ્રમણુ, દિવાર, ને વાયકનો એક જ અર્થ છે ઋચિલેદે સમ્યકત્વના દરા ભેદ વર્ણુવ્યા છે દર્શન વિના ચારિત્ર નથી, ને દર્શન હોય તોપણુ ચારિત્રની ભજના જાણુવી દર્શન ને ચાગ્ત્રિ સાથે જ થાય, અથવા પહેલુ દર્શન ને પછી ચારિત્ર હોય સમ્યગ્દર્શન વિના જ્ઞાન નથી, જ્ઞાન વિના ચારિત્ર નથી, ચારિત્ર વિના કર્મ-મોક્ષ નથી, ને કર્મક્ષય વિના નિર્વાણુ નથી દિવસ કે રાત્રિના કયા પ્રહરે વિવિધ તીર્થકરો મોક્ષ પામ્યા તે કહ્યું છે અસથમના સત્તર લેદ ને ભારવડપક્ષિનુ સ્વરૂપ વર્ણુવ્યા છે. પૃષ્ઠ ૩૫.

સ્વમમાંથી અર્થી છવ પૃષ્ઠીમય અપકાય વનસ્પતિ ગર્ભ / પર્થાસિ સંમ્યાતા છવસ્થાનમોમા ઉત્પન થાય તે મ્હુ છે પછી મદાસારમાંથી મવ માસનમ્લ સરિએ /ન દને મૂળના બપાલનો નિષેધ વલ્લ્યો છે પછી માનવી સ્મૃતિ (માનવ ધર્મસંદિગ્ધા) માંથી ઉગ્મગ વેગલ કવિચર મૂળા તેમજ કાદા લસલ ગાગર સુરલ મરય માસ આદિનો નિષેધ વલ્લ્યો છે પછી પાનમાંથી રાને સોજન તથા જલપાનનો નિષેધ ને મનાસારમાંથી મુપાનનો નિષેધ વલ્લ્યો છે પછી અત્ન નનો મદિમા મ્હો છે પૃષ્ ૫૬

અલ્પવૃત્તીથી મદાસારી ને તેથી તત્વનાની ચે છે તત્વનાની જેવ પાત્ર થયુ નથી ને યરો નદિ પાી સતુજય તીયનું ઉદ્દેશ મદાસાર વલ્લ્યુ છે દેરોમા આસાતના ન કરવી તે મ્હી મનુચ્ચ જ મની દુલભતા દગ દુષાતે કહી છે બનદારીનું મુચ સવા લાખ નદ દારીનું મુ મુચ દારીનું ચોથા બાગનું ને ત્રિન તતિના દારીનું આકમા બા નું કમ્પુ છે અતિરુષિ અનારુષિ ઉત્તર તી પોપ સ્વતેચ્ચ અને પર્વત્ય એ સાન હતિઓ કહી છે /ાને તે ધને બરીને તથા માધીને એમ ચાર રીતે વિવિધ વસ્તુનું પ્રમાલ થાય છે બેવિધથી અનુનગવિમાનના દેવો સુધી ઉત્તરેતર શુદ્ધ જ્ઞાન બલકુ-ને સર્વથા શુદ્ધ પૂર્વધરનુ બલ્લુવ શ્રીજ્ઞપત્તેવને ડમમ ક્રિયા વૈ મના બાધીના તીયત્તોને બીજે જ દિવને મની મિથ્યાત્વ સાસ્વા ન કે અચરિત સમ્યકત્વ ડખરથાને જ પત્તો ભન થાય ત્તરેકે ડખરથાનનો સમય કહી દસ નિયુત્તિના નામ મ્હા છે પૃષ્ ૫૭

શ્રીમદ્વાવીર તથા શ્રીજ્ઞ રમતેવનો પ્રમા મવ અનુદુર્વ તથા અદ્વોસતિ ઉપસર્ગો શ્રીપાર્શ્વનાથ તથા શ્રીમદ્વારીરને જ યથા બીખને નદિ શ્રીજ્ઞ રમતેવ શ્રીનેમિનાથ શ્રીપાર્શ્વનાથ તથા શ્રીમદ્વાવીર આધ તેમ જ અનાથ દેરોમા વિચર્યા રોડ તીવનો માત્ર આય દેરોમા જ વિચર્યા પની રજ જિનતપ જિનનીમા-નતપવિવાર જિનમવેવા દેવ ચ તથા તેનો કાળ જિન જ્ઞાનતપ જિનમો પવિવાર યુ જ્ઞાનતક ભૂમિ તથા પથાયાનતકર ભૂમિ વલ્લુવી વમુધારા ઉદ્દેશી સા । બાર કનોડ સુવલ્લની તથા જ્ઞપ્ત્ય સાગ બાર લાખ સુવલ્લની કહી છે પૃષ્ ૩૮

આદાર પુકરનો બરીસ ાગિયાનો ને સ્ત્રીનો અડાવીસ ાગિયાનો કહી ાગિયાનુ પ્રમાન બતાવી આચાર્ય ઉપાખ્યાય પ્રવૈકે ચચિર તથા આધિપતિના આવગ્યક ગુણો કહી બાર બે બે બ્રહ્મચર્ય હી રસાદુ નામક રાનેને ચોચ પાક બે પડ થી એક પથ મવ અનુ આ ક દંદિ વીસ મી તરા દરા પન સાકર અથવા ગોળથી યાય છે તે મ્હુ છે દિવસના ડલ પડોર પછી અડાવ નમને લા આચિર હોઈની અમાવનાના મારને સા વી તથા શ્રાવિકા સમવસત્તમા ન ભય પૃષ્ ૫૮

પાની નવ ડકારે ચેવવલા વલ્લવી છે મતિમાન ને શુનજ્ઞાન પતોચ છે તથા બાધીના ગાન આત્મત્વ્ય છે મતિમાની શુનજ્ઞાની તથા કેવથી ક ડચ્ચ ભવે અવધિમાની માત્ર પુન-વ્વ ભવે ને મન પથવનાની મનચિન મા પર્થાય પણ નલે એ કમી મતિ નુન અવધિ તથા મન પથવના બેોપસેદ વલ્લવી કેવળનાના એમુ, અસદાય અસાધારણુ અનન શેષરહિત ને કેવળ એમ ડ અથ મ્હા છે પૃષ્ ૪

કેરીની એમ રવાનાવિકીને અથવા ઉપચારથી કર્મની નિજ્જા અકામને ગકામ ત્રે પ્રકારે દ્વોષ શ્રીજિનદત્તચરિએ કમ્પુ છે કે ધર્મિક પુક ધર્મો સાથે શુદ્ધ કરના અન્યને મારે તો પા તેને ધર્મ યાય ને ક્રમે મોગ પામે મુદ્ધથી પુ પાતિ મળતા દ્વોષ તો વ ળુવા ન મગે ને રવાગ નિવળન વસારો ને દેવદ્રવ્યનો સમદ્ધ કરી ન વધારે મગ્ગુ ડાન પુકર જાલ કે વા કે નકિયાથી પા દા-આપે તો લે જિનચેવમા દામ્ય કી । હો લજ્જે રાને દેરોમા આન નિ તથા ાગિન ન મ્હે તરા સ્ત્રીને ન આવવા દે નિદિદ્ધ કામપ્રથી િયાનો ાગિન અગિ અગો ય મારે બો છે હતા િશાથી જ યાગને પલ પૂરે આપેવી િયા મુનિના બી ાપ છે રાધુને પ્રચ્છત બો /ન કરડુ ાથી કર્મમ્થ ન યાય િ ।। માટે જ્ય યથી વડ પ્રમાણુ આડ વસ્તુ ને ઉદ્દુપલ્લે અગોચ દોષ લા નુધીની વધ કહી છે તેથી બોધી વચના પરાનવ પાત્ર યાય છે ચાિત્રનો બાવ પાત્ર પ્રાય લ્યારે પરિપાક પામતો નથી પૃષ્ ૪૧

કર્મના શુષોપશમથી યના ચારિત્ય ને બાલકપજાને વિોધ નથી તેથી બાવગીશિનને એકાને અગોચ કહેવા અસદ્મદ છે ઠી ામા નોષ્ઠ પુનમ આડમ નોમ છડ નોચ તથા બાગ્ય વજની ત્રાન ઉત્તરા તમા ગેનિગીમા ઠી ।। અનુસા તથા મદ વન આરે િ ામા ત્વા ત્વ નમત્રો ને તેથી યના અનિદ કમ્પુ મ્હા છે િ ।। આપવા ચેવવ ન રે રમેદગ્ગુ આપી હોવ કરી સામ ચિ-કા રસ ન કરી સામાયિ ત્રણ વખત ઉચ્ચરે ને ત્રાલ ાદિવા દે સિખને શુક પોતાની ાની બાલુએ િમાગી હૈક મન ત્રાલ વખત ઉચ્ચરો ારે પત્રવસ્તુ ડમારે ચેવવત્વ ને વધમાવરદુતિ કરે-એવો પાક છે ચો નિયમ કલા છે પૃષ્ ૪૨

લ્લવી માગી પુકરનું મોષક કમ્પુ છે ભતિ-રમ બધી પૂવના એકથી નવનવ નવે માન નિહુવો ને દિવજાગની ઉત્પત્તિની ર હો ન્યા રવેનો આપા છે પૃષ્ ૪૩

આપાકર્મ પશિવિવાના શુ નો /ન કે તા ય મ્હે બારિને શુદ્ધ આદાગની રોડ કરનાર આવાકર્મો આપાર લે તો પલ્લુ દ દોષ શ્રીપાર્શ્વિ (વની મારિક શક્તિ દખા નારી ।પા છે કે તેઓ નુ પર એમ ને નગની બમા-રે રે છે તેમ તેમ કુક રે નની મગ્ગ ને નાનાગ પામે છે હુ ાનિવાગા મામ્મો મે બારિ ને વિ જા ન બારિ તે હીલા ને શુમા ને માગીના એ-માગી દનો બ્ધિ ને ચરો ને પ થી મ્હુ છે વકરના નવનિધાનેનો નામોદેખ મ્હો છે ને તેની મગ્ગ તુ પ્રમખ મ્હુ છે રે કે (ચવન જા ડમીપ આવના) દલોવા તે /ના ઠાડ યા છે હવા તેમની પનપત અનપ્ત્ય િ દોષ છે પૃષ્ ૪૪

િ ાગના જ નમ િ જવ અ િ રન-એ બનવવ િડ શખનારથી વ્યતો પ ાના ા થી બ્ધોવિરો િનનારથી ને કપ્પ પિા દેવો પરાનારથી મગ્ગ િ નરે ાદિથી મુ પ-વ-મા ।પ છે રુદ્ધીમપરસ્ત િનના જ મ ઠી ।। ને િશિના સમય કા ઠે મગ્ગ ના રોગ નુ કહી ઉગ્મ મગ્ગ દરોડી, યમા પથુ િડા મુનિ-વ-વ નથી તે ઉદાસપુક કમ્પુ

છે. કામરાગ ને શ્લેષરાગ કરતાં દૃષ્ટિગગ દુઃકરવો અતિ દુષ્કર છે. નવીન ત્રિનમદિ કરતાં લલ્લોદ્ધારમા આકંગલું પુણ્ય થાય. માટી, પાપાણુ, કાષ્ટ, ચાદી, સોતુ, વન, મલિ કે ચન્દનતુ ત્રિનખિણ કરાવનાર મનુષ્યલોકના તથા સ્વર્ગના સુખભોગવે. શ્રીમહાવીરનો મહાન અભિગ્રહ ને શ્રીચંદનાએ પૂર્વાં તે વર્ણવ્યો છે પૃથ ૪૫

અત્યંત પ્રતિક્ષણ સન્નેગોમા શ્રીસ્વૃલભદ્રે કામને ત્રિલો તેની પ્રશંસા કરી છે ત્રિનપૂનમા ત્યાન્ય પુષ્પ ક્ષેત્ર ને પત્ર ખતાવ્યાં છે પ્રસ્વાનસમયના શુભ શકુન કહ્યા છે વાતુડિયો, પક્ષવગ્રાહી, ઉધલુરી, અતિચયવ ને વચ્ચેથી હરી જનાર વ્યાખ્યાન ને અયોચ્ય છે વિદ્યાને સર્વ ધનમાં પ્રધાન કહી આપ્તાય દુર્લભ કદા છે અસાગનો આરમ્ભગ વિગેષ હોય, જેમ સુવર્ણના ધ્વનિ કરતાં કાંસાનો અધિક હોય. જ્યની પ્રશંસા કરી, મૂર્ખતાનુ ઔપધ નથી એમ કહ્યું છે સાગતીને કુવાનુ જળ નોધનાર મુસા કરની અન્યોક્તિ કહી છે સદેશો, લેખ, ને મીસન હત્તેકરત દ્વિમતી છે, પા! સ્વેષસંગમ વતા ઈ કિમત ગ્હેતી નથી શુનરાગર અપાર છે, આયુષ થોડું છે, ત્વો છુદ્ધિશાળી નથી, માટે ને થોડું પણ કાર્યકારી થાય તે ગિખતુ દુષ્ટાતથી નિર્ધનતુ લવિન કષ્ટમય ખતાવી, ધર્મ અને ધનનો અવિનાલાવ સખધ કહ્યો છે. પુરુષાર્થ કરતા પુણ્યની પ્રખળતા દર્શાવી છે પૃથ ૪૬.

તપ કરતા વિદ્યાનું પ્રાધાન્ય ખતાવી કુપાત્રને આપેલી વિદ્યા નિષ્કળ ખતાવી છે એકલી વિદ્યાથી જ નહિ પણ તપથી જે પાત્રતા આવે છે, ને પત્રે ન્યા હોય તે જ પાત્ર છે ગાધકવિ દાગિદ્ય સનોપથી રહે છે, પણ ચાચકો પાછા જાય છે તેનું દુખ તેને અસહ્ય લાગે છે તે કહ્યું છે બાલરાત્રુ કરતા અતરંગરાત્રુ વધારે ખલવાન કદા છે વેગ, વૈધાનર-અન્નિ, વ્યાધિ, વાદ ને વ્યસન મહા અનર્થકારી કહ્યા છે અઠારખાર વનસ્પતિના નામો આપ્યા છે, ને ચાર પુષ્પિત, આઠ ક્ષેત્ર ને પુષ્પવાળી, ને છ વેલો એમ અઠાર કહી છે પૃથ ૪૭

પુસ્તક લેખન રક્ષણના શુભ કળ કહ્યા છે. બાલક સ્ત્રી મન્દમતિ તથા મૂર્ખ ને ચારિત્રની ઇચ્છાવાળા માટે સિદ્ધાંત પ્રાકૃતમા રચ્યા છે માયાશીલ મનુષ્યનો વિશ્વાસ ન થાય, મોર મધુર બોલે છે, પણ જેની નાગને ખાય છે પગથય દુ.ખકારી કહ્યો છે પુત્ર પિતા લેવો હોય એ કથન ખોટું છે-સૂચાંત યતા શનિ એક ક્ષણ પણ પ્રકાશ આપતો નથી કન્યાનો પિતા હમ્બેરા દુખી હોય છે વસંતઋતુમાં કાગરો તે કાગરો ને કોયલ તે કોયલ જાણી આવે છે રાખની મુઝેલી લ્યા લાડવાની શી વાત? વચનમા જ દરિદ્રતા તો ધનની શી આશા? અતિ પરિચયથી વિશિષ્ટ વસ્તુ પ્રત્યે પણ અવજ્ઞા થાય છે, જેમ પ્રયાગમા પ્રાયે લોક કુવાપર ન્હાય છે પછી મચ્છગની, હંસની, કોક્કિની, મોરને પીછાની તથા જલની અન્યોક્તિઓ તથા કેટલાક મુખાપિતો આપ્યા છે અપમાન થતાં સિદ્ધ, સત્પુરુષ ને હાથી જતા રહે છે, પણ કાગરો, હલને માણસ, તથા મૂગ સ્વાન છોડતા નથી ચિતાગે, કાચ કરનાર, કુવૈધ, તથા ખરાખ રાજન, ને ગામનો કુથલીખોર નરકે જાય છે વામનમા ૯૦, માજરામા ૮૦ને દુષ્ટમુટ-હીન અગવાળામાં ૧૦૦ દોષ હોય છે, પણ કાણાના દોષની તો સખ્યા જ કહી શકાય નહિ. પૃથ ૪૮

સારા હંદવાળી, સાગ કપવાળી, સરસ હજિવાળી, ગ્રહણ કરાતી ગાથા શ્રેષ્ઠ મુદ્દની જેમ રસ-આનંદ આપે છે કેટલાક સુભાષિત પછી સમવસરણુની ખાર પર્યાલ વર્ણવી છે બે મોઢાવાળી સોયથી સીવાય નહિ, તેમ ઇન્દ્રિય સુખ ને મોક્ષ સાથે ન સહવે ગ્રથકારે રમુજ કરી છે કે વીતરાગે ને રાગદ્વેષને ત્રિલ્યા તે મુદ્દલ થઈ હક કરી તેના સતાનોની પુઠે લાગ્યા છે અંતગતમા જલથી નહિ, પણ સયમ, સત્ય, ને શીલથી શુદ્ધ થાય છે ગેષ, દરિદ્રતા, બંધુ પ્રત્યે વેગ, અતરાપણ, અત્યત કોપ ને કટવીવાણી એ નરકમાંથી આવેલાના ચિહ્ન છે ખાધરાપણુ, માનહીનતા, અતિખીકણુપણુ, અતિખલ, માનાપમાનમાં જડતા એ તિર્થચગતિ-માથી આવેલાના ચિહ્ન છે સતોષ, મંચમ્ચતા, અલપકોષ, કષાયરહિતતા ને લોભાલિલાપમા સમચિત્તા એ મનુષ્ય ગતિમાથી આવેલાના ચિહ્ન છે મુનિ તીર્થનુ મૂળ છે, તેથી મુનિને આઠાર આપનાર તીર્થાંતરિ કરે છે કેવળીના અભાવે મુનિઓ જ હપકારી છે પૃથ ૪૯.

શ્રીમહાવીરે પણ મુનિદાનના પ્રભાવે દુર્લભ બોધિ-ખીજ પ્રાપ્ત કર્યું હવ ચોરાસી પ્રકારના આસને રહી મુનિવરો કાલ્પસગ્ગ ધ્યાન કરતા, આતાપના લેતા, કે વિવિધ તપ કરતા, ને દુષ્ટકર્મની ગ્રથિ તોડતા કેટલાક સુતપાઠ કરતા, શંકા પૂછતા, વિચારતા કે પુનરાવર્તન કરતા હતા તેઓ ક્રોધ, માન, લોભ, ને પરીસહ, નિદ્રા, માયા, ને ઇન્દ્રિય ત્રિતનારા, ધીર, ને મોહનો પરાજય કરનારા હતા ગ્રંથકાર કહે છે કે આ 'ગાથાસહસ્રી' ગ્રંથ મુખમા તામ્બલની જેમ શોભાકારી છે વ્યાખ્યાન-આતુર્ય ઇચ્છનારે વિવિધ ગ્રંથોમાંથી અમૂર્તવક અત્ર ભેગા કરેલા ગાથા, શ્લોક ને કાવ્યો કંઠસ્થ કરી વ્યાખ્યાનની વચ્ચે વચ્ચે અવસર ભેઈ કહેવા જેથી ચતુર શ્રોતાઓના ચિત્ત ચમત્કાર પામરો પ્રશન્તિ પૃથ ૫૦.

આ પ્રસ્તાવના લખવાની તેમજ મુદ્દ-રોધન માટે પ્રેરણા કરી આવા મુદ્દ ગ્રંથરતના પ્રકાશનમાં સાહાય્ય આપવાની તક આપવા માટે હપાધ્યાય શ્રી ૧૦૮ સુખસાગરજ મહારાજનો આભાર માનુ છુ મુદ્રિત ગ્રંથના વાચકને આવા ગ્રંથોના સંપાદનમા પરતા અમનો પૂરો ખ્યાલ ન આવે, પણ જેણે યોગ્ય પણ અવતરણુના મૂળ શોધવાની તકલીફ લીધી હશે તે જરૂર કહી શકશે કે અનુક્રમણી વગરના પૃહતકાય ગ્રંથોમાંથી એકેક પ્રકીર્ણ ગાથા શોધી કાઢી સ્થળનિર્દેશ કરવો કેટલા અમ ને સમયથી સાધ્ય છે લેખકે પણ અત્ર તેમ કર્યું છે તેથી તે કહી શકે છે પ્રાકૃત લાપાની અનિચ્છિતતાએ શુદ્ધિત કાર્ય મુદ્દકેલ કર્યું હવ તેટલ જ આ ગ્રંથની હસ્તલિખિત શુદ્ધ પ્રતોના અભાવે પણ કર્યું હવ એક જ પ્રત પચ્ચી પ્રેસજોપી તૈયાર થઈ હતી, ને ખીજ બે પ્રતો મુદ્દ શોધનમા હપયોગી થઈ હતી, પાછળથી એક અશુદ્ધ ધણા પ્રક્ષિપ્ત ભાગવાળી પ્રત પ્રાપ્ત થઈ હતી તે હપયોગી થઈ ન હતી આ ગ્રંથના વિદ્વાન સંપાદક શ્રી સુખસાગરજએ હતા અમ લઈ પ્રકાશનકાર્યે હત્રાહપૂર્વક પાર હતાર્યું છે તે માટે વાચક વર્ગ તેમનો ઋણી છે

૧૫ ધનુષ ૨૬૪૮, સુબઈ નં ૩
મ ૧૯૯૬ માર્ગશીર્ષ શુક્લ ૫ ત્રિનિ તા ૧૯-૧૨ ૭૯

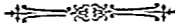
મોહનલાલ ભગવાનદાસ ગવેરી.
ખી એ (ઓનર્સ), એલએલ બી, સોલિસિટર

अहम्

॥ श्री-सम्भनपार्थनाथाय नम ॥

श्रीमत्परावरगण्डव्याहारी श्रीमत्कव्यरसादि प्रतिबोधक जङ्गमयुगप्रधान महारक श्रीमज्जिनचन्द्रसूरीधर
निष्पन्न-महोपाध्याय-श्रीसकलचन्द्रगणितर-निष्पन्नायक समयसुदरणाणि
प्रथितोऽयं ग्रन्थः ।

श्री गायत्र्यसहस्री ।



॥ सरस्वत्यै नम ॥

पैदिरूपाय चउदस, रंतीमाई य दसविहो धम्मो ।

यास य भौवणाओ, सूरिगुणा हुति छत्तीस ॥ १ ॥

[इति १६ सूरिगुणाः]

हृद्यय ह्यैकायरक्ता १२, पचेन्द्रिय १७ लोहनिगहो १८ रती १९ । भावविमुद्धी २० पडिले,
हणाइ करणे विमुद्धी य २१ ॥ २ ॥ सजमजोए-जुत य २२, अकुमलमणवयणकायसु निरोहो २५ ।
सीयाइ-पीढसहण २६, मरण (तु) उवसगसहण च २७ ॥ ३ ॥ सत्तावीसगुणेहिं, एएहिं जो
विभूसिओ साहू । त पणनिजइ भत्ति-भरेण हिअएण रे जीव । ॥ ४ ॥

[इति २० साधुगुणाः]

धम्मरयणास जुगो, अक्खुरो १ रूपव २ पगइमोमो ३ । लोगप्पिओ ४ अकूरो ५, मीरू ६
असदो ७ सुदक्खिअसू ८ ॥ ५ ॥ लज्जालुओ ९ दयालू १०, मज्झत्यो ११ सोमदिट्ठि १२ गुणरागी
१३ । सिकह सुपक्खजुत्तो १४, सुदीहदरिसी १५ विसेसजू १६ ॥ ६ ॥ बुद्धुणुगो १७ विणीओ १८,
कवणुओ १९ परहिअत्यकारी अ २० । तह चेष लद्धलत्तो २१, इगवीसगुणो ह्यइ सहो ॥ ७ ॥

[इति २१ शौचकगुणाः श्रीप्रवचनसारोद्धारे ४ ४००]

पौरुणा अरिदत्ता १२, सिद्धा अट्टेव २० सूरि छत्तीस ५६ । पणवीस उवगभाया ८१, साहू
सगवीस १०८ अहसय ॥ ८ ॥

[इति नवकारपाठी १०८ मणिकविचारः]

१-"पडिरूपो तेयस्सी०" इत्यादि १५ । २-"रतीमह्य०" इत्यादि १० । ३-"पदममणिधम्मतरण०"
इत्यादि १२ । ४-"मज्जिनचन्द्र" इति १ । ५-"विणीकपाणि" इति १ । ६-"जुमगवना । ७-"जापि-"मीरू असदो०" इत्येते
गुण । ८-"साक्षय गुणगुणध" इति गुणधय वृषइ । ९-"न्यायोपपत्तिरेण गण संवृष्ट १ अणवपेदिने नीरोमध २,
मणवपन मणउदरुप ३, याना-अनवत्तम एणनिगम्मो व ४, परपणनापुदिरिदि ५ धम्मं बुद्धं मातपिबुद्धपणना
निन्दो निभीइ, अपवा संगएए प्रम ६, अनादी ७, काय-नक्षो सायमपि बहुतएणउत्तिकरणादि ८ अणवैध्मप्रवत्त
९ यगणवत्तपुणुएण १०, बुद्धं रणइएवदिन ११, दाननापदेव एणोकाव दानवी १२ गुणवपणवपी न गु पु
धम्मणवत्तप्रवत्त, १३ सोमनधम्मंउपाधपक, गणगुणध उभयवचपिउद्ध विदवदवनेपि एव एव गु १४, कायं
बुद्धं एवदिक्खी न गु अणुवपण १५ गुणगुणदि १६, धम्मंउदरुणवत्तपुणवीवी १७, मातपिबुद्धपिबिनपह
१८ अणवत्त एणवत्त १९, एतेषां संवत्तएणोत्तरक २०, यानां एणवत्तं गुणवत्तं चत्त २१ निष्पन्नवत्तपु
प्रवत्तं एणवत्तं इति ॥ १०-"महारागुणा अरिदत्ता, सिद्धा पचेय सूरि छत्तीस । धायीम उवगभाया, साहू
सगवीस अट्टमप ॥ १ ॥ १८ दोषरहितं वचनं अहं इति अनन्तान् १ दर्शनं २ धर्मं ३ वीच ४ गुण ५ रूपं
६ पञ्चगुणम् । ३-४ १२ अहंम् ।

जिणकप्पिआ (वि) य दुविहा, पाणीपाया पडिग्गहधरा य । पाउरणमपाउरणा, इक्केका ते भवे दुविहा ॥ ९ ॥ दुग २-तिग ३-चउक्क ४-पणगं ५, नव ९-दस १०-एक्कारसेव ११-चारसंगं १२ चेव । एए अट्टविगप्पा, जिणकप्पे हुंति उवहिस्स ॥ १० ॥

[इति श्रीप्रवचनसारोद्धारसूत्रे ६ शते जिणकल्पिकानामष्टौ भेदाः ॥]

पत्तं १ पत्तावंधो २, पायट्टवणं च ३ पायकेसरिया ४ । पडलाइं ५ रयत्ताणं ६, च गोच्छओ ७ पायनिज्जोगो ८ ॥ ११ ॥ तिन्नेव य पच्छागा, रयहरणं ९१ चेव होइ मुहपोत्ती १२ । एसो दुवालसविहो, उवही जिणकप्पियाणं तु ॥ १२ ॥

[एतानि १२ जिणकल्पिकानामुपकरणानि ॥]

एए चेव दुवालस, मत्तग अइरेग चोलपट्टो अ । एसो चउदसरुवो, उवही पुण थेरकप्पमि ॥ १३ ॥

[इति श्रीप्रवचनसारोद्धारसूत्रे पत्रे ११७ स्थविरकल्पिकसाधूनां १४ उपाकरणानि ॥]

तण १ छार २ डगल ३ मल्लग ४ सेज्जा ५ संस्थार ६ पीढ ७ लेवाई ८ । सिज्जायरपिंडो सो, न होइ सो होइ वहिओत्ति ॥ १४ ॥

[इति श्रीस्थानाद्गृत्तौ ॥]

सावयकुलम्मि वर हुज्जा चेडओ नाणदंसणसमिद्धो । मिच्छत्तमोहिअमई, मा राया चक्कवट्ठी वि ॥ १५ ॥ दुविहे गुरू पन्नत्ते तंजहा-तवोवउत्ते १ नाणोवउत्ते य २ । तत्थ तवोवउत्ते वडपत्तसमाणे १ केवलमप्पाणं तारेइ १ । नाणोवउत्ते जाणवत्तसमाणे अप्पाणं परं च तारेइ ॥ १६ ॥

[इति श्रीउपदेशसत्तरीग्रन्थे ३ अधिकारे १ उपदेशे ५१ पत्रे ॥]

जंति अ मुच्छिमसणुया, पुढवाई दसपएसु नियमेण । आगच्छंती अडए, तेऊ १ वाऊ नहुति (नोइंति) नरा ॥ १७ ॥

[इति श्रीकम्मपयडी कर्मग्रन्थे ॥]

पढमा आवसिसया १ नाम, वीया य निसीहिया २ । आपुच्छणा ३ य तइया, चउत्थी पडि-

१-पाणी० पाणिपात्राणाम् अप्रावरणाना रजोहरणं १ मुखवस्त्रिका च २ इति उपकरणद्वयम् १, पाणि० प्रावरणधराणा च द्वे ते एव एक कल्पग्रहणेन ३ उप०, कल्पद्वयग्रहणेन ४ उप०, ३ कल्पत्रयग्रहणेन उप० ५, ४ पात्रधराणा प्रावरणधराणा च ७ उपकरणानि पात्रसवन्धानि, २ रजोहरणमुखवस्त्रिकाभ्या सह ९ उपकरणभेदा । ५ पात्रप्रावरणधराणा ९ तान्येव । एक कल्पग्रहणे १० उपकरणभेदा । कल्पद्वयग्रहणे उप० ११ भेदा । ७ कल्पत्रयग्रहणे उप० १२ भेदा । २-‘पात्रस्थापनं’ यत्र कम्बलखण्डे पात्रं निधीयते । ३-‘पायके०’ पात्रप्रमार्जनपोतिका पटलानि भिक्षावसरे पात्रप्रच्छादकानि तानि च यदि सर्वस्तोकानि तदा त्रीणि भवन्ति अन्यथा पञ्चसप्तेति । रय० पात्रवेष्टनचीवरम्, गो० पात्र वस्त्रप्रमार्जनहेतुः कम्बलजकलत्प । ४-त्रय एव प्रच्छादा द्वौ सौत्रिकौ तृतीय आंगिक । पतद्गहो येन वस्त्रखण्डेन पात्रं धार्यते कम्बलमयं पात्रो यत्र पात्रकाणि स्थाप्यन्ते, चिलिमिलिका-पात्रवेष्टानि ॥ ५-मत्तग नंदी पात्र ७ उग्गहऽणंतग पट्टो, अट्टोरुअ चलणिया बोधच्चा । अचंत्तरवाहिनियंसणि य तह कंचुण चेव ॥ १ ॥ ओक्कच्छिय वेकच्छिय, संघाटी चेव खंधगरणीय । ओहोवहिंमि एए; अज्जाणं पन्नवीसं तु ॥ २ ॥ इति साध्वीना २५ उपकरणानि ॥ ६-‘आ०’ अवश्यकर्तव्यैर्योगैर्निष्पन्ना आवश्यकीं आश्रयान्निर्गच्छतो भवति साधो १ । ‘नि०’ निषेधेन निवृत्ता नैषेधिकी व्यापारान्तरनिषेधरूपा आश्रये प्रविशतो भवति २ । ‘आ०’ आपृच्छनमापृच्छा, सा च विचारभूमिगमनादिप्रयोजनेषु गुरो कार्या ३ । ‘प०’ प्रतिपृच्छा प्रश्नः प्रागुक्त्युक्तेनापि कार्या ४ । ‘छं०’ छन्दना च प्रागुक्तेन अज्ञानादिना कार्या ५ । ‘इ०’ एपणम्=इच्छा, करणं=कार, इच्छया=कलामियोगमन्तरेण करणम्=इच्छाकार, यथा इच्छाकारेण ममेदं कुर ६ । ‘मि०’ मिथ्याक्रिया ७ । ‘त०’ तथा करणं तथाकारः, स च सूत्रप्रश्नादिगोचर, यथा भवद्भिरुक्तं तथैवेदम् ८ । ‘अ०’ आभिसुख्येन उत्थानम् उद्यमनम् अभ्युत्थानं, तच्च गुरुपूजाया या च गौरवार्हाणामाचार्यग्लानवालादीना यथाऽऽहारदिसपादनम् । अत्राभ्युत्थानं निमन्त्रणाभूतत्पमेव ग्राह्यम् ९ । ‘उप०’ उपसम्पत्-‘इतो भवदीयोऽहम्’ इत्यभ्युपगमः, सा च ज्ञानदर्शनचारित्र्यवत्त्वान्निधा, तत्र ज्ञानसम्पत्-सूत्रार्थयोः स्थिरीकरणार्थं, तथा विवृटितसन्धानार्थं, तथा प्रथमतो ग्रहणार्थमुपसम्पद्यते । दर्शनोपसम्पद्येवं नवर दर्शनप्रभावकसन्मत्तादिशास्त्रविषया । चारित्र्योपसम्पत् चैवावृत्त्यकरणार्थं क्षणार्थं च उपसम्पद्यमानस्येति १० ।

पुच्छणा ४ ॥ १८ ॥ पचमा छदणा ५ नाम, इच्छाभारो ६ य छद्मयो । सत्तमो मिच्छकारो ७ य,
 तद्धारो ८ य अद्धमो ॥ १९ ॥ अच्युद्धाण ९ नवम, दसमा उवसपया १० । एसा दसगा
 साहण, सामायाती पवेइया ॥ २० ॥ विहि-निगमवणे गमण, घरपट्टिमापूयण २ य सज्जाय ३ ।
 पुष्पचद् इत्थीण, पढिसिद्ध पुगसूरीहि ॥ २१ ॥ आलोअणाइ न पढइ, पुष्करई ज तव करइ नियमा ।
 पयरणमुत्त अन्न, न गुणेइ अ तिमि दिवसाइ ॥ २२ ॥ मँगुआउ सम गयाई, हयाइ चउरस
 अजाइ अद्धसा । गोमहिसुद्धरराई, पणस साणाइ दस मसा ॥ २३ ॥ (मोहो कोडाकोडी सत्तरी
 बीस च नाम गोयाण । तीसऽयराणि चउण्ह तित्तीसऽयराणि आउसस ॥) एगो य सत्तमीए, पण हरि
 छट्ठीइ पचनी एगो । एगो अ चउत्थीए, फण्हो तदयाइ पुढवीए ॥ २४ ॥ अद्ध वलदेय सिद्धा,
 परिमो पुण पचमम्मि कप्पम्मि । उरसपिणीइ सो पुण, सिद्धस्मइ कण्हवित्थमि ॥ २५ ॥
 अनियाणफडा रामा, सधेवि पेम्वा नियाणकडा । उहुगामी रामा, केसउ सधे अहोगामी ॥ २६ ॥
 उरसमम्म तिन्नि गाऊ, वैत्तीम घणूणि यद्धमागसस । सेस जिणाणमसोगो, सरीरओ धारसगुणो य
 ॥ २७ ॥ धारवरिसेहिं गोकमो, सिद्धो वीरओ बीसहिं सुहम्मो । चउमट्टीए जवू, बुच्छिन्ना तत्थ
 दस टाणा ॥ २८ ॥ मण १ परमोहि २ पुलाए ३, आहारग ४ गवग ५ उवसमे ६ कप्पे ७ ।
 सनमतिअ ८ केवलि ९ सिद्धणाय १० जवुम्मि बुच्छिन्ना ॥ २९ ॥

[इति धीमवघनसारोद्धारे ॥]

चत्तारि धाराओ, चउदमपुधी करेइ आ(शरीर)हार । ससारम्मि वसतो, एगभवे दुत्ति धाराओ
 ॥३०॥ अरिहत १ षणि २ केसव ३, यल ४ समिने अ ५ चारणे ६ पुद्धा ७ । गणहर ८ पुलाय ९
 आहारग च १० न हु ह्यइ महिलान ॥ ३१ ॥ एगंदिय १ पचंदिय २, उद्धेअ अहे अ तिरियलोण अ ।
 विगलिदिय जीवा पुण, निरिअलोए गुणेअवा ॥ ३२ ॥ पुढवी १ आऊ २ वणरसई ३, धारसकप्पेसु
 सत्त पुढवीसु । पुत्ती जा सिद्धिसिद्धा, तेऊ नररिप्पि तिरिलोए ॥ ३३ ॥ “सिद्धान्ते तु-एकयो-
 जनोष” धारस-नोअणपिहुला, मुंघोसघटा य अद्धउषत्त । चत्तारि अ छाळाओ, देवा सयपच धायति
 ॥ ३४ ॥ जावजीव १ वरिम २ चउमास ३ पकगगा ४ निरय १ तिरि २ नरा ३ अमरा ४ ।
 सम्मा १ पु २ सधविरई ३, अहरायचरित्त ४ धायकरा ॥ ३५ ॥ चकनुनिरक्कणमेग १, पुरिमा
 छबेय ७ पुध धायषा । अरओडा १६ पक्खोडा २५, नव ९ पणवीस इच्छति ॥ ३६ ॥ धारम धाहिं
 १२ टागा, धारस टागाइ २४ हुति मज्जमि । पत्तपडिलेहणाए, पणवीमो होइ परप्फसो ॥ ३७ ॥

[इति यतिदिनपपायाम् ४० ४० ॥]

१-याससयपि सर्षीस, सय च दिणमाउ मणुअदत्थीण । चउपीस धरिसमाऊ, गोमहिमीण स
 एगदिण ॥ १ ॥ धर्षीस तुरगाण, सोलस पसु पल्याण धरिमाइ । धारस सम सुणगाण ररकरद्वान
 धपणयीस ॥ २॥ १३० य० मनुष्यजादि । ३३ मण १ हयादि । १९ मण ३ अत्तमि । २९ गोमहिणीकगण । ११ अत्तमि ।
 २-उरसमे भरहो १, अजिए, सगरो २ मधव ३ सणकुमारो ४ य । धम्मस्य य हतिस्य य निणतरे
 चक्यपट्टिडुग ६ ॥ १ ॥ सती कुधू य अतो, अरिहता येय चक्यपटी य । अरम्मतिअंतरे पुण, हयइ
 सुभूयो य कोरव्यो ८ ॥ २ मुनिमुज्जयपनमिपि य, हुति हुये पउमनाइ ९ हरिसिणे १० । नमिनेमिहु
 जयनामो ११, अरिट्ट पामतरे यदो ॥ ३ ॥ १-२१ धरूपे अणुवण मनुवरि ११ पद्वि धरपुगेअदि
 अ ११ धरूपेअणु ॥ ४-अदी लपत्र पत्रधरिषया पत्रगुणव्रिण्ण डिणे वण कण्ठा प्रमूय मंऊ
 एग हत्थ लपत्रिया अन्वत्तरे डिण कण पुल प्रमूय तत डि केगेण वपवर्द्धि महरकवत्त अथापु । इका पुभ
 प्रतेटवर, एव वैशिकवया सुवद । कथियुनयाववा एव मन्ति वरुण डिणे कण प्ररगणीयम् । एरुण मयति-
 एवगा प्रमूय पद्वपधमं प्ररपदीयम् । एव पत्रक पुन वरि डिबिरे प्ररथय एणीयमित्त अह-कमुनि
 एरुणुव वरि पद्विया प्रपुगेअणवम म्भुवमममममम् । भोपेरिपुट्टि ॥ पत्रस एव प्रपुगेअण, वैशिकवय
 डिण एव ए ॥

पत्तं पमज्जिऊणं, वहिंअं अंतो सय तु पाफोडे । केई पुण तिन्निवारा, चउरंगुलभूमि पडण(त)भया ३८
[इति ओघनिर्युक्ता ॥]

आमोसहि १ विपोसहि २ खेलोसहि ३ जल्लोसही चैव ४ । सत्रोसहि ५ संभिन्ने ६, ओही
७ रिड ८ विडलमइलद्धी ॥ ३९ ॥ चारण १० आसीविस ११ केवली अ १२ गणहारिणो य १३
पुव्वधरा १४ । अरिहंत १५ चक्कवट्ठी १६, वलदेवा १७ वासुदेवा य १८ ॥ ४० ॥ खीरमहुस-
प्पिआसव १९, कोट्टगवुद्धी २० पयाणुसारी २१ अ । तह वीअवुद्धि २२ तेअग २३, आहारग २४
सीअलेसा य २५ ॥ ४१ ॥ वेडविदेहलद्धी २६, अक्खीणमहाणसी २७ पुलाय २८ तहा । परि-
णामतववसेणं, एयाओ हुंति लद्धीओ ॥ ४२ ॥ (“भवसिद्धियपुरिसाणं, एयाओ हुंति भणियल-
द्धीओ । भवसिद्धियमहिलाणवि, जत्तिय जायंति तं वोच्छं ॥ १ ॥ अरहंतचक्किंसेववलसंभिन्ने य
चारणा पुव्वा । गणहरपुलायआहारगं च न हु भवियमहिलाणं ॥ २ ॥”) अभविअपुरिसाणं पुण,
दस पुव्विहाओ केवलित्तं ११ च । उज्जुमई १२ विडलमई तेरस, एयाओ न हुंति लद्धीओ ॥ ४३ ॥
अभवियमहिलाणंपि हु, एयाओ न हुंति भणियलद्धीओ । महुखीरासवलद्धीवि १४ नेय सेसाओ
अविरुद्धा ॥ ४४ ॥ समणीमवगयवेअं १, परिहार २ पुलाय ३ मप्पमत्तं च । चउदसपुव्वि ४
आहारगं च १ नय कोई संहरई ॥ ४५ ॥

[भगवतीवृत्ता ॥]

सुत्तत्थतत्तदिट्ठी १ दंसणमोहतिअगं च ४ रागतिअं ७ । देवाइतत्ततियं १०, तहा अदेवाइ-
तत्ततिअं १३ ॥ ४६ ॥ नाणाइतिअं १६ तह तव्विराहणा १९ तिन्निगुत्ति २२ दंडतिअं २५ ।
इअ मुहणंतगपडिलेहणाइ कमसो विचिंतिज्जा ॥ ४७ ॥ हासो १ रई अ २ अरई ३, भय ४ सोग ५
दुगंछया य ६ वज्जिज्जा । भुअजुअलं पेहंतो, सीसे सुपसत्थलेसतिगं ॥ ४८ ॥ गारवतिअं च
वयणे १२, उरिसल्लतिगं १५ कसाय चउ पिट्ठे १९ । पयजुगि छज्जीववहं २५, तणुपेहाएवि
जाणमिणं ॥ ४९ ॥ जइवि पडिलेहणाए, हेऊ जिअरक्खणं जिणाणा य । तहवि इमं मणमक्कड,
निजं तणत्थं मुणी विंति ॥ ५० ॥

[इति सुखवखिका १ देहयोः २ प्रतिलेखनाविचारः ॥]

सासे १ खासे २ जरे ३ दाहे ४ कुच्छिसूले ५ भगंदरे ६ । अरिसे ७ अजीरण ८ दिट्ठी ९
मुद्धसूले १० अकारण ११ ॥ ५१ ॥ अच्छिवेयणा १२ कन्नवेयणा १३ कंझ १४ य उदरे १५
कोढे १६ ॥

[॥ इति विपाकसूत्रे प्रथमाध्ययने १६ रोगाः ॥]

जइ पोसहिओ सहिओ, तवनियमगुणेहिं गमइ एगदिणं । ता वंधइ देवाअं, इत्तियमित्ताइं पलि-
याइं ॥ ५२ ॥ तथाहि—सगवीसं कोडिसया, सतहत्तरिकोडिलक्खसहसा य । सत्तसया सत्तहुत्तरि,
नवभागा सत्त पलियस्स ॥ ५३ ॥

[॥ २७७७७७७७७७ ॥ इति पौषधे देवायुर्वन्धप्रमाणम् ॥]

वाणवइकोडीओ, लक्खागुणसट्टिसहस्स पणवीसं । नवसयपणवीसजुआ, सतिहा अडभाग पलि-
यस्स ॥ ५४ ॥

[॥ ७२५९२५९२५९ इति सामायिके देवायुर्वन्धप्रमाणम् ॥]

निव १ धनि २ नारी ३ नर ४ मुर ५, अप्पविआर ६ अपविआरत्त ७ । सडुत्त ८ दरि-
हत्त ९, चइजा इअ नवनिआणाइ ॥ ५५ ॥ कहाणणे टिप्पणए, नवनवइतिहिंसु तत्थ इग छको ।
वायभेगुववासा, चालीस दुआ तिया छक्क ॥ ५६ ॥

[विधिप्रपायाम्-]

तत्रैक्योजनोत्सेधा, विस्तारेऽप्येक्योचनाम् । भरतार्द्धवासिनीभि-देवताभिरधिष्ठिताम् ॥ ५७ ॥
शिला कोटिशिला नाम, दक्षिणेतरवाहुना । चतुरङ्गुलमुद्भे, पृथ्वीत कससुदन ॥ ५८ ॥ ता भुजाप्रे
दधौ विष्णु-राधो मूर्ध्नि द्वितीयक । कण्ठे वृतीयस्तूर्यस्तूर स्यले पञ्चमो हृदि ॥ ५९ ॥ पष्ठ कर्त्या
पडधिकस्तूर्वोरानोश्चाष्टम । चतुरङ्गुलमन्त्रोऽवसर्पिण्या ते पतद्वला ॥ ६० ॥ परमिह्वीण
जुवाण, सोलसवच्छरओ वि ओगमिलिआण । जे हुति कासभोगा, नरमिहुणाण तओ हुति ॥ ६१ ॥
वर्तेरअसुरविवज्जिअ, भैरणवई असुर *तौरयाईण । सिसैराण च तहा, जहक्कमा ते अणतगुणा
॥ ६२ ॥ ततो वि उत्तमा तल्लु, दिव्वा वेमाणियाण पन्नत्ता । वारससयमि छट्टुइस अगमि पचमए
॥ ६३ ॥ पावयणी १ धम्मकही २, वाई ३ नेमित्तिओ ४ तवस्सी य ५ । विजा ६ सिद्धो ७ अ कई,
अट्टेव पभावगो भणिआ ॥ ६४ ॥ उण्णे करेइ सीअ, सीए उण्हत्तण पुण करेइ । कवलरयणादीण, एस
सहाओ मुणेअव्वो ॥ ६५ ॥ सो लद्धि अपज्जत्तो, जो मरइ अपूरिअ सपज्जत्ति । लद्धिपज्जत्तो सो पुण,
जो मरइ ताओ पूरित्ता ॥ ६६ ॥ न ज्जवि पूरेइ पर, पूरिस्सइ स इह करणअपज्जत्तो । सो पुण करण-
पत्तत्तो, जेण ता पूरिया हुति ॥ ६७ ॥ सधसुरा जइ रूव, अशुद्धपमाणय विउब्बिज्जा । जिणपायशुद्ध
पइ, न सोहए त जहिं गालो ॥ ६८ ॥ गणहर १ आहार २ अणुत्तरा य जाव वण ३ चक्कि ४
वासुमला ५ । मडलिया ६ जा हीणा, छट्टाणगया भवे सेसा ॥ ६९ ॥ यूला मुहुमा जीवा, सकप्पा-
रभओ य ते दुविहा । सडवराह निरऽवराहा, साविक्या चैव निरविक्या ॥ ७० ॥ उसभ १ ससि २
सति ३ सुधय ४, नेमीसर ५ पास ६ वीर ७ सेसाण ८ । तेर १ सग २ वार ३ नव ४ नव ५,
एस ६ सगवीसा य ७ तिन्नि भवा ८ ॥ ७१ ॥ एगा हिरण्णकोडी, अट्टेव अणूणगा सयसहस्सा ।
सुरोदयमाईय, दिज्जेइ जा पायरासीओ ॥ ७२ ॥ तिनेव य कोडिसया, अट्टासीअ हुति कोडीओ ।
असिअ तु सयसहस्सा, एव सवच्छरे दित्र ॥ ७३ ॥ पहसत्त-गिलाणेसु १, आगमगाहीसु तहय २
लोअकारीसु ३ । उत्तर ४ पारणगमि अ ५, दिन्न च वहुफल होइ ॥ ७४ ॥ जिणभवण १ विंध २
पुत्थय ३, सयसरूपाइ ४ सत्तत्तिताइ । जिण्णुद्धारो ५ पोसह-साला ६ सांहारण ७ चैव ॥ ७५ ॥

१-पद्मिदानी सम्यक्त्वमपि न लभते, सत्तमनिदानी सम्यक्त्व लभते, परं देशविरति न लभत, अष्टमनिदानी सम्यक्त्व
देशविरती लभते परं मयविरति न लभते, नवमनिदानी सम्यक्त्व देशविरतिसर्वविरती लभते परं मुक्ति न लभते
यदुक्तम्-“छसु दुल्लद्वयोहित्य, देसे सव्वेय विरइ मुफ्फे अ । सत्तममाइसु न भवे, सगुणो ताए
अयज्जिज्जा ॥ १ ॥ २-एतदर्थप्रतिपादक गणानय श्रीतिलकाचार्यैः कृतयो धीशैः शैः कालिङ्गवृत्तावप्यन्ति ।

* तौरयाईण-तौरा-ईअप्र-भैहणांम् । ३-प्रनचन द्वादशाङ्ग गणिपिटक तदस्यान्तीति प्रवचनी-युगप्रधागम १ ।
धम्मइया प्रसहा असांतीति धम्मकधी मिराण्णिवदिन् २ । वादि १ प्रवारि २ सम्य ३ समापति ४ लक्षणार्था चतुरज्जायां
प्रतिपत्तनिराणपूर्वक स्वपणस्यापनार्यमवय वदतीति वादी ३ निमित्त । नसल्लयाभागमप्रतिपादक तद्वेति अध्येति वा
नैमित्तिक ४ । ततो विट्टकट्टमारि अम्यान्तीति तपस्वी ५ । मिया प्रहत्यादय शागनदेवतासा साहाय्ये यस्य स विद्यावान्
६ । पन्न १ पट्टेण २ निग्ग ३ सुट्ठिक्क ४ भूतावर्षण ५ निरयण ६ वैमियव ७ प्रमुत्तय विद्धपस्साभि सिज्जति स्स
सिद्ध ७ । पवत्त गण्णायदिभि प्रवधैवर्णानां कययते इति धमि ८ । एते प्रवच-वादयोऽष्टौ भगव एतानस्य देशकाण्ठो
विलेन उहाय्यकरणप्रभावक ॥ ४-संवन्मरीदानाभिस्सर । ५-इति क्षेत्राणि ७ ।

संघयणं १ संठाणं २ च पढमगं जो उ पुव्वउवओगो ३ । एए तिन्निवि ठाणा, वुच्छिन्ना थूलभइंमि ॥ ७६ ॥ तित्थगररिद्धिदंसणत्थ १ मत्थावगमहेउं वा २ । संसयवुच्छेअत्थं, गमणं जिणपायमूलंमि ॥ ७७ ॥ सा पुण वुविहा सिक्खा, गहणे १ आसेवणे २ य नायवा । गहणे सुत्ताहिज्जण, आसेवण कप्पतिप्पाई ॥ ७८ ॥ आलस्स १ मोह २ वन्ना ३, थंभा ४ कोहा ५ पमाय ६ किचणत्ता ७ । भय ८ सोगा ९ अन्नाणा १०, वक्खेव ११ कोतूहला १२ रंमणा १३ ॥ ७९ ॥ पम्हट्टे सारणा वुत्ता, अणायारस्स वारणा । चुक्काण चोयणा वुत्ता, निट्ठरं पडिचोयणा ॥ ८० ॥ पडिकमणे १ चेइ-यहरे २, भोअणकाले अ ३ तह य संवरणे ४ । पडिकमण ५ सुअण ६ पडिवोहकालियं ७ सत्तहा जइणो ॥ ८१ ॥ भिन्नसुहुत्तो नरएसु तिरिअमणुएसु हुंति चत्तारि । देवेसु अद्धमासो, उक्कोस विउव्वणा-कालो ॥ ८२ ॥ अट्टण्हं जणणीओ, तित्थयराणं तु हवंति सिद्धाओ । अट्ट य सणंकुमारे ३, माहिंदे अट्ट वोधवा ॥ ८३ ॥ नागेसुं उअभपिआ, सेसाणं सत्त हुंति ईसाणे । अट्ट य सणंकुमारे, माहिंदे अट्ट वोधवा ॥ ८४ ॥ अन्नजलं १ उण्हं वा २ कसायद्वेहिं मीसियं वावि ३ । कप्पइ जइण नन्नं, सुविहिय कप्पट्टियाणं च ॥ ८५ ॥ जायइ सच्चित्तया से, गिम्हंमि उ पहरपंचगस्सुवरिं । चउपहरुवरिं सिंसिरे, वासासु पुणो तिपहरुवरि ॥ ८६ ॥ वासासु पनरदिवसं,—सि उण्हकालेसु मास वीस दिणा । ओगाहिमं जइणं, कप्पइ आरब्भ पढमदिणं ॥ ८७ ॥ जगरा य वारपहुरा, विसं तक्ककरंवको गिण्हइ । पच्छा निगोअजंतू, उप्पजइ सव्वदेसेसु ॥ ८८ ॥ पणदिणमी सो लुट्टो, अचालिओ सावणे ण भइवए । चउ आसोए कत्तिअ, मगासिरपोसेसु तिण्णि दिणा ॥ ८९ ॥ पणपहर माह-फग्गुणि, पहरा चत्तारि चित्त-वइसाहे । जिट्ठासाढे तिपहर, तओ परं होइ अच्चित्तो ॥ ९० ॥ विदले भोयणे चेव, कंठे जीवा अणंतसो । उदरंमि गए चेव, जीवाण न होई उप्पत्ती ॥ ९१ ॥ वासासु सगदिणोवरि, पणरसदिणो-वरिं च हेमंते । जायइ सच्चित्तयं पुण, गिम्हे मासोवरिं लूणं ॥ ९२ ॥ पडिकमण १ गमण २ भोयण ३, पडिलेहण ४ वच्च ५ मुत्त ६ गहणेसु ७ । वजेअवा वत्ता, साहूहिं साहुणीहिं सयं ॥ ९३ ॥ सुत्ते १ अत्थे २ भोयण ३, काले ४ आवस्सए अ ५ सज्जाए ६ । संथारे चेव तहा ७, सत्तविहा मंडली जइणो ॥ ९४ ॥ अणुवट्टविअं सेहं, अकयविहाणं च मंडलीए उ । जो परिमुंजइ सहसा; सो गुत्तिविहारओ भणिओ ॥ ९५ ॥

[॥ श्रीपञ्चवस्तुके ६७६ गाथा ॥]

पंचसया चोआला, तइआ सिद्धिं गयस्स वीरस्स । तो अंतरं जिआए, तेरासिअदिट्टि उप्पत्ती ॥ ९६ ॥ छ्वाससएहिं नच्चुत्तरेहिं सिद्धि गयस्स वीरस्स । तो वोडिआण दिट्ठी, रहवीरपुरे समुप्पन्ना ॥ ९७ ॥ वारसवाससएहिं सड्डेहिं निच्चुअस्स वीरस्स । जिणघरमठआवासो, पगप्पिओ सायसीलेहिं ॥ ९८ ॥ पंचसु सएसु वरिसाण अइगएसुं जिणाउ वीराओ । वयरो सोहग्गनिही, सुनंदगग्गमे समुप्पन्नो ॥ ९९ ॥

१-इति त्रयोदशका—या । २-भिन्न खण्डो सुहुत्तो भिन्नसुहुत्तमित्यर्थ । उत्कर्षतो विकुर्वणा भणिता । इति जीवा-भिगमवृत्तौ व्याख्या० श्रीभगवतीसूत्रे ८ शतके १० उद्देशे पञ्चेन्द्रियतिर्यङ्मनुष्याणा वैक्रियदेशचन्ध, उत्कर्षतोऽन्तर्मुहुत्त-मेवोक्तम् । ३-अनुपस्थापित शिष्यकं व्रतेषु अकृतविधानं च अकृताचामाभ्लादिसमाचार च मण्डल्यामेव य परिभुङ्क्ते सहसा तत्क्षणमेव स गुणविराधको भणित अर्हद्विरिति गाथार्थः ॥ मइ नै पूजी अरणी भरणी, माहरइ नहि छै सासू तरणी, ल्यइरे सुंहडा लन्वाक ॥ इति स्त्रीवाक्यम् ॥ मइ नै पूज्यउ आलउ मालउ, माहरे नहि छै सुसरउ सालउ । ल्यइरे वासा धन्वाक ॥ इति भर्तार वाक्यम् ॥ कथा-पोपट्चाल्यौ पाटासार १ तृण वीधइ चाल्याउ मुरारि २ । पडित चाल्यउ घालइ तेल ३, मूरख चाल्यउ ठेलाठेल ४ ॥ ४-इति दिग्गम्बरोत्पत्तिः ॥ ४७० विक्रमसंवत् । ततः ५८५ हरिभद्रसूरिः । ततो वीरनिर्वाणात् हरिभद्रसूरिः १०५५ ॥

पचसए पणसीए, विक्रमकालाओ ह्यत्ति अत्थमिओ । हरिभइसूरिसूरो, निघुओ विसउ सिवसुक्ख
 ॥ १०० ॥ तेरमवाससएहिं, वीराओ समहिएहिं निवपुत्तो । सिरिवप्पभट्टिसूरी, विउसाण सिरोमणीं
 जाओ ॥ १०१ ॥ पणसयरियरसाण, तिन्निंसय समन्निय अइकमिय । विक्रमकालाओ तओ, वैलही-
 भगो समुप्पत्तो ॥ १०२ ॥ श्रीविक्रमादित्यनृपस्य काला-दष्टोत्तरे १०८ वर्षशते व्यतीते । शत्रुञ्जये
 जावहिना प्रतिष्ठा, निम्नस्य पापाणमयस्य कारिता ॥ १०३ ॥ छद्वाससएहिं नवुत्तरेहिं रयणेण रेवय-
 गिरिंमि । सठविच मणिर्विन, कचणभवणाउ नेऊण ॥ १०४ ॥ वारसवाससएहिं, पञ्जासहिएहिं वद्ध-
 माणाओ । चउत्तसिपढमपवेसो, कप्पिओ साइसूरीहिं ॥ १०५ ॥

[॥ इति गरुडोत्तिप्रकीणके ॥]

तेणउअनवसएहिं, समइक्केहिं वद्धमाणाओ । पज्जोसवणचउत्थी, कालगसूरीहिंतो ठविआ ॥ १०६ ॥
 वीसहिं दिणेहिं कप्पो, पचगहाणीइ कप्पठवणा य । नवसयतेणउएहिं, बुच्छिन्ना सघआणाए
 ॥ १०७ ॥ सालाहणेण रत्ता, सघाएसेण करिओ भयव । पज्जोसवणचउत्थी, चाउम्मास च चउ-
 दसिए ॥ १०८ ॥ चउमासयपडिकमण, पक्खिरअदिवसम्मि चउव्विहो सघो । नवसयतेणउएहिं,
 आयरण त पमाणति ॥ १०९ ॥

[॥ इति गाथाचतुष्टय तीर्थोत्थालिप्रकीणके ॥]

सिरिवीराओ गएसु, पणतीसहिएसु तिवारससएसु ३३५ । पढमो कालगसूरी, जाओ सामज्जना-
 मुत्ति ॥ ११० ॥ चउसयत्तिपन्नवरिसे ४५३, कालिगगुरुणा सरस्सई गहिआ । चउसयसत्तरि ४७०
 घरिसे, वीराओ विक्रमो जाओ ॥ १११ ॥ कालो १ सहाव २ नियई ३, पुषकय ४ पुरिसकारणे
 गवा ५ । मिच्छत्त ते चेव उ, समासओ होंति सम्मत्त ॥ ११२ ॥ सँधेवि अ कलाई, इअ समुदाएण
 साहगा भणिआ । जुज्जति अ एमेव य, सम्म सव्वस्स कज्जस्स ॥ ११३ ॥ नैहि कालाईहिंतो, केव-
 लएहिं तु जायए किंचि । इह मुग्गरचनादिवि, ता सधे समुदिआ हेऊ ॥ ११४ ॥

[॥ पद्मवस्तुके पृ० २८० ॥]

जहणेगलक्खणगुणा, वेरुलिआदी मणीवि सजुत्ता । रयणावलिक्खवएस, न लहति महग्घमुल्लावि
 ॥ ११५ ॥ असिअसय १८० किरियाण, अक्खिरियाण च होइ चुलसीए ८४ । अज्जाणी सपसट्ठीय ६७,
 वेणाइआण च घत्तीस ॥ ३२ ॥ ११६ ॥ काल १ यट्ठच्छा २ नियति ३ स्वभावे ४ श्वरा ५ त्मन-
 श्चतुराणीति । नास्तिकवादिगतमते, न नास्ति भावा स्वपरसस्या ॥ ११७ ॥ अज्ञानिकवादिमते,
 नयजीवादीन् सदादिसप्तविधान् । भायोत्पत्ति सदसद्धैतावाच्य च को वेत्ति ॥ ११८ ॥ वैतयिकमत
 विनयश्चेतो वाषायदानत कार्य । सुर १ नृपति २ यति ३ ज्ञाति ४ स्वविरा ५ धर्म ६ माव ७
 पिनुपु ८ सदा ॥ ११९ ॥ पुरिमेण पच्छिमेण य, एए सधेवि फासिआ ठाणा । मज्झिहोहिं, तिणेहिं,
 एग दो तिनि सधे वि ॥ १२० ॥ सामग्गिअभावाओ, धवहारिअरासिअप्पवेसाओ । भग्घावि ते

१-वही-चमारहीमहो जान ॥ २-कल १ स्वभाव २ नियति ३ पूज्यत ४ पुरयाकर ५, एते पद्य समवाया ॥
 कल स्वभावो नियति पूज्यत पुरयमरुतेनैक्यन्ता एव करण विद्यत्येखेवभूता, मिथ्यात्व त एव समासतो भयन्ति सम्यक्त्व
 मर्षे एव ममुदितान् सन्त फलजनस्त्वेनेति गायार्थ ॥ पद्य १०४९ गाथा ॥ ३-एतदेव स्पष्टयति-मर्षेऽपि च फलाद्भयो-
 ऽनन्तप्रापयन्त्या इव समुत्पायनेतरेतरापेमासायका भिता प्रत्यनज्ञै, युज्यते च एवमेव सम्यक्सायका सर्वस्य कार्यस्य
 रूपात्, अथवा मायस्त्वदोगादिति गायार्थ ॥ पद्य १०५० गाथा । ४-एतदेवाह-न हि करणदिव्य अज्ञानतपो-
 रितेभ्य केवलभ्य एव तावते क्रियन्त्यर्थं जातम् इह लोके मुद्ररचनायपि भाग्यान्तां तावदेतन् यत एव सर्वस्य कालदय
 समुदित एव हेतव सयस कार्यत्येति गायार्थ इति पद्यवस्तुकपद्यौ १०५१ गाथा ॥

अणंता, जे सिद्धिसुहं न पावंति ॥ १२१ ॥ इंदत्तं १ चक्रित्तं २, पंचुत्तरविमाणवासिदेवत्तं ३ ।
 लोगंतिअदेवत्तं ४, अभवजीवेहिं नो पत्तं ॥ १२२ ॥ 'मि'त्तिमिउमद्वठिओ, 'छ'त्तिअदोसाण
 छायेणे होइ । 'मि'त्तिअ मेराइठिओ, 'दु'त्तिदुगंछामि अप्पाणं ॥ १२३ ॥ 'क'त्तिरुडं मे पावं,
 'डु'त्तिअ डावेमि तं उवसमेणं । एसो मिच्छादुफड, पयक्वरत्थो समासेणं ॥ १२४ ॥ सव्वेणवि
 अलिण्णवि, चेइअसम्माइ जो कुणइ मूढो । सो नट्टवोहिवीओ, अणंतसंसारिओ होइ ॥ १२५ ॥
 ईंकारस अंगाइं, वारस उवंगाइं, दस पइन्नाइं । छ—अमूल चतुरो, नंदीअणुओगदाराइं ॥ १२६ ॥
 ओराजीपन्नवन्ना, सू जं चं नि-रु-क-पुष्फ-वणिहदसा । आयाराइउवंगा, नायवा आणुपुवीए ॥ १२७ ॥
 [विधिप्रपायाम् ॥]

अविहिकयावरम-कयं, असूअवचयणं भणंति गीयत्था । पायच्छित्तं जम्हा, अकए गुरुअं कए लट्टुअं
 ॥ १२८ ॥ जोअणसयं तु गंता, अणहारेणं तु भंडसंकंती । वाया-नाणि-धूमेण ३ अ, विद्धत्थं होइ
 लोणाई ॥ १२९ ॥

[प्रवचने ॥]

हरिआल १ मणोसिल २ पिपैली य ३ खजूर ४ मुहिआ ५ अभया ६ । आइणमणाइण्णा
 तेऽवि हु एमेव नायवा ॥ १३० ॥ पत्ताणं १ पुष्पाणं २, सरडुफलाणं ३ तहेव हरिआणं १२१ ।
 विटंमि मिलानंमि, नायवं जीवविप्पजडं ॥ १३१ ॥

[॥ श्रीवृहत्कल्पसूत्रवृत्तौ ॥]

नय किंचि अण्णुन्नायं, पडिसिद्धं वावि जिणवरिंदेहिं । मोत्तुं मेहुणभावं, न त विणा रागदोसेहिं
 ॥ १३२ ॥ छम्मासाऊ सेसे, उप्पन्नं जेसि केचलन्नाणं । ते नियमा समुघाइया, सेसा समुघाइ भइ-
 णिज्जा ॥ १३३ ॥ वेअणिअस्स उ वारस, नामगोआण अट्टओ मुहुत्ता । सेसाण जहन्नट्टिई, भिन्न-
 मुहुत्तं जिणुट्टिइं ॥ १३४ ॥ एला १ लवंग २ केला ३, खयरवडी ४ खयरसार ५ कपूरा ६ ।
 खारिक ७ टुप्पर ८ खजूर ९ दक्ख १० गुल ११ सव्वफलसागा १२ ॥ १३५ ॥

[॥ गाथपा तपाश्रीदेवसुन्दरकृतसामाचार्या, श्रीसोमसुन्दरसामाचार्यामपि ॥]

१-पृथक् नामान्यपीत्यम्-आचाराङ्ग १, सूत्रकृताङ्ग २, स्थानाङ्ग ३, समवायाङ्ग ४, भगवती ५, ज्ञाताधर्मकथा ६,
 उपासकदशा ७, अन्तकृद्गंगा ८, अनुत्तरोपपातिका ९, प्रश्नव्याकरण १०, विपाकश्रुत ११, इत्येकदशाङ्गानि ॥ उपपातिका १,
 राजप्रशीथ २, जीवाभिगम ३, प्रजापना ४, सूरप्रशप्ति ५, जम्बूद्वीपप्रशप्ति ६, चन्द्रप्रशप्ति ७, निरयावली ८, कन्यावर्तिका
 ९, पुष्पिका १०, पुष्पचूलिका ११, वहिदशा १२, इति द्वादशोपाङ्गानि, पूर्वमीलने २३ ॥ चतु शरणप्रकीर्णकं १, चन्द्र-
 वेध्यक २, आउरप्रत्याख्यान ३, महाप्रत्याख्यान ४, भक्तप्रत्याख्यान ५, तन्दुलवैकालिक ६, गणिविद्या ७, मरणसमाधि ८,
 देवेन्द्रस्तव ९, सस्तारकप्रकीर्ण १०, इति दश प्रकीर्णकानि, पूर्वमीलने त्रयस्त्रिंशत् ३३ ॥ निशीथ १, महानिशीथ २, व्यवहार
 ३, वृहत्कल्प ४, जीतकल्प ५, दशाश्रुतस्कन्ध ६, इति पद् छेदग्रन्था, पूर्वमीलने ३९ ॥ ओघनिर्युक्ति १, पिण्डनिर्युक्ति २,
 दशवैकालिक ३, उत्तराध्ययन ४, इति चत्वारि मूलसूत्राणि, क्वापि विचारग्रन्थसग्रहादौ ओघनिर्युक्तिस्थाने आवश्यकनिर्युक्तिरस्ति,
 पूर्वमीलने ४३, नन्दी ४४, अनुयोगद्वार ४५ आगमा ॥ एतान्येवाऽऽगमनामानि श्रीजिनप्रभसूरिभिरपि खट्टतसिद्धान्त-
 स्तवे प्रोक्तानि; तथाहि—“द्वक्कारस०” १२६ “ओराजी०” १२७ । इदं गाथाद्वयं श्रीवृहत्कल्पवृत्तौ १, श्रीस्थानाङ्ग-
 वृत्तौ २, श्रीनिशीथचूर्णपञ्चमोद्देशके ३, प्रवचनसारोद्दारे ४ च प्रोक्तमस्ति । २-खदेगजसाधारणा आहारभावेन
 योजनशतादूर्ध्वं पुनर्भिन्नाहारत्वेन शीतादिसम्पर्कश्च अचित्तं भवति । केचित्-योजनगतस्थाने गन्धतृप्तत पठन्ति, निशीथ-
 चूर्णौ तथैव चोक्तत्वात् । तथा भाण्डसक्रान्त्या २ चातामिधूमैश्च योजनगतमपि स्वस्थाने अन्तरे वा वर्तमानं लवणादिकम-
 चित्तं भवति । ३-पिप्पलीहरीतक्यादय आर्चीर्णा अतो गृह्यन्ते, खर्जूरद्राक्षादय पुनरनाचीर्णास्ततोऽचित्ता अपि न गृह्यन्ते ॥
 ४-अप्येवि जो उ कजे, एयाणि किंचि सेवए साह । सो पाविट्टो धिट्टो, परमप्पाणं च वोलेइ ॥ १ ॥

परिगच्छेऽवि सगच्छे, जे सविग्गा बहुस्तुआ साह् । तेसु अणुरागमध, भा मुंचसु मच्छरेण हओ
॥ १३६ ॥ जत्थ जल तत्थ वण, जत्थ वण निच्छओ अग्गी । तेऊ-जाऊसहगो, वसा य पक्कयया
चेव ॥ १३७ ॥ चुलसीवाससहस्सा, वासा-सत्तेव पचमासा य । वीरमहापउमाण, अतरमेय जिणु-
द्धिह ॥ १३८ ॥ तित्तिसया तेसद्धा ३६३, वसणभेया परुपरविरद्धा । नय दूसति अहिंस, त
गिण्हह जत्थ सा सयला ॥ १३९ ॥

[कुमारपालचरित्रे ॥]

घाएण य घायसय, मरणसहस्स च मारणेणाऽवि । आलेण य आलसय, पावइ नत्थित्थ सदेहो
॥ १४० ॥ निणपूअण तिसझ, कुणमाणो सोहए अ सम्मत्त । तित्थयरनामगोत्त, वधइ सेणिअनरिद्ध
॥ १४१ ॥ मेरुगिरिकणयत्ताण, घजाण देइ कोठिरासीओ । इक्क वहेइ जीव, न लुट्टए तेण पावेण
॥ १४२ ॥ नेव दार पिहावेई, मुचमाणो सुमावओ । अणुकपा जिणिदेहिं, सङ्गाण न निवारिया
॥ १४३ ॥ उत्तमपत्त साह्, मज्झिमपत्त सुसावया भणिया । अविरइसम्महिट्ठी, जहन्नपत्त मुणेषध
॥ १४४ ॥ ओहो सुओवउत्तो, सुअनाणी जइऽवि गिण्हह असुद्ध । त केरली-वि मुजइ, अवमाण
सुअ भवे इहरा ॥ १४५ ॥ सावणवहुलपडिवए, बालवकरणे अमीइनक्कत्ते । सधत्थ-पढमसमए,
जुगस्स आइ वियाणाहि ॥ १४६ ॥

[ज्योतिष्करपण्डके २९ पत्रे ॥]

वत्थन्नपाणासणराइमेहिं, पुप्फेहिं पत्तेहि अ पुप्फलेहिं । सुसावयाण करणिज्जेअ, क्य तु जग्हा
मरहाहिवेण ॥ १४७ ॥ त अत्थ त च सामत्थ, त च विजाणमुत्तम । साहम्मिआण कज्जमि, ज
वधति सुसावया ॥ १४८ ॥ होइ समत्थो घम्म, कुणमाणो जो न वीहए परेसिं । माइपिइसामिगुरु,
भाइआण घम्माण भिन्नाण ॥ १४९ ॥ चदो १ चदो २ अमिवड्डिओ ३ अ चद ४ मभिवड्डिओ
चेव । पचसहिअ जुगमिण, दिद्धे तेलुक्कसीहिं ॥ १५० ॥ कम्माइ नूण घणचिक्काणइ गरुआइ वज्ज-
साराइ । पाणड्डियपि पुरुस, पयाओ दुप्पह निंति ॥ १५१ ॥ चउदसपुष्ठी १ आहारगा य २ मण-
नाणि ३ वीयरगा य ४ । तज्जम्माऽनतरए, नरए निवडडति परिवडिआ ॥ १५२ ॥

[श्रीपार्श्वनायगणधरचरित्रे ॥]

बालमि अणाईए, अणाइदोसेहिं वासिए जीवे । ज पाविज्ज गुणोवि हु, त मन्नह भो महच्छरि
अ ॥ १५३ ॥ नायगमि हए सत्ते, जह सेणा विणस्सइ । एव कम्मा विणस्सति, मोहणिज्जे रय गए
॥ १५४ ॥ सावज्जऽणवज्जाण, वयाणण जो न याणइ विसेस । योत्तुपि तस्स न रम, विमग पुण
देसण काउ ॥ १५५ ॥ पर १ निणहर २ जिणपूआ ३, वावावरघायओ निसीहितिग । अग्गहारे १
मउझे २, वइआ चिइवत्ता समए ॥ १५६ ॥

[चैत्यवन्दनकमाय्ये गा० ८ ॥]

१-महापुरुषचरिते उपम्-आगामि दुःपमयुयमाया वष ३ मास ८ पक्ष १ अतिप्रमेण-चित्तसिद्धतेरमीए,
चदे ह्युत्तराह जोरोण । जापहिति पउमनाहोऽभिसोआईवि धीरुध ॥ १ ॥ सत शेषक्याणमणि धीरपद्माव
नीकदि । २-ओहो ० 'ओहो इत्यत्र प्रथमा तृतीयार्थे तत ओपेन-सामान्येन 'श्रुते' पिण्डनिर्मुक्त्यादिभ्ये आगमे उपयुक्त-
मन् तन्नुत्तरेण कल्याणकल्प परिभाषनं श्रुतज्ञानी यदपि कथमपि अणुद शृणाति तथापि तद् क्वचित्पि क्वचिन्नायपि
मुक्ते, इतरथा श्रुतज्ञानप्रमाण भवेत् तथाहि-उपस्य श्रुतज्ञानपत्तेन अणुद गवयित्तुंतिं न प्रकरातरेण ततो यदि केवकी
श्रुतज्ञानिना यथाऽऽन गवेपित्तमपि अणुदमिति श्रुत्या न मुपीत तत श्रुतेऽन्यत्रापि स्मरिति, न कोऽपि श्रुत प्रमाणं न
प्रतिपदेत्, श्रुतज्ञानस्य चानामाये सन्निकृदाभिव्योचनं च, श्रुतज्ञानतरेण उपस्यानां नियाङ्गात्स परिगनाऽर्धमवत् । पिण्ड-
निर्मुक्तिर्वापि मलयगिरिहारात् १४७ पत्रे ॥

भाविज्ज अवत्थतिअं, पिंडत्थ १ पयत्थ २ रूवरहिअत्तं ३ । छउमत्थ ४ केवलित्तं ५, सिद्धत्तं चेव ६ तस्सत्थो ॥ १५७ ॥ न्हवणघ्णगेहिं छउमत्थ १ वत्थपडिहारगेहिं केवलित्तं २ । पलियं कुसग्गेहिं य, जिणस्स भाविज्ज सिद्धत्तं ॥ १५८ ॥ सच्चित्तद्वमुज्झण, १ सच्चित्तमणुज्झणं २ मणेगत्तं ३ । इगसाडि—उत्तरासंगं ४, अंजली ५ सिरसि जिणदिट्ठे ॥ १५९ ॥ इअ पंचविहाभिगमो, अहवा मुच्चंति रायन्निहार्ह । खग्गं १ छत्तो २ वाणह ३, मउडं ४ चमरे ५ अ पंचमए ॥ १६० ॥ वंदंति जिणे दाहिण, दिसिद्धिआ पुरुस वामदिसि नारी । नवकर जहन्न १ सट्टिकर जिट्ठ २ मज्झुग्गहो सेसो ॥ १६१ ॥

[चैत्यवन्दनभाष्ये गा० ११-१२-२०-२२ ॥]

नमु १ जेय अ २ अरिहं ३ लोग ४ सब ५ पुक्ख ६ तम ७ सिद्ध ८ जो देवा ९ । उज्जि १० चत्ता ११ वेआवच्चग १२ अहिगारपढमपया ॥ १६२ ॥ पढमहिगारे वंदे, भावजिणे वीयअंमि दव्वजिणे २ । इगचेइअ ठवणजिणे ३, तइय—चउत्थंमि नामजिणे ॥ १६३ ॥ तिहुअणठवणजिणे पुण, पंचमए विहरमाणजिण छट्ठे । सत्तमए सुअनाणं ७, अट्टमए सबसिद्ध—थुई ८ ॥ १६४ ॥ तिथाहिव वीरथुई, नवमे ९ दसमे य उज्जयंत थुई । अट्टावयाइ इगदसि ११, सुदिट्ठि सुर समरणा चरमे १२ ॥ १६५ ॥

[चैत्यवन्दनभाष्ये गा० ४२-४५ ॥]

चउहाहारं तु नमो, रत्तिपि मुणीण सेस तिअ चउहा । निसि १ पोरिसि २ पुरिमे ३ गासणाइ ४ सड्डाण दु ति चउहा ॥ १६६ ॥

[प्रत्याख्यानभाष्ये ॥]

जैणवय १ संमय २ ठवणा ३, नामे ४ रूवे ५ पडुच्चसच्चे अ ६ । ववहार ७ भाव ८ जोगे ९, दसमे ओवम्मसच्चे १० अ ॥ २६७ ॥

[प्रवचनसूत्रे प्रश्नव्याकरणसूत्रे च ॥]

वयणतिअं ३ लिंगतिअं ६, कालतिअं ९ तह परोक्ख १० पच्चक्खं ११ । उवणीयाइचउक्कं १५, अज्झत्थं १६ चेव सोलसमं ॥ १६८ ॥

[प्रश्नव्याकरणवृत्तौ ११८ ॥]

दंसण (निरतिचारतया) १ वय २ सामाइय (सन्ध्यासु) ३, पोसह (पर्वदिने) ४ पँडिमा ५ अवंभ (रात्रावपि) ६ सच्चित्ते ७ । आरंभ ८ पेस ९ उदिट्ठवज्जए १० समणभूए य (खुरमुडो लोएण वा रयहरणं घेत्तूणं) ११ ॥ १६९ ॥ मासाई सत्तंता ७, पढमा ८ विअ ९ तिय १० सत्त राइदिणा । अहराइ ११ एगराई १२, भिक्खुपडिमाण वारसगं ॥ १७० ॥ पडिसेहण संठाणे ५ वण्णे

१-‘जण०’ कौकणादिषु उदकस्य पय १, ‘सं०’ समानेऽपि पङ्कसंभवे अरविन्दमेव पङ्कजं न कुवल्यादि २, ‘ट०’ स्थापनादि सत्यं जिनप्रतिमादिषु जिनव्यपदेश ३, ‘ना०’ कुलमवर्द्धयन्नपि कुलवर्द्धनः ४, ‘रू०’ भावतोऽश्रमणोऽपि तद्रूपधारी श्रमणः ५, ‘प०’ अनामिका कनिष्ठिका प्रतीत्य दीर्घा सैव मध्यमा प्रतीत्य ह्रस्वा ६, ‘व०’ गिरिगततृणादिषु दह्यमानेषु गिरिर्दह्यते ७, ‘भा०’ सत्यपि पञ्चवर्णत्वे शुक्रवर्णाधिक्यात् शुक्रा चलाकेति ८, ‘जो०’ दण्डयोगात् दंड इति ९, ‘औप-म्यसत्सं०’ यथा समुद्रवत्तटागः १० ॥ २-‘उपनीतगुण’-यथा-रूपवानयम् १, ‘अपनीतं’-यथा-दु शीलोऽयम् २, ‘उपनीतापनीतं’-यथा-रूपवानयं किन्तु दु शील इति ३, ‘अपनीतोपनीतं’-यथा-दु शीलोऽयं किन्तु रूपवान् ४ । ३-अष्टमीचतुर्दशीसु एकरात्रिकी प्रतिमा, उदिट्ठ कडं भुत्तंपि वज्जए किमु अ से समारंभो सो होइ उ खुरमुडो, सिंहलिंदा धारए कोवि ॥ १ ॥ सार्वपञ्चवर्षाणि लगति ११ प्रतिमावहने, अत्रह्यादिषु पञ्चषु पदेषु वर्जकशब्दो योजनीय ॥ माससूर्या भोजनपानयोर्दत्तय. सप्तसु, अष्टमीनवमीदशमीषु अपानकं चतुर्थं तप, एकादश्यां षष्ठं तपो द्वादश्या अष्टमं तप. । असणाण नियदभोई अन्नातो प्राशुकभोजी वा इत्यर्थः, मउलिकडो मुत्कलमच्छ इत्यर्थः दिवसवंभयारी य राई परिमाणकडो पडिमावज्जेसु दिवसेसु-प्रतिमावर्जितदिनेषु एवं ज्ञेय ॥ ४-आरंभ ८ पेस ९ स्वयमकुर्वन्नपि अन्यै कारयेत् प्रैश्चैरपि न कारयेत् ॥

१० गव २ १२ रस ५ १७ फास ८ २५ वेप अ ३ २८ । पग पण दु पणट तिहा, ३ इर्गतीस
अवाय (अवायपणुं) २९ ऽसग (असगपणु) ३० ऽरहा (अजन्मपणु) ३१ ॥ १७१ ॥

[भक्त्याकरणवृत्तौ १४३ ॥]

त्रय ऋसणमि पचारि आउण पच आइमे अते । सेसे 'दो दो भेआ, खीणऽभिलावेण इगतीस
॥ १७२ ॥ वेअण १ वेआवणे २ इरिअट्टाप अ ३ सनमट्टाप ४ । तह पाणवत्तियाए ५ छट्ट
पुण घम्मयित्ताए ६ ॥ नत्थि छुहाए सरिसा, वेयणा मुनेअ तप्पसमणट्टा । छुह्णो वेयावण, न तरइ
पाउ वओ मुने ॥ १ ॥ ईरिअ नऽवि मोह्णज्जा, पेह्णइअ च सनम काउ । धामो या परिहयइ, गुणऽणु-
पेह्णामुअ अमत्तो ॥ २ ॥ १७३ ॥ जपि वत्थ व पाय वा, वणळ पायपुत्तण । तपि सजमलडट्टा,
घारित्ति परिहरति अ ॥ १७४ ॥ न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा । मुत्ता परिग्गहो वुत्तो,
इअ वुत्त महेस्सिणा ॥ १७५ ॥ सूयो १ दणे जघण ३, 'तित्रि अ मसाइ ६ गोरसो ७ जूमो ८ ।
भक्त्या ९ गुळलायणीया १०, मूळफला हरिअग १२ दागो १३ ॥ १७६ ॥ होइ 'सोळ्ळ १४
त्तहा, पाण १५ पाणीअ १६ पाणग वेव १७ । अट्टारसमो सागो १८, निह्णअओ (निरुवहत्तो)
लोह्णो विहो ॥ १७७ ॥ इत्थसयादागतु, गतु च मुहुत्तग जहिं चिट्ठे । पथे वा वणतो, नइसत-
रणे पढिक्कण ॥ १७८ ॥

[इति भावप्रयत्नस्युत्थौ ॥]

अनिआगो दारमणो, हरिसवसविसट्ठकचुयकरालो । पूएइ गुरुसय, साहम्मिअमाइ भत्तीण
॥ १७९ ॥ निअद्वमपुवजिणिणमयणजिणविपवरपइट्टासु । विअरइ पसत्थपोत्थय, सुतित्यतित्ययर-
पूआसु ॥ १८० ॥

[इति श्रीभक्त्यकीणके ॥]

जिणाऽऽणाए कृगताण, नूण निधानकारण । सुदरपि सुबुद्धीए, सच भवनिमयण ॥ १८१ ॥ जह
सरणमुवगयाण, जीयाण निक्खिअई सिरे जो ३ । एअ आयरिओ वि दु, उस्सुत्त पन्नवतो अ ॥ १८२ ॥
उस्सुत्तमासगाण, थोटीनासो अणतससारो । पाणवणवि धीरा, उस्सुत्त नेव भासति ॥ १८३ ॥
पयअणररंपि इक्क, जो न रोएइ सुचनिरिइह । सेस रोयतोऽपि दु, सुत्तत्थ मिच्छदिव्ठीओ ॥ १८४ ॥
अम्मगो अवषाय, आयरमाणो विराहओ होइ । अववाए पुणपत्ते, उस्सग्गनिसेयओ भइओ
॥ १८५ ॥ सपैरणमि अमुद्ध, दोण्हवि मिण्हवदितायाणऽहिअं । आररदिट्टेण, त वेथ हिअं अम-
यरणे ॥ १८६ ॥ विरयगरा १ जिण २ चउदस ३, दस भिन्ने ४ सयिग्ग ५ तह असविग्गे ६ ।
मारुपिअ ७ पय ८ टसण ९, पटिमाओ १० भावगामो अ ११ ॥ १८७ ॥

[एषा गाथा श्रीपूठकले ४ ॥ ३४९१४०८ ॥]

१-अववेषणी अववेषणी चरिअवरणी दणंअवरणी गुणामध्मं अणुमनमध्मं उधर्मोअ नीचंमोअ एवं
मेअ ८ गर्णीमे ३१ । २-पश्चयस्तुकेऽपि पिण्हनियुत्तायपि वृथे १७९ गा १९२-१९३-१९४ ॥
३-'तित्रि' उअठ्ठरंअठ्ठि, 'जूमो'मि मुत्तादुत्तरीएअमग्गारिण, 'मस'अ'ति मग्गापट्ठि, 'मुत्ता
पणिया गुण'अठ्ठरं अउठ्ठिउदा गुणाना अ 'मूळफ'अनि' एअनेव परम् हरिओ अंगवारि हरिअं 'दागो'मि
वत्थुअणिअठ्ठि ॥ ४-'सोळ्ळ'सि मग्गअ । 'पाण'अिमप 'पानिअ'मि अं पाणग मि इत्थपन्नअणि,
'सागो'मि एअ निदरुअ अठ्ठि, एते १८ भइवं मोअनमिदि ॥ ५-आहारे संगूअ मग्गि । ६-नीपेइए १, मग्गाय
अठ्ठिअ, २ चउदसुअयण ३ निअ उउदसुअ ४, उउदसुअ ५, अणंअिमवरी ६ 'मारु'अ वेवपरयअ
मिओ ७ १३ अउदस ८ 'दु'अ अउदसअउदसपी ९ 'प'अ जिअ विग्ग १०, एउठ्ठरुअअ मग्गोअ अउदस
अउठ्ठरुअअउदसउदस ११ मत्तु दीवेइउठ्ठरुअं अउदसअवं मुत्त परं अउठ्ठरुअठीमो अय अउदसअवम् । उउदसुअ-वेवमग्गि
अउठ्ठरुअअउदसुअ १२ एअमग्गअ अउदसुअअउठ्ठरुअ अउठ्ठरुअ वेवमग्गि अउदसअवमुत्तम्, इति पूठकलेउठ्ठरुअ ॥

द्वैआ कोलिगजालग १, कोत्थलकारीअ २ उवरि रोहे अ । साडितमसाडिते, लहुगा गुरुगा
अभत्तीए ॥ १८८ ॥

[एपाऽपि गाथा श्रीवृहत्कल्पे पृ. ५२७ ॥]

आओ १ जोवण २ वणिए ३, अगणि ४ कुडुंवी ५ कुकम्म ६ कुमरीए ७ । तेणे ८ माला-
गारे ९, उव्मामिग १० पंथिए ११ जंते १२ ॥ १८९ ॥ सवेहिंपि जिणेहिं, निज्जिअजिअराग-
दोसमोहेहिं । सत्ताणुकंपणट्ठा, दाणं न कहिंचि पडिसिद्धं ॥ १९० ॥

सेकितं खेत्तारिआ । सेत्ता० अद्दच्चवीसविहा पन्नत्ता, तंजहा-

रायगिह-मगह १ चंपा अंगा २ तह तामलित्ति वंगा य ३ । कंचणपुरं कलिंगा ४, वाणारसि
चेव कासी अ ५ ॥ १९१ ॥ साकेअं कोसला ६ गयपुरं च कुरु ७ सोरिअं कुसट्टा य ८ ॥ १९२ ॥
कंपिहं पंचाला ९, अहिहत्ता जंगला चेव १० ॥ १९३ ॥ वारवई सोरट्टा ११, मिहिल विदेहा य
१२ वच्छ कोसवी १३ । नंदिपुरं संबिह्ला १४, भदिलपुरमेव मलया य १५ ॥ १९४ ॥ वईराड-
मच्छ १६ वरूणा अच्छा १७ तह मत्तिआवइ दसण्णा १८ । सोत्तिअमई अ चेई १९, वीयभयं
सिंधु सोवीरे २० ॥ १९५ ॥ महुराय सूरसेणे २१, पावा भंगीय २२ मासपुरि वट्टा २३ । सावत्थी-
अ कुलाणे २४, कोडीवरिसं च लाढाय २५ ॥ १९६ ॥ सेअविआविअ नयरी, केअयअद्धं च आरिअं
भणिअं । जत्थुप्पत्ति जिणाणं चक्कीणं रामकण्हाणं ॥ १९७ ॥ जैह पारओ तह गणी, जह मरुगा
एगगच्छरासीओ । सुणगसरिसा पलंवा, महुओ समं दगमफासुं ॥ १९८ ॥

अथ ध्यातुः स्वरूपं श्लोकद्वयेनाऽऽह-

निष्प्रकम्पं विधायाऽथ, दृढं पर्यङ्कमासनम् । नासाप्रदत्तसन्नेत्रः, किञ्चिदुन्मीलितेक्षणः ॥ १९८ ॥
विकल्पवागुराजालाद्दूरोत्सारितमानसः । संसारच्छेदनोत्साहो, योगीन्द्रो ध्यातुमर्हति ॥ १९९ ॥

अथ प्राणायाममाह-

अपानद्वारमार्गेण, निस्सरन्तं यथेच्छया । निरुध्योर्ध्वप्रचारार्तिं, प्रापयत्यनिलं मुनिः ॥ २०० ॥

१-असमार्ज्यमाणे चैत्ये भगवत्प्रतिमाया उपरिष्ठात् यदि एतानि भवेयुस्तदा तानि साधुरपि चैत्यभक्त्या दूरीकुर्यात्तदा
तस्य चत्वारि लघुप्रायश्चित्तानि आलोचनायामायान्ति, अथ नो दूरीकुर्यात्तानि तदा चत्वारि शुभप्रायश्चित्तानि आयायान्ति, तानि
कानि ? इत्याह-लूता नाम क्रोलिकपुटकानि, कोलिकजालानि तु कोलकाना तु लालातनुसताना कोत्थलकारी-भ्रमरी तस्या-
सम्बन्धि गृहं कथ्यते ॥ २-'आओ' इति गाथा, व्याख्या-परुष्यनन्तरं प्रातर्यावत् साधूना वाढं वदतामेते द्वादश दोषा
भवन्ति-अव्द श्रुत्वा लोको विबुध्यते, विबुद्ध सन् अफ्काययन्त्राणि योजयन्ते, वाहनानि सज्जयन्ते, जलार्थं योपितो यान्ति १,
'जोवण' ति धान्यप्रकरः तदर्थं लोको याति, लाटदेशे 'जोवणं' धान्यनिकर कथ्यते २, 'वणिए' ति वणिजो विभातमिति कृत्वा
व्रजन्ति ३, 'अगणि' ति लोहकरादिभिः शालादिषु अग्निः प्रज्वाल्यते ४, 'कु०' कुडुम्बिनः स्वकर्मसु लगन्ति ५, कुत्सितं
कर्म येषां ते कुवर्माणो मत्स्यकादय ६, 'कु०' कुत्सिता माराः कुमाराः सौकरिकादयस्तेषां विबोवो भवेत् ७, 'ते' चोराणां
बोवः ८, 'मा' मालिकाना बोधः ९, 'उ०' उद्गामिका पारदारिका विबुध्यन्ते १०, 'प०' पयिका पथि वर्तन्ते ११, जं०
यान्त्रिका घापी-कोल्ह-घरट्ट-चक्रादियन्त्राणि वाहयन्ति १२, इति तर्हि कथं वदन्ति यथा वृद्धा अदन्ता लपनश्रियमश्नान्ति,
अजचदं तत्रापि वदेत् ॥ ३-वैराटदेश मत्स्यानगरी, अन्ये मत्स्यो देशः वैराटपुरम् १, वरणानगरी अच्छादेश, अन्ये
वैपरीलमाहु ॥ ४-केयददेशोऽर्द्धो द्वेष्यः आर्य, अर्द्धश्च अनार्य, तत्र श्वेताम्बिका आर्यदेशेऽस्ति, प्रज्ञापनाप्रथमपदे ॥
५-'जह०' यथा पारगो वेदपारग अपरिणामक १, परिणामकत्राद्यण २, अविपरिणामक ३, एवं सर्वे चोरेर्मुषितामा
शोदि न ह्युधावाधिताः सजाता यथा मृतश्वा भक्षित, समृतकं जलं न पीतं, तथा गणयो महात्मान पलम्बभक्षणम् अप्रा-
शुकजलपानं न कुर्वन्ति ॥ ६-अशुभा वा शुभा वापि विकल्पा यस्य चेतति ॥ स त्वं बभ्राति अयःस्वर्णो बन्धनामेन कर्मणा ॥

अथ पूरकप्राणायाममाह-

द्वादशाङ्गुलपर्यन्त, समाकृष्य समीरणम् । पूरयत्यतियत्नेन, पूरकध्यानयोगत ॥ २०१ ॥ नासा
न्तनभसो ऽथ ह्रि द्वय िध सरयाङ्गुलोत्तरा । तेनो-त्रायु-पृथिव्यम्बु ४ वहिर्गतेरुदाहृता ॥ २०२ ॥

अथ रेचकप्राणायाममाह-

निस्सार्यते ततो यन्नात्रामिपद्मोदराच्छनैः । योगिना योगसामर्ध्याद्, रेचकारय प्रभञ्जन ॥ २०३ ॥

अथ कुम्भकध्यानमाह-

कुम्भवन् कुम्भक योगी, श्वसन नामिपङ्कजे । कुम्भकध्यानयोगेन, सुस्थिर कुरुते क्षणम् ॥ २०४ ॥

अथ पवनजयेन मनोचयमाह-

इत्येव गन्धवाहानामाऽङ्गुलनविनिर्गमौ । ससाध्य निश्चल धत्ते, चित्तमेकाग्रचिन्तने ॥ २०५ ॥
दुग्धाम्बुवत्समिलितौ सदैव, तुल्यक्रियौ मानसमारतौ हि । यावन्मनस्तत्र मरुत्प्रवृत्तिर्यावन्मरुत्तत्र
मन प्रवृत्ति ॥ २०६ ॥ तत्रैकनासादपरस्य ताश, एकप्रवृत्तेरपरप्रवृत्ति । विध्वस्तयोरिन्द्रियवर्ग-
शुद्धि, स्तद्ध्वसनामोक्षपदस्य सिद्धि ॥ २०७ ॥ निच्छैयजो दुग्धेन, को भावे कम्मि वट्टई समणो ।
ववहारजो अ कीरइ, जो पुव्वट्टिओ चरित्तमि ॥ २०८ ॥

[इति श्रीभावइयकनियुक्तो भाष्यकारोऽप्याह (२६९) ॥]

वैवहारोऽपि हु बलय, ज छउमत्थ पि वदई अरिहा । जा होइ अणाभिन्नो, जाणतो धम्मय
एअ ॥ २०९ ॥

गुणाहिण वदणय, छउमत्थो गुणागुणे अयाणतो । वदिज्जा व गुणहीण, गुणाहिअ चावि वदावे
॥ २१० ॥

उत्तरमाह-

आलएण १ विहारेण २, ठाणा ३ चकमणेण य ४ । सको मुविहिओ नाउ, भासा ५ वेणइएण
य ॥ २११ ॥ सँयर १ पियर २ वावि, जेह्म वावि भायर ३ । किइकम्म न कारिज्जा, सधे
रायणिए तहा ॥ २१२ ॥

[भावइयकनियुक्तो पृ० ५४० ॥]

१-वारणमण्ड उपचारवसरैऽमृतमय वहिस्तात् ४ अङ्गुल, ६ अङ्गुल, ८ अङ्गुल, १२ अङ्गुल । २-यत्र मनस्तत्र पवनो
पवन पवनस्तत्र मनो वर्तते यदाह-‘दुग्धे’ ति ॥ ३-निश्चयतो दुर्ज्ञेय को भावे कस्मिन् प्रशस्ते अप्रशस्ते वा वर्तते श्रमण इति
भावशेह ज्येष्ठ तत आतिशयिन वन्दनकाभाव एव प्राप्त इत्यतो विधिमभिविस्तुराह-यवहारस्तु कियते वन्दन यतः पूर्वं
स्थितधारिते य प्रथम प्रव्रजित सङ्गुलपञ्चातिजार इति गाथार्थ ॥ २०८ ॥ आह-सम्बुक् तद्रतभावाऽपरिज्ञाने सति
सि मिलेतेदेवमित्युच्यते व्यवहारप्रामाण्यात्तस्यापि च बलवत्वादाह भाष्यकार ॥ ४-यवहारोऽपि बलवानेव यद्यस्मात्कारणात्
छद्रक्षमपि पञ्चराधिक गुर्वादिक वदन्त, अर्हन्नपि केवल्यपि, अपिशब्दोऽत्रापि सवर्धते किं सदा नेत्याह-जा होइ अणा
भिन्नोति यावन् भवति अनभिज्ञातो यथाऽथ केवलीति किमिति वन्दते ? द्रव्याह-जानन् धम्मतां एता यवहारव गतिशय उक्ता
णामिति गाथार्थ ॥ २०९ ॥ ५-इत्य नोदकेनोक्ते सति व्यवहारनयमतमधिकुल्य गुणाधिकत्वपरिज्ञानकरणानि प्रतिपादयन्ना-
चार्य आह-आलए’ आश्रय वसति सुप्रमाजितादिलक्षणा अथवा स्त्रीपुण्ड्रकावनेति तेनाऽऽश्रयेन नागुणवत् एवविध
रउ आलो भवति विहारो मासन्त्यादिकत्वेन विहारेण स्थानमूर्द्धस्थान चङ्गमण गमन चेलेकवद्भावस्ते नमन्त आविरुद्धदे-
नामनोन्सर्गकरणेन च युगमानावनिप्रलोक्नपुरस्सराद्धतगमने चेल्यर्थ शक्य मुविहितो पातु भाषा वैनयिकेन न विनय
एव वनयिक समालोय भाषणेन जात्वायाविनयकरणेन चति भावना, नैतान्येवम्भूतानि प्रायशोऽमुविहिताना भवतीति
गाथार्थ ॥ २११ ॥ ६-‘माय’ मानरं पितरं चापि ज्येष्ठ वा ब्राह्मणम् अपिशब्दात्मातामहपितामहादिपरिग्रह कृति-
कर्म अभ्युत्थितवन्दनमित्यर्थं न कारयेत् सर्गान् रत्नाधिर्मांसप्या पर्याय-येथानित्यथ । किमिति मात्रावीर्य वन्दन कारयत
लोकगर्होपनायते, तेषा च वशविद्विपरिणामो भवति आलोचनप्रलारयानमन्त्रार्थं तु कारयेत् सागारिकाप्यथ तु यतनय
कारयेत्, एव प्रमज्याप्रतिपन्नानां विधि, गृह्मणानां तु कारयेदिति गाथार्थ ॥ २१२ ॥

जइ किंचि दृप्पओ अणमप्पणं वावि सेसियं वत्थुं । पच्चक्खेज्जण दोसो, सयंभुरमणाइमत्थु व्व
॥ २१३ ॥ जो वा णिक्खमिओ मणो, पडिमं पुत्ताइसंतडनिमित्तं । पडिवज्जेजा तओ वा, करेज्ज
तिविहं पि ति विहेणं ॥ २१४ ॥ तमाइजीवरहिण, भूमीभागे विमुद्धए । फासुएणं तु नीरेणं, इयरेणं
गलिण उ ॥ २१५ ॥

[श्राद्धदिनकृत्ये गाथा २३ ॥]

काऊणं विहिणा पहाणं सेअवत्थनियंसणो । मुहकोसं तु काऊणं गिहिर्विवाणि पमज्जए ॥ २१६ ॥

[श्राद्धदिनकृत्ये गाथा २४ ।]

वणणगंधोवमेहिं च, पुप्फेहिं पवरेहि य । नाणापयारवंघेहिं, कुज्जा पूअं विअक्खणो ॥ २१७ ॥

[श्राद्धदिनकृत्ये गाथा ६३ ।]

कैएण अत्थि जइ किंचि, कायव्वं जिणमन्दिरे । तओ सामाइअं मोत्तुं, करेज्ज करणिज्जयं ॥ २१८ ॥

[श्राद्धदिनकृत्ये गाथा ७९ ।]

जीवाण वोहिलाभो, सम्मदिट्ठीण होइ पिअकरणं । आणाजिणिंदभत्ती, तित्थस्स पभावणा
चेव ॥ २१९ ॥

[श्राद्धदिनकृत्यवृत्तो ॥]

रिउसमयण्हायनारी, नरोवभोगेण गच्चसंभूर्इ । वारसमुहुत्तमज्जे, जायइ उवरिं पुणो नेव
॥ २२० ॥ पणपन्नाइ परेणं, जोणी पमिलायए महिलियाणं । पणहत्तरीइ परओ, होइ अवीओ नरो
पायं ॥ २२१ ॥ दुप्पडिलेहिअ दूसं, अच्चाणाई विवत्त गिणहंति । घिप्पइ पुत्तयपणगं, कालिअनिज्जु-
त्ति कोसट्ठो ॥ २२२ ॥ जइ तेसिं जीवाणं, तत्थगयाणं तु सोणिअं हुज्जा । पीलिज्जंते धणिअं, गलिज्ज
तं अक्खरे फुसिअं ॥ २२३ ॥ आमे घडे निहित्तं, जहा जलं तं घड विणासेइ । इअसिद्धंतरहस्सं,
अप्पाहारं विणासेइ ॥ २२४ ॥

[आवश्यकेऽपि ॥]

पुंरिमंतिम अट्टट्टंतरेसु तित्थस्स नत्थि वुच्छेओ । मज्झिहएसु सत्तसु, इत्तिअकालं च १
वुच्छेओ ॥ २२५ ॥ चउभागो चउभागो, तिन्नि अ चउभाग पलिअचउभागो । तिन्नेव य चउभागो,
चउत्थभागो अ चउभागो ॥ २२६ ॥ समओ जहन्नमंतरमुक्कोसेणं हवंति छम्मासा । आहारसरी-
राणं, उक्कोसेणं नवसहस्सा ॥ २२७ ॥ उस्सेइम १ संसेइम २, तंदुल ३ तिल ४ तुस ५ जवोदगा
६ ऽऽयामं ७ । सोवीरं ८ सुद्धविअडं, ९ अंवड १० अंवाडय ११ कविट्टं १२ ॥ २२८ ॥ माउलिग
१३ दक्ख । १४ दाडिम १५, खज्जुर १६ नालियर १७ कयर १८ वदरफलं १९ । आमलयं २०
चिंचापाणगाइं च २१ पढमंगभणियाइं ॥ २२९ ॥ अंडर्यं १ पोअय २ रसया ३, जराउ ४ संसे-

१-तीर्थस्य चतुर्विधस्य सङ्घस्य ॥ कालिकृतस्य द्वादशाङ्गीरूपस्य दृष्टिवादस्तु सर्वान्तरेष्वपि व्यवच्छिन्न क्वचित्किय-
न्तमपि कालं व्यवच्छिन्नो दृष्टिवाद इति । २-अर्हदमवार्त्तापि तत्र नष्टेत्यर्थः । ३-मेहाचगृहधारणादि परिहारिणि
जाणिऊण कालियसुयट्ठा कालियसुअनिज्जुतिनिमित्तं वा पोत्थगं घिप्पइ । 'कोसो'त्ति समुदथो ।
निशीथे १२ उद्देशके ॥ ३-सुविधि ९ शीतल १०, १०।११ अन्तरे पल्योपमभा० १, १३।१४ अ० पल्यो० भा० ३
१।१० अन्तरे पल्योपमस्य ११।१२ अन्तरे पल्योपमस्य चतुर्थभा० ३ १४।१५ अ० पल्यो० भा० १ चतुर्थभागः ।
१ एकम् १२।१३ अन्तरे पल्योपम भा० १ १५।१६ अ० पल्यो० भा० १ सर्वान्तरमान पल्योपम २ चतुर्थभागत्रयं च ।
४-अण्डाज्जाता अण्डजाः पक्षिगृहकोकिलकादयः १, पोतादिव जायन्त इति पोतजा -ते च हस्तिवल्गुलीचर्मजल्लङ्गाप्रभृतयः
२, रसाज्जाता रसजा -आरनाल-दधि-तीमनादिषु पायुरुम्याकृतयोऽतिसूक्ष्मा भवन्ति ३, जरायुवेष्टिता जायन्त इति
जरायुजाः गोमहिष्यऽजादिकमनुष्यादयः ४, सखेदाज्जाता इति सखेदजा मत्कुणयूकादयः ५, समूर्च्छनाज्जाता समूर्च्छनजा-
शालमपिपीलिकमक्षिफासाल्लारादयः ६, उद्भेदाज्जन्म येषां ते उद्भेदजाः पतङ्गखजरीटपारिप्लवादयः ७, उपपाताज्जाताः
उपपातजाः, उपपातेन वा भवा औपपातिका देवा नारकाश्च ८, इति दशवैकालिकवृत्तौ ।

अया ५ समुच्छिमया । उमिय ७ तहोऽनवाइअ ८, भेएण अह्हाजा जीवा ॥ २३० ॥ मिच्छत्तं १
 वेअतिग, हासाईलफग च १० पायव । कोहाईण चउक १४, चउत्स अर्धिमतरा गठी ॥ २३१ ॥
 निणकप्पिया य साह, उकोसेण तु एगवसहीए । सत्त य हवति फ्हमवि, अहिआ फ्हआवि नो हुति
 ॥ २३२ ॥ जइ जगति सुविहिआ, फरति आवरसय च अन्नरथ । सिज्जायरो न होई, मुत्ते व फण
 व से होई ॥ २३३ ॥ अट्टेण तिरिक्खगई, रुहज्जाणेण गम्मए नरय । धम्मणेण देवलोए, सिद्धिगई
 सुबहाणेण ॥ २३४ ॥ कामाणुरजिय अट्ट १, रोइ हिंसाणुरजिय २ । धम्माणुरजिय धम्म ३,
 सुकम्माण निरजण ॥ २३५ ॥ जइआ होई पुच्छा, तइआ एअस्स उत्तर दिज्जा । इक्खस्स निगोअस्स,
 अणतमागो गओ सिद्धिं ॥ २३६ ॥ वय ५ समणधम्म १५ सज्जम ३२, वेआवच ४० च धम-
 गुत्तीओ ५१ । नाणाइतिय ५४ तव ६६ कोहनिग्गहाई ७० चैरणमेअ ॥ २३७ ॥ पिंडविसोही
 ४ समिई ५, भावण १२ पडिमा १२ इदिय निरोहो ५ । पडिलेहण २५ गुत्तीओ ३, अभिग्गहा
 ४ चैव कैरण तु ॥ २३८ ॥ तिगुणा तिरून् अहिआ, तिरिआण इत्थिया मुणेअथा । सत्तायीसगुणा
 पुण, मणुआण सुराण यत्तीसा ॥ २३९ ॥ अँसडेण समाइन्न, ज कत्थइ फारणे असावज्ज । न निवा-
 रिअमत्तेहिं अ, बहुमणुमयमेअमायरिय ॥ २४० ॥ रुक्खण जलाहारो 'सकोअणिआमएण सकुचई ।
 नियतनुहिं वेइइ, वही रुक्खे परिगहेण ॥ २४१ ॥ इत्थियपरिअएण, *हुक्खकत्तरुणो फलति मेहुणे ।
 तह कोहणस्स कदो, हुकार मुअइ कोहेण ॥ २५२ ॥ माणे हरइ रुअती, छायइ वही फलाइ
 मायाण । लोभे निहपलात्ता, खिवति मूले निहाणुवरिं ॥ २४३ ॥ रयणीण सकोओ, कमलाण होइ
 लोसन्नाए । ओहे चइत्तुमग्ग चटति रुक्खेसु वहीओ ॥ २४४ ॥ एगिंदियजीवाणवि, इअ वस
 सन्ना जिणेहिं पन्नत्ता । नहुं हुति मोह-सुह-दुह, वितिगिच्छा सोगधम्माइ ॥ २४५ ॥ गीअत्यो अ विहारो,
 गीअो गीअत्यमिसिओ भणिओ । एत्तो तइअविहारो, नाणुत्ताओ जिणवरिं ॥ २४६ ॥

[पद्यवस्तुके ११८० पृ० १०३ ॥]

गीअं भण्णइ मुत्त, अत्यो पुण होइ तस्स चक्खण । मुत्तेण य अत्थेण य, गीअत्य त विआ-
 णाहि ॥ २४७ ॥ जो देइ उवस्सय जइवरण गुणसयसहस्सकलिआण । तेण दिन्ना वत्थन्नपाणसय-
 णासणविगप्पा ॥ २४८ ॥ (मिच्छे-१ सासण-२ मीस्से-३ अविरय-४ देसे-५ पमत्त ६ अपमत्ते ७ ।

१-यदि शक्यातरपदे एतया जागरित्वा प्रामादिक प्रतिक्रमणं युज्यन्ति तदाऽसौ शक्यातर । अयैतच्छक्यायां सक्र-
 रात्रि जागरित्वा प्रामादिक प्रतिक्रमणं यत्र कुर्वन्ति तदा मौल शक्यातरौ न भवति किं तु यद्गृहे प्रतिक्रमणं कृतं स एव,
 अथ मन्त्राणां रात्रौ युज्यान्त्यत्र प्रातः प्रतिक्रमन्ति तदा मौलेश्च यत्र द्वावपि शक्यातरौ, यदा तु वसतिस्सर्वाणामादिकार-
 णान्नद्येषुधयसु सापराधित्वेन तदा यत्राचार्यं स्थितं स शक्यातरौ नाय ॥ २-नित्यानुष्ठानं चरन्म् । ३-वापारभे
 ऽनुत्तं करन्म् । ४-असदेषु ० रागद्वेषरहितं कलिब्रचार्यानिवृत्तं प्रामात्येन सत्ता समाचीनाम् आचीणं यद्वाप्रद
 शुद्धचरणीयुपासकवत् कुर्वन्ति इत्येवमथ यदा वरुणे पुत्राऽम्बने असावच प्रकृता मूलोत्तराणाराधनात्र बाधकं न च नैव
 निवारितम् वेत्त्यापैरैव तां चत्वारिभिर्गीतार्थं, अपि तु यद्गु यथा भवेत्तदनुमतेतदाचीनाम् । इति कथ्यन्तां उद्देशं ३ ॥

५-सहोचनिद्य-दृष्टास्तगादिनीयं अत्रयवस्येचनान्, पद्यवस्तुके इय १०६ गाथा, तत्र द्वितीयवदपठ एव-
 'ज क चइइ वचई असावज्ज' तत्र व्याख्या-कविन् प्रामात्येन शयं तदेव ॥

*-पुरवत्तपद्येति-दृष्टीनां तु क्वनीयद्विनीयं १ भुज्जानुवहून् २ पाणिहारकत्ता ३ दिव्यं प्रमत्तपचारि-
 णावदत्तमेतदुत्तरम् ॥ यथा-अर्थं एतन्नाप्रदहृत्सिगति, यदुत्तं हीपुण्ड्रपसेवान्, पदापत्तादौचित्येन इत्येव
 ही-ति-नाम् ॥ मन्त्रो नैव यथा युद्धमपुद्गलनाद्यन्तको यत्रकवच-भूमी गीताक्रमेर्द्वैकगति पुरतो नत्तनाम् चर ॥ १ ॥

६-नहुं देवेति-ने- पदं संज्ञा न भवति । ७-गीतार्थं विहारणदनेरोत्तरवापार, द्वितीयो गीतार्थमिति-
 अर्थो विहार एव, अथ विहारपदोत्तरविहार-सपुविहार-वने मनुज-जिनवरे-संगति ॥

नियद्वि ८ अनियद्वि ९ सुहुमु १० वसम ११ खीण १२ सजोगि १३ अजोगि गुणा १४ ॥) पावइ
 सुरनररिद्धी, सुकुलुप्पत्ती य भोगसामिद्धी । नित्थरइ भवमऽगारी, सिज्जादाणेण साहूणं ॥२४९॥ संग-
 मय १ कालसूरी २, कविला ३ अंगार ४ पालया ५ दोवि ६ । नो जीव ७ गुट्टमाहिल ८, उदाइनिव
 मारय ९ अभवा ॥२५०॥ अउणद्विसयसहस्सा, सत्तावीसं भवे सहस्साइं । चत्ताकोडाकोडी वासाणं
 उसभजिण आउं ॥२५१॥ उस्सेह अंगुलेण, अह उहुमुस्सेह सत्त रयणीओ । तिरिलोए पणधणुसय,
 सौसयपडिमा पणिवयामि ॥२५२॥ गोहुम १ साली २ जवजव ३, जवाइ ४ धन्नाण कुट्टगाईसु ।
 खविआणं उक्कोसं, वरिसतिगं होइ सच्चित्तं ॥ २५३ ॥ तिल १ मुग्ग २ मसूर ३ कैलाय ४ मास ५
 चवलग ६ कुलत्थ ७ तुवरीणं ८ । तह वैट्टचणग ९ वल्लाण १० वरिसपणगं सजीवत्तं ॥ २५४ ॥
 अइसी १ लँट्टार कंगू ३, कोडीसग ४ सण ५ वरट्ट ६ सिद्धत्था ७ । कुहव ८ रालग ९ मूलग,
 वीआणं १० सत्त वरिसाणं ॥२५५॥ अमित्तो मित्तरूवेण, कंठं धेत्तूण रोअई । मामित्तो सगगइं जाइ,
 दोवि गच्छामु दुगगइं ॥ २५६ ॥ उवएसा दिज्जंति, हत्थे नच्चाविऊण अत्तेसिं । जं अप्पणा न कीरइ,
 किमेस विक्काणुओ धम्मो ॥ २५७ ॥ सद्देण मिउ रूवेण पयंगओ महुअरो अ गंधेणं । आहारेण य
 मच्छो, वज्जइ फासेणऽवि गइंदो ॥२५८॥ कत्थवि जीवो वलिओ, कत्थवि कम्माइं हुंति वलिआइं ।
 जीवस्स य कम्मस्स य पुबनिवद्दाइ वेराइं ॥२५९॥ राई सरिसवमित्ताणि, परच्छिद्दाणि पाससे । अप्पणो
 विह्वमित्ताणि, पासंतोऽवि न पाससे ॥२६०॥ सीसं धुणियं चित्तं, चमक्किअं पुलकिअं च अंगेहिं । तहवि
 हु परगुणगहणे, खलस्स न हु निग्गया वाणी ॥२६१॥ पंचेदिआ मणुस्सा, एगय[स]नर भुत्तनारिगच्चंभि ।
 उक्कोसं नव लक्खा, जायंती एगवेलाए ॥ २६२ ॥ संघाइआण कजे, चुण्णिज्जा चक्कवट्टिसिन्नं पि ।
 तीए लद्धीइ जुओ, लद्धि पुलओ मुणेयवो ॥ २६३ ॥ उत्तमनर १ पंचुत्तर २ तायत्तीसा य ३
 पुवधर ४ इंदा ५ । केवल्लिदिक्खिअ ६, सासणदेवी ७ जक्खा य ८ नो अभव ॥ २६४ ॥ अरि-
 र्हत १ सिद्धि २ चेइय ३, तव ४ सुअ ५ गुरु ६ साहु ७ संघ ८ पडिणीओ । वंधइ दंसणमोहं,
 अणंतससारिओ जेणं ॥ २६५ ॥ जो जेण सुद्धधम्मंभि ठाविओ संजएण गिहिणा वा । सो चेव तस्स
 जायइ, धम्मगुरू धम्मदाणाओ ॥ २६६ ॥ आरंभे नत्थि दया, महिलासंगेण नासए वंभं । संकाए
 सम्मत्तं, पवज्जा [द्व] अत्थगहणेणं ॥ २६७ ॥ गिहिवावारपरिस्सम-स्विन्नाण नराण वीसमट्टाणं ।
 एगाण होइ रमणी, अण्णाण जिणिंदवरधम्मो ॥ २६८ ॥ तुल्लेवि उअरभरणे, मूढ अमूढाण
 पिच्छसु विवारं । एगाण नरयदुक्खं, अण्णेसिं सासयं सुक्खं ॥ २६९ ॥ जीवंति पुह्विपडिआ,
 भयरवपडिआवि केवि जीवंति । जीवंति खग्गलिन्ना, चट्टु च्छिन्ना न जीवंति ॥ २७० ॥ आवाय-
 मित्तगुरुएहिं तह पेरंतलहुअभूएहिं । वंटानिनायसरिसेहिं लज्जिमो लोअपिम्मेहिं ॥ २७१ ॥ नलिण
 मिणं मलिणमिणं, विरसमिणं गंधवज्जियमिणं च । मालइरत्तो भमरो, परिहरइ विआरिउं
 कुसुमे ॥ २७२ ॥ अइहासो १ अइतोसो २, अइदुज्जाण-माणुसेहिं संवासो । अइउव्भडो
 अ वेसो, पंचवि गुरुअस्स लहुअंति ॥ २७३ ॥ कालंमि अणाईए, जीवाणं विविहकम्मवसगाणं ।

१-५९ लाख कोडाकोडी, २७ सहस्र कोडाकोडी, ४० कोडाकोडी, अइतोऽपि यथा-५९२७०४०००००००००॥
 ८४ वरसे १ पूर्वाङ्ग (१) ८४ लाख पूर्वाङ्गे १ पूर्व (२)। ८४ लाख पूर्वे १ त्रुटिताङ्ग (३)। एतल्ल आदिनाथ आउपु
 गाथोक्त ॥ २-त्राध्वतजिनस्तवने वृत्तौ मूत्रेऽपि यथा-पडिमा पुण गुरुआओ, पणधणुसयलहुअसत्तहत्थाओ ॥
 ३-कलायः-त्रिपुटाख्यवान्यविशेषः । ४-वट्टचणकाः-शिखारहिता वृत्ताकाराश्रयकविशेषा ॥ ५-लट्टा-कुसुम्भ-
 पीत०, कंगू-तन्दुला; कोद्रवविशेषः । शणं त्वप्रधानं वरद्विति 'वरटी' इति प्रसिद्धम् । ६-तस्य हि एतादृशी शक्तिर्यथा
 चक्रवर्तिस्कन्धावारमपि यो गृहीयाद्विनागयेद्वा न प्रायश्चित्तं प्राप्नुयात्, भाष्यवृत्तौ ।

त नत्थि सविहानं ससारे ज न समवई ॥ २७४ ॥ अरिहतो असमत्थो, तारणे लोआण-दीह-
समारे । मग्गे देसणकुसलो, तरंति जे मग्गि लग्गति ॥ २७५ ॥ दस पुद्दा वुच्छिन्ना मपुत्ता,
सुरभवमि सपत्ते वइरमि महासत्ते, सघयण अद्धनाराय ॥ २७६ ॥ रिसहो १ रिसहस्त सुया ९९,
भरहेण विवज्जिआ नवनवइ । अट्ट य भरहस्त सुया, सिद्धा इक्कमि समयमि ॥ २७७ ॥ वासाण
वीससहस्सा, नवसय तिअमास पचदिणपहरा । इक्का घडिआ दोपल, अक्करगुणयाल जिणधम्मो
॥ २७८ ॥ अंद्दामलग[य]पमाणे, पुदविक्रए हवति जे जीवा । ते पारेवयमित्ता, जवुदीवे न मायति
॥ २७९ ॥ एगमि उग्गनिहुमि, जे जीवा जिणवरेहिं पत्रत्ता । ते जइ सैरिसवमित्ता, जवुदीवे न
मायति ॥ २८० ॥ सोहम्ममि दिवड्ढा, अट्टाइज्जा य हुति माहिंदे । पचेव सहस्सारे, छ अञ्चुय
सत्त लोंगेते ॥ २८१ ॥ दो कोडाकोडीओ, पणसिय-लक्का य हुति कोडीओ । इगुत्तर सहस्स-
कोडी, चउसय कोडीओ नायद्या ॥ २८२ ॥ अट्टावीस कोडी, लक्का सगवन्न चउदस सहस्सा ।
दोय सयापणसीया, चवति देवीओ इन्त्स ॥ २८३ ॥ इह भरहे केवि जीवा, मिच्छदिट्ठी य
भइया भावा । जे मरिउण नग्गे, वरिसे होहिंति केवलियो ॥ २८४ ॥

वारसहि जोयणेहिं, सोअ परिगिण्हए सइ । रूव गिण्हइ चक्खु, जोअणलक्काओ साइरेगाओ ॥
गध रस च फास, जोअणनवगाउ सेसाइ ॥ २८५ ॥ पणसयसत्ततीसा, चउत्तीस सहस्स लक्क
इगवीसा पुक्करदीवड्ढनरा, पुवेण अवरेण पिच्छति ॥ २८६ ॥

[पुण्णमालावृत्तौ ४३४ ॥]

कालतिय, वयणतिय लिंगतिय तह परोक्क पक्ककर । उवणयउवणयचउक, अञ्जत्थ चेव
सोलसम ॥ २८७ ॥

[इति श्रीबृहल्लक्ष्णे प्रवचनसारे १४० द्वारेऽपि ३६४ पत्रे ॥]

उम्मग्गदेमणाए, चरण नासिति जिणवरिदाण । वायत्तदसणा खलु, न लब्भा तारिसा दहु
॥ २८८ ॥ [आभिग्गहिय-अणभिग्गहिय-तह अभिनिवेशिय चेव । ससइय अणाभोग मिच्छत्त
पचहा ण्व] अक्कडियचारित्तो वयगहणाओ य जो भवे तित्थ । तस्स सगासे दसण, वयगहण तह
य सोही य ॥ २८९ ॥ तरिअन्न य पइत्ता, मरिअन्न वा समरए समत्थेण । असरिसज्जणवड्ढावा, न
हु सहिअन्ना कुलपसूएण ॥ २९० ॥ जवुदीवे चक्की, उक्कोस तीस चउ जहनेण । धायइपुक्करदुग्गणा,
एमेय य केसवाईआ ॥ २९१ ॥ एगदिणे जे देवा, चवति तेसिं पि माणुसा थोवा । कत्तो मे मणु
यभवो, इअ चिंताए सुरो दुहियो ॥ २९२ ॥ जोइ १ वण २ पढमपुडविं नव तागाईओ जति
पीआए । तईय असुरकुमारा, वेमाणिय जति सत्तसु वि ॥ २९३ ॥ ते उट्टमञ्जुअ जाव, भवणवई

१-सणी नातिपुप्प वापि बृहस्पुत्रुर । २-अप्यायम्य सपप्रमाणभणनेन पृथ्वीत सूहमत्वम् । ३-भगवत्त्वा १४
सतते ८ उद्देशेने सिद्धिश्चिगत उपरि अलोको योननम् एक, तत्र इद योनन उत्सेधाहुलनिष्पन्न ज्ञेय यतस्तस्य योनस्योप-
रितनकोशस्य पन्नागे सिद्धावगाहना धनुस्त्रिभागयुक्त त्रयस्त्रिंशदविकथनु शतत्रयमानाभिहितरूपा उत्सेधाहुलयो ननाश्रयणत
एव युज्यत इति । ४-श-इ-मेघर्षनाश दहपम् १ चतु सातिरेक्योजनरक्षाद् एव शक्यति विष्णुकुमारादेरिव स्वचरणपु
रोवर्तिगतायसर्गतगेट्टादिदशनात्, इदमभास्वरपदायापेक्षया भास्वरपदायापेक्षया तु पणसये ति गायोके पट्टप्राणादिशके
देवादिर्पूर्वादीनामिव गंध तित्त्कट्टुनादिरस । ५-उपनय स्तुति अपनयो-नि दा तयो चतुष्कम्-उपनयापनयचतुष्कम्,
'रूपवती सा इति उपनयवचनम् १ दु शीला' इति अपनयवचन २ रूपवती स्त्री किं तु दु शीला' इति उपनयापनयवचनम्
३ कुरूपा स्त्री किं तु सुगीरा इति अपनयवचनम् ४, ६-अथथेतसि निधाय विप्रतारस्तुभ्या अयत् विभणिपु पुनरपि
सदसा यथेतसि तदेव क्वि यत्तद् पोडशमप्यात्मवचनम् । ७-तस्मिन्निध स्वय विनयसम्यग्दर्शना तादशा द्रष्टुमपि न
कल्पते किं पुनसौ सम सहवासदय ।

जाव जंति सोहम्मे । जोइ वण पंडगवणं, असंखदीवोदहितिरियं तु ॥ २९४ ॥ [दो पढमकप्पुढविं,
दो दो दो वीय-तईय-चउत्थि । चउ उवरिम ओहीए, पासंति य पंचमिं पुढवि ॥१॥ छट्ठिं छगोविज्जा,
सत्तमिमियरे अणुत्तरसुराओ । किंचूणलोगनालिं, असंखदीवोदहिं तिरियं ॥ २ ॥] मेल्हेइ सोहम्माओ,
कोवि सुरो लोहगोलगं हिट्ठा । भारसहस्समयं सो, छम्मासेहिं च छदिणेहिं ॥ २९५ ॥ छप्पहरछघडि-
आहिं, जावइयं इक्कमिज्ज तावइथा । रज्जू तयद्धमणो, दीवसमुद्धंतिमो जलही ॥ २९६ ॥ पणया-
लीसं आगम,-समग्ग-गंथाण हुंति छलक्खा । पणयालीस सहस्सा, पंचसया चेव चउयाला ॥२९७॥
संविग्गसंजयाणं, दिज्जइ धिप्पइअ पढमभंगो य । संजइवग्गे दिज्जइ, नवि धिप्पइ कारणे वीओ
॥ २९८ ॥ गिहि १ अन्नतिरिथआणं २, नवि दिज्जइ धिप्पए अ नवरं तु । नवि दिज्जइ नवि धिप्पइ,
पासत्थाईसु सवेसु ॥ २९९ ॥ सुरल्लोअवाविमज्जे, मच्छाई नत्थि जलयरा जीवा । गेविज्जे नहु
वावी, वाविअभावे जलं नत्थि ॥ ३०० ॥ चेइयद्वं दुविहं, पूआ १ निम्मल्ल २ भेयओ तत्थ ।
आयाणाई द्वं, पूआरित्थं मुणेअवं ॥ ३०१ ॥ अक्खयफलवल्लिवत्थाइ संतिअं जं पुणो द्विणजायं ।
तं निम्मल्लं वुचइ, जिणगिहकम्मंमि उवओगो ॥ ३०२ ॥ अह पुवि चिअ केणइ, हविज्ज पूआ कया
सुविहेण । तंपि सविसेससोहं, जह होइ तथा तथा कुज्जा ॥३०३॥ निम्मल्लंपि न एवं, भण्णइ निम्मल्ल-
लक्खणा भावा । भोगविणट्ठं दवं, निम्मल्लं विति गीयत्था ॥३०४॥ इत्तो चेव जिणाणं, पुणरवि आरो-
वणं कुणंतु जहा । वत्थाहरणाईण, जुगलिअ कुंडलिअमाईणं ॥ ३०५ ॥ कहमन्नह एगाए, कायाईणं
जिणिदपडिमाणं । विजयाई वन्नि अट्टसयं ल्हंताया समए ॥ ३०६ ॥ जे निच्चमप्पमत्ता, गंठिं
वंधंति गंठिसहियंमि । अट्टसयं ल्हंता सग्गाऽपवग्गसुक्खं, तेहिं निवद्धं संगंठिमि ॥३०७॥ भणिऊण
नमुक्कारं, निचं विम्हरण वज्जिया धन्ना । पारंति गंठि सहिअं गंठिसह कम्मकंठीहिं ॥ ३०८ ॥ पोरिसि १
चउत्थ २ छट्ठे ३, काउं कम्मं खवंति जं मुणिणो । तं नो नारयजीवा, वाससयसहस लक्खेहिं
॥ ३०९ ॥ सत्तरिसयमुक्कोसं, वीस जहन्नेण विहरमाणजिणा । समयखित्ते दस वा जैम्मं पइवीस-
दसगं वा ॥ ३१० ॥ पायमिह कूरकम्मा, जीवा भवसिद्धियावि दाहिणए । नेरइअतिरिअमणुआ,-
सुराइठाणेसु गच्छंति ॥ ३११ ॥ अट्ट १ दुवालस २ सोलस ३, चउत्तिहारेहिं पउरमड्ढेहिं । दसहिं
तिहारा वड्ढे, एगओ होइ उववासो ॥ ३१२ ॥ गिह १ जोइ २ भूसणंगा ३, भोअण ४ भायण ५
तहेव वत्थंगा ६ । चित्तरसा ७ तुडिअंगा ८, कुसुमंगा ९ दीविअंगा य १० ॥ ३१३ ॥ वैहुरयण-
विणिम्माया, भवणदुमा अट्टभूमिआ दिव्वा । सयणासणसन्निहिआ, तेएण निदाहरविसरिसा ॥३१४॥
जोइदुमाणं उवरिं, ससिसूरा जत्थ वच्चमाणाऽवि । ताणं पभवोऽपहया, निअयंपि छविं विमुंचंति
॥ ३१५ ॥ वरहार कणयकुंडल,-मउडालंकारनेउराईणि । नियअंगभूसणाइं आहरणदुमेसु जायंति
॥ ३१६ ॥ अट्टसयसज्जयजुओ, चउसट्ठी तह य वंजणविअप्पो । उप्पज्जइ आहारो, भोअणरुक्खेसु
रसकलिओ ॥ ३१७ ॥ भिंगारथालवट्टय, कञ्चोलयवद्धमाणमाईणं । कंचणरयणमयाइं, जायंति
अ भायणंगेसु ॥ ३१८ ॥ खोमदुगुह्यवान्धय,-चीणंसुअ पट्टमाडआइं च । वत्थाणि बहुविहाइं
वत्थंगदुमा पमाणंति ॥ ३१९ ॥ कायंवरी पसन्ना, आसवजोगा तहेवऽणेग विहा । चित्तंगरसेसु

१-रज्जुभेवरे । २-सवधभूरमणनमुद्ध, प्रमरान्तरेण रज्जुप्रमाणमाह । ३-पार्थस्यादीना न वीयते नापि तेभ्यो
एवमेव । ४-महाविदेहेषु जपन्वत । ५-जन्म आश्रित्य महाविदेहेषु २०, भरतैरावतेषु १० स्यु । ६-श्रुटिताज्ञास्तु-
नानिपुणानामुपरिभेदनिर्णयैरेहुप्रसरैरगतोऽयं फौरिव उपगोभितास्त्रिष्टन्ति । उमुमाज्ञास्तु-विचित्रमरसपुरनिपववर्णमात्य-
नानिपुणानां नदंतान्ते । ईपिज्ञास्तु-यथा इह त्रिनधा प्रज्वन्त्य. कनकमणिमण्यो दीपिका उद्योतं कुर्वाणा दृश्यन्ते
रत्नैश्च परिकाराद्यैः कोतेन गन्धमुद्योतयन्त्यस्त्रिष्टन्ति ॥ ७-विध्रनापरिणामेन ।

सया, पाणयजोगा च जायति ॥ ३२० ॥ फालो अचित्तो अह आविओ वा, चउरगुल विर्यडओ
असधिम । विस्सामहेउ तु सैरीरयस्स, वोसा अवट्टभगया न एव ॥ ३२१ ॥ एक पाउरमाणे,
सोमिअं उन्निय च लहुमासो । दुन्नि अ पाउरमाणे, अतो सोमी बहिं उनी ॥ ३२२ ॥ छैप्पइअ पण
गरक्खा, मूसा उज्जायणा य परिहरिआ । सीयत्ताण च कय, तेण सोम न बाहिरओ ॥ ३२३ ॥
पँढमचरिमा च सिंसिरे, गिम्हे अद्ध तु तासि वज्जेज्जा । पाय ठवे सिणेहातिरक्खणद्धा पवेसे वा ॥ ३२४ ॥

[श्रावकविधौ परिदतराजपरमाहृतधनपालेनोक्तम् ॥]

पचविह्विसयसुत्त, उवसुत्तइ परमिण्णु दिवसेसु । तिवाभिलासविरओ, परिहरओ पचसु तिहीसु
॥ ३२५ ॥ जह दीवा दीवसय, पईवई सोवि दिप्पई दीवो । दीवसमा आयरिया, दिप्प च पर च
दीवति ॥ ३२६ ॥ कयवयकम्मयभावो १, सीलत्त्व चेव तह य गुणवत्त २।३ । रिउमइववहरण
चिअ ४, गुरुसुसूसा य बोधवा ५ ॥ ३२७ ॥ पवयणकोसल्ल पुण, ६ छट्ट ठाण तु होइ नायव ।
छट्टाणगुणेहिं जुओ, उक्कोसो सावगो होई ॥ ३२८ ॥

मैथुनप्रसक्तयोर्हिं स्त्रीपुंसयोरुल्लृष्टतोऽष्टादशलक्षणीवा विनश्यति । यदुक्तम् -

मेहुणसत्तारुढो, नव लक्ख हणेई सुहुमजीवाण । केवल्लिणा पन्नत्त, सह्हिअध पयत्तेण ॥ ३२९ ॥
इत्थीजोणीइ सम्भवति वेइदिया उ जे जीवा । एको व दो व तिण्णि व, लक्खपुहुत्त च उक्कोस ॥ ३३० ॥
सत्तत्तायां योनी एते द्वीन्द्रिया शुभ्रतोणितसम्भावत्तु गर्भजपञ्चेन्द्रिया इमे-
पचिदिया-मणुस्ता इग्नरससुत्तनारिगन्धमि । उक्कोस नवलक्खा, जायते प्गवेलाए ॥ ३३१ ॥
नवलक्खाण मज्जे, जायइ इक्खस्स दुण्ह य समत्ती । सेसा पुण एमेव य, मिलय वच्चति तत्थेव ॥ ३३२ ॥
समूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियमनुष्या अपि असव्येयात्तथाहि-

असव्य इत्थीनरमेहुणाओ, मुच्छति पचिदिअमाणुसाओ । नीसेस अगाण विभत्तिचगे, भणइ जिणो
पन्नवणा उवगे ॥ ३३३ ॥ सट्टद्धरणनिमित्त, गीअत्थयवेसणा तु उक्कोस । जोअणसयाइ सत्त उ,
घारस वरिमाइ कायवा ॥ ३३४ ॥ अगीअत्थो न विआणइ, सो ऊ चरणस्स देइ ऊणइहिय । ता
अप्पाण आलोअग च पाडेइ ससारे ॥ ३३५ ॥ ज जयइ अगीअत्थो, ज च अगीअत्थनिस्सिओ
जयई । वट्टावेई गच्छ, अणतसमारिओ होई ॥ ३३६ ॥ श्रद्धालुता श्राति शृणोति शासन,
धन वपेदाशु शृणोति दर्शाम् । क्वत्तुल्ल पुण्यानि करोति सयम, त श्रायक प्राहुरमी विचक्खणा
॥ ३३७ ॥ तेरसकोडिसयाइ, चुलसीकोठीओ घारस य लक्खा । सगसीइ सहस दो सय, सव्वग
छक्खमीए ॥ ३३८ ॥ १३८४१२८७०० एतावत्त ॥ सुआसुतो मीसो, तिविहो ससारविट्ठ-
णाकालो । तिरियाण सुअवज्जो, सेसाण होइ तिविहो वि ॥ ३३९ ॥ नाणस्स केवलीण, घम्मा-
यरिअस्स सघसाहूण । माई अवन्नवाई, विच्चिसिअ भावण कुणई ॥ ३४० ॥

[इति श्रीभगवतीवृत्तौ प्रथम क्षतके द्वितीयोद्देशके ५० पत्रे ॥]

जलदोण १ मद्धभार २, समुहाइ समूसिओ उ जो णव उ ३ । माणु १ म्माण २ पमाण ३,
तिविह रल्ल लक्खण एय ॥ ३४१ ॥

[श्रीभगवतीवृत्तौ द्वितीयक्षतके त्रयोदशके ११९ पत्रे ॥]

१-विस्तृत-अत स्मिं परहित । २-एवमिय पर्वस्त्रियपठे योगपठे विश्रामहेतो शरीरस्य एतदेव एवमवष्टम्भदोषा
न स्यु । अथ च म्यनिर १ ग्लान २ वाचनात्पायाणां ३ कल्पत तान्धेयाम् । ३-एवंप्रसिद्धं छप्पइद्वया न भवति
इत्यरहा यह भवति पणओ उल्लि अतो उन्निय पाउणिज्जमाण मलीमसा य कवली दुग्गधा विहिपरि
मोणेण सामि उज्झयणया परिहरिया पडगम्भक्खत्तिइ सीयत्ताण कय भयइ, पण्ण कारणेण सोमिय
वाहिं न पगुरिज्जा । निदीये । ४-प्रथमचरमगोष्ठी वर्धयित्वा उभयोरुदं वगदित्वा उभे पात्र स्थापयेत्
अवस्थाप-महिद्य-दिमवग रक्षार्थं मय्य पात्र प्रवेणयेत् ॥ श्रीमन्निसुप्ति (१४५)

मस्तकशूचिविनाशे, तालस्य यथा ध्रुवो भवति नाशः । तद्वत्कर्मविनाशो, मोहनीयस्य क्षये नित्यं ॥ ३४२ ॥

[श्रीआचाराङ्गप्रथमश्रुतस्कन्धे ।]

जे उ द्राणं पसंसन्ति, वहमिच्छन्ति पाणिणं । जे उ णं पडिसेहिंति, वित्तिच्छेअं करिंति ते ॥३४३॥

[श्रीआचाराङ्गप्रथमश्रुतस्कन्धे पद्याध्ययने २३३ पत्रे ।]

जम्मा १ मिसेअ २ निक्खमण ३ चरण ४ नाणुप्पया य ५ निवाणे ६ । दिअलोअभवण ७ मंदर ८, नंदीसर ९ भोमनगरेसुं १० ॥ ३४४ ॥ अट्टावय ११ उल्लिते १२ गय्यगपयए अ १३ धम्मचक्के अ १४ । पास १५ रहावत्तनगं १६, चमरुप्पायं च वंदामि ॥ ३४५ ॥

[इदं गाथाद्वयं श्रीआचाराङ्गद्वितीयश्रुतस्कन्धप्रारंभे तृतीयचूलायां श्रीआचाराङ्गनिर्युक्तौ ३८५ पत्रे ॥]

अलिअं न भासिअव्वं, अत्थि हु सच्चं पि जं न वत्तव्वं । सच्चं पि होइ अलिअं, जं परस्पीडाकरं वयणं ॥ ३४६ ॥

[इति श्रीआचाराङ्गद्वितीयश्रुतस्कन्धे चतुर्थाध्ययने प्रथमोद्देशके वृत्तौ ३५६ पत्रे ॥]

सत्तरिसयमुक्कोसं १७०, इअरे दस १० समयखेत्तजिणमाणं । चोत्तीस पढमदीवे, अणंतरऽद्धे य ते दुगुणा ॥ ३४७ ॥

[इति आचाराङ्गवृत्तौ चतुर्थाध्ययने प्रथमोद्देशके १६२ पत्रे ॥]

यथाप्रकारा यावन्तः संसारावेशहेतवः [आश्रवाः] । तावन्तस्तद्विपर्यासा-न्निर्वाणसुखहेतवः ॥३४८॥

[आचाराङ्गवृत्तौ ४ अध्ययने २ उद्देशके १६४ पत्रे ॥]

कारणमेव तद्वन्त्यं, सूक्ष्मो नित्यश्च भवति परमाणुः । एकरसवर्णगन्धो, द्विरुर्षः कार्यलिङ्गश्च ॥३४९॥

[इति श्रीस्थानाङ्गवृत्तौ ॥]

जेसिमेवद्धो पुगल, परिअट्टो सेसओ अ संसारे । ते सुक्खपक्खिया खलु, अहिए पुण कण्हप-क्खाओ ॥ ३५० ॥ मूलं १ साह २ पसाहा ३, गुच्छ ४ फले ५ छिद पडिअभक्खणया ६ । सबं १ माणुस २ पुरिसा ३, सौउह ४ झुञ्जंत ५ धणहरणा ॥ ३५१ ॥ (?)

लिङ्गदानविधिमाह—

[“पुँबामुहो उ उत्तरमुहो व देज्जाऽहवा पडिच्छेज्जा । जाए जिणादओ वा, हवेज्ज जिण-चेइयाइं चा ॥ १ ॥”]

[श्रीस्थानाङ्गे २ स्थाने १ उद्देशके वृत्तौ ५७ पत्रे ॥]

१-जन्मभूमी १, अभिसेओ-जस्य रायाभिसेओ वा २, निक्खमणो-जहिं निक्खंतो ३, चरणं-कुम्मारगामा अट्टिअगामादि जत्थ हिंडंतो ४, नाणुप्पायभूमी ५, निवाणभूमी ६, भावे तस्स आगाढं दंसणं भवति । इति श्रीआचाराङ्गवृत्तौ । २-गजाग्रपदे दशार्णकूटवर्तिनि तथा तक्षशिलाया धर्मचक्रे, तथा अहिच्छ-त्राया पार्श्वनाथस्य वरणेन्द्रमहिमास्थाने, एवं रथावर्ते पर्वते वैरखामिना यत्र पादपोषणमनं कृतं यत्र च श्रीमत् वर्द्धमानमाश्रित्य चमरेन्द्रेणोत्पतनं कृतम् ॥ ३-“से भिक्खू वा० जा य भासा सच्चा सुहुमा जा य भासा असच्चा मोसा तहप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूओवघाइयं अभिकंखं भासं भासिज्जा” वृत्तिः-स भिक्षु या पुनरेवं जानीयात् तद्यथा-या च भापा सत्या ‘सूक्ष्मा’ति कुणाग्रीयया बुद्ध्या पर्यालोच्यमाना मृषाऽपि सत्या भवति, यथा सत्यपि मृग-दर्शने लुब्धकादेरपलोप इति, उक्तञ्च-‘अलियं’ इत्यादि, आचाराङ्गवृत्तौ । ४-अर्द्धपुद्गलपरावर्तं किञ्चिन्न्यूनं । ५-शुक्रो विशुद्धत्वात्पक्षोऽन्युपगम शुक्रपक्षस्तेन चरन्तीति शुक्रपाक्षिका, शुक्रत्वं च क्रियावादित्वेन, इति स्थानाङ्गवृत्तौ । ६-साउह-आयुधसहित । ७-पुद्गल-पूर्वाभिमुखः १ उत्तराभिमुखो २ वा दयात् गुरु । अथवा प्रतीच्छेच्छिष्यो यस्या जिनादयो वा दिशिजिना मन पर्यायज्ञानिन अवधिसपन्नाश्चतुर्दशपूर्वधरा नवपूर्वधराश्च जिनचैत्यानि वा यस्या सा दिशि आसन्नानि तदभिमुखो दयादयना प्रतीच्छेदिति गाथार्थः ॥ १ ॥ इति पञ्चवस्तुकवृत्तौ २३ पत्रे ॥

भूए अणाइकाले, वेइ होहिंति गोअमा । सूरी । जेसिं नामग्गहणे, नियमेण होइ पच्छित्त ॥३५२॥
एअ गच्छववत्थ, दुअपणिहाणतरतु जो सटे । त गोअम । जाण गणिं, निच्छयओअणतससारिं ॥३५३॥

[इद गाथाद्वय धीमहानिशीये पञ्चमाध्ययने ४२ पत्रे ॥]

सूईहिं अग्गिबन्नाहिं, सभिन्नस्स निरतर । जावइअ गोअमा । दुक्ख, गब्भे अट्टगुण तहा ॥३५४॥
गभाओ निष्कटतस्स, जोणीत्तनिपीडणे । कोटिगुण तय दुक्ख, कोडाकोडिगुण पि वा ॥ ३५५ ॥

[धीमहानिशीये पञ्चमाध्ययने ॥]

जह मगडम्भोजनगो, धीरइ भरवहणकारणा नवर । तह गुणभरवहणत्थ, आहारो वभयारीण ॥३५६॥

[श्रीउत्तराध्ययने अष्टमाध्ययने वृत्तौ २९४ पत्रे ॥]

द्वो वासमहस्सठिडे, देमाण होइ विसयपरिभोगो । पणसय पणसय हाणीं, जोईसिअ भवण वण
यराण ॥३५७॥ चउविहसघसमेय, मुणिगणधेअ वि पत्तजयसेअ । वीरजिणद नमिउ, थुणाभि चउवीस-

णिणसघ ॥३५८॥ सिरिपुडरीयगोयमपमुहा गणहारिणो महामुणियो । चउठससयवावता (१४५०)_२
जयतु निच दुरिअहरणा ॥३५९॥ मुणिउमहसेणपमुहा-ऽड्डयालमहस्स लक्ख अडवीसा (२८४८०००) ।

वमी मुन्निचदण चोआलक्खया छच्चत्तसहस्सा (४४४६०००) ॥ ३६० ॥ चउरसयाछडहिया,
सेयसाणदकामदेवा य । पणपन्नलक्खसहसातिपत्रया (५५५३४०६) सावया सरह ॥ ३६१ ॥

मुमदा सुलसा रेवई, एगा कोडी अचरलक्खया य । नवनवइसहसातिसया पन्नासा (१०१९९३५०)
साविया सरह ॥ ३६२ ॥ सिरिसुहमजवुपमुहा, दुमहस्स चउत्तरा जुगपहाणा (२००४) । तनुद्धा

मुणिवसहा, इगारलक्खया सहस्स सोला (१११६०००) ॥ ३६३ ॥ जिणभत्तनिवा उ इगारलक्खया
सोळ सहस्स बीस हिया (१११६०२०) । एए पभायसमए, सरिअधा भवभावेण ॥ ३६४ ॥ एअ

चउविहसघ, गुणरणमय सरेइ जो भवो । पइदियह तिक्काल, सो पावे निज्जर गुरुअ ॥ ३६५ ॥
रिसहेससम पत्त, निरवज्ज इक्खुरससम दाण । सेअससमो भावो, हविज्जा जइ मग्गिअ हुज्जा ॥३६६॥

अरिहवसिद्धसूरी, उनहाया साहुसाहुणीओ अ । सावय साविअरूय, वदे सघ तिकालभय ॥३६७॥
इअ विमलगुणोह चत्तनीसेसदोह, विजिअपनलमोह मित्रभावारिजोह । थुणइ तवमहग्ग जो सया

सवसघ, लहइ अ सिव सिग्ग, छिनसपुत्रविग्ग ॥ ३६४ ॥
जिणरुप्पिया य साह, डेक्कोसेण तु एगवसहीए । सत्त य हवति कहमवि, अहिया कइयावि
नो ह्वि ॥ ३६९ ॥

[प्रवचनसरोद्वारे गा ५३९ ४८१ पत्रे ॥]

आयरिय १ उवन्नाए २, तवस्मि ३ सेहे ४ गिलाण ५ साहसु ६ । सँमणोअ ७ सघ ८ कुळ
९ गण १०, वेयावय हवइ टसहा ॥ ३७० ॥

[प्रवचनसरोद्वारे गा १६१ ॥]

सुहपोत्ति १ चोलपट्टो २, कँप्पतिग ५ दो निज्जिअ ७ रयहरण ८ । सथाठ ९ त्तरपट्टो १०,
दम पेहाऽणुग्गए सूरे ॥ ३७१ ॥

[प्रवचनसरोद्वारे गा ५९१ ४८३ पत्रे ॥]

१-एगान थासओ दय्य एगद्वयसिनया गुणा । अक्खम पज्जवाण तु उभओ अस्सिनया भवे ॥ १ ॥ श्रीउत्तराध्ययने
२८। (५५० पत्रे) २-उयात्तिक्कया १५० भरापत्तीनां १००० व्यतरणा ५० वफाणि परिभोग । ३-वघपि
चेक्कया वमी उरत्त सत्त जिनवपिक्क प्रतिवसति तमापि परस्परं न भाषते धर्मवार्तामपिन वृषति वीष्यामपि
चेक्कयेइ एव जिनस्सिक्क प्रतिदिग्गमन्ति न पुन पर इति । ४-समणोअ-एवमाचारिणा । साध्यादिचतुर्विधसघ -
एरुणाणियवहुगच्छामुणय । ५-कप्पतिग-द्वौ सौमै एक वर्णिक ।
दो निज्जिअ-द्वे नियये-रतीहरणम्, एव सूधमसी अन्त्यन्तरेनिपद्या, द्वितीया धाया पादप्रोच्छनरूपा ।

पडिलेहणं कुणंतो, मिहो कंहं कुणइ जणवयऋहं वा । देइ व पञ्चखाणं, वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥ ३७२ ॥ पुढवी आउक्काए तेऊ वाऊ, चणस्तइतसाणं । पडिलेहणापमत्तो, छण्हंपि विराहओ भणिओ ॥ ३७३ ॥

[प्रवचनसारोद्धारवृत्तौ १५६ पत्रे ॥]

मणगुत्तिमाइआओ, गुत्तीओ तिन्नि हुंति नायद्या । अक्कुसलनिवित्तिरुवा, कुसलपवित्तिस्सरुवा य ॥ ३७४ ॥

[प्रवचनसारोद्दारे गा. ५९५ १६७ पत्रे ॥]

लट्ठी १ तहा विलट्ठी २, दंडो य ३ विदंडओ य ४ नाली य ५ । भणियं दंडगपणगं, वरखाण-
मिणं भवे तस्स ॥ ३७५ ॥ लट्ठी आयपमाणा १, विलट्ठि चउरंगुलेण परिहीणा । दंडो वाहुपमाणो ३,
विदंडओ कक्खमित्तो उ ४ ॥ ३७६ ॥ लट्ठीए चउरंगुल समूसिया दंडपंचगे नाली ५ । नइप-
मुहजलुत्तारे, तीए थग्गिज्जए सलिलं ॥ ३७७ ॥ वैज्जइ विलट्ठीए जवणिआ विलट्ठीए कत्यइ दुवारं ।
घट्टिज्जए ओवस्सयतणयं तेणाइरक्खट्ठा ॥ ३७८ ॥ उँवदंमि उ दंडो ४, विदंडओ घिप्पए वरिस-
याले ५ । जं सो लहुओ निज्जइ, कप्पंतरिओ जलभएणं ॥ ३७९ ॥ उँवसमसेणिचउक्कं, जायइ
जीवस्स आभवं नूनं । ता पुण दो एगभवे, खवगसेणी भवे एगा ॥ ३८० ॥

[प्रवचनसारोद्दारे गाथा ६६९-६७३-४८६ पत्रे ॥]

उच्चासणं समीहइ विणयं न करेइ गवमुवहइ । वैड्ढो न दिक्खिअव्वो, जइ जाओ वासुदेवेणं ॥ ३८१ ॥

[प्रवचनसारोद्दारे गा. २२९ ॥]

मुहज्जुअं पुण तिविहं, जहण्णयं १ मज्झिमं च २ उक्कोसं ३ । जहण्णेणद्वारसगं, सयसाहस्सं च
उक्कोसं ॥ ३८२ ॥ चउदस १ दस य २ अभिण्णे, निअमा सम्मं तु सेसए भयणा । मँइ ओहि
विवज्जासे, होइ ह्म मिच्छं न सेसेसु ॥ ३८३ ॥

[बृहत्कल्पेऽपि-उ० ६]

दुँविहे गेलण्णस्मि २ अ, निमंतणे ३ दवदुल्लहे ४ असिवे ५ । ओमोदरिय ६ पओसे ७, भए ८
य गहणं अणुन्नणातं ॥ ३८४ ॥

[प्रवचनसारोद्धारवृत्तौ बृहन्नाप्ये महानिशीये ९ उद्देशकेऽपि ॥]

१-आभ्यां भेदाभ्यां वाग्गुप्ते सर्वथा वाग् निरोध १, सम्यग् भाषणं च आभ्या भेदाभ्यां वाग् गुप्ते २ रूपं प्रतिपादितं
भवति, भाषासमितौ तु वाक्प्रवृत्तिरेवेति वाग्गुप्तिभाषासमित्योर्भेदः । २-वज्जइ०-भोजनसमये सागारिकादिरक्षायै ।
३-उउ०-भिक्षाभ्रमणे प्रद्विष्टद्विपदचतुष्पदादिवारणार्थं वृद्धत्वेऽवष्टम्भार्थं च । ४-उवसम०-ते पुन उपशमथ्रेण्यौ
एकस्मिन् भवे उत्कथितो द्वे भवे । ५-दुँव्हो०-सप्ततिवर्षेभ्य परतो वर्षत्रतायुष्कापेक्षामिदम्, अन्यथा यस्मिन् काले उत्कृष्ट-
मायुस्त्वद्दशा विभज्याष्टमनवमदशमभागेषु वर्त्तमानस्य वृद्धत्वमवसेयम् । ६-जहण्णेण०-यस्याष्टादश रूप्यका नाणक-
विशेषा मूल्यं तज्जघन्यं वल्लम् एतादृशमूल्यमपि न ग्राह्यं, किन्तु अष्टादशलूप्यकेभ्योऽपि यदल्पमूल्यं तद् ग्राह्यमिति भावः ।
७-मइ०-किञ्चिन्मूल्यपूर्वधरादौ भजना सम्यक्त्वं वा स्थान्मिथ्यात्वं वा स्यादित्यर्थं, मतेरवधेश्च विपर्यासे मलज्ञाने विभङ्गज्ञाने
च मिथ्यात्वं भवति, शेषयोस्तु मन पर्यवज्ञान-केवलज्ञानयोर्मिथ्यात्वं न भवत्येव ॥ ८-दुँविहे०-गाढतरे १ आगाढतरे च २
ग्लानत्वे शय्यातरपिण्डोऽपि ग्राह्य । गाढतरे त्रीन् वारान् आहिण्यते यदि न लब्ध ग्लानप्रायोग्यं तदा शय्यातरपिण्डोऽपि
ग्राह्य । आगाढतरे पुन शीघ्रमेव शय्यातरपिण्डो ग्राह्य । गृहिणिमन्त्रणे शय्यातरनिर्वन्धे सज्जत् तं गृहीत्वा पुन प्रसन्नो
निवारणीयः ३ । दुर्लभे च क्षीरादिद्रव्ये आचार्यादीना प्रायोग्ये अन्यत्रालभ्यमाने तत्रैव गृह्णन्ति ४ । अशिवे दुष्टन्यन्तरोपद्र-
वादिके ५ । अवमौदार्ये च दुर्मिक्षेऽन्यत्र भिक्षायामलभ्यमानायाम् ६ । १० राजा प्रद्विष्टेन सर्वत्र भैक्ष्ये निवारिते प्रच्छन्न
तद्दुँव्होऽपि गृह्यते ७ । अन्यत्र तत्करादिभ्ये ८ तत्रापि स्वीकृवंति ।

सवेऽपि पदमजामे, दुग्णि य वसहाण आइमा जामा । तदो होइ गुरुण, चदत्थ सवे गुरु सुअई
॥ ३८५ ॥ आलोअणापरिणओ, सम्म सपट्ठिओ गुरुसगासे । जइ अतरावि काल, करिज्ज आराहओ
तह वि ॥ ३८६ ॥

[धीउत्तराप्ययनवृत्तावपि ॥]

अद्धमसणस्स सव्व, जणस्स कुज्जा दवरस्स दो भागो । वायपरिचारणट्ठा, छब्भाण ऊणग कुज्जा
॥ ३८७ ॥ सीप दवरस्स एगो, भैत्ते चत्तारि अहव दो पाणे । उसिणे दवरस्स दुग्णा, तिग्णि वि सेसाओ
भत्तस्स ॥ ३८८ ॥ कम्ममसरिज्जभव, सवेइ अणुसमयमेव आउत्तो । अन्नपरमि वि जोप, सज्जायमि
विसेसेण ॥ ३८९ ॥

[धीउत्तराप्ययनवृत्ती २३ अप्ययने १८ द्वारे ॥]

छट्ठमदसमदुवालसेहिं अबहुस्सुअस्स जा सोही । तत्तो बहुतरिअगुणा, हयई जिमिअस्स
नागिस्स ॥ ३९० ॥

[धीउत्तराप्ययनवृत्ती ३१ अप्ययने ॥]

ततादिवाट्टियुत्तेन, कर्त्तव्य नृत्यकोविदे । चत्वारो मुख्यगातारो, द्विगुणा समगायना ॥ ३९१ ॥
अष्टौ च गायिन्य प्रोक्ता २०, तालधारिचतुष्टयम् २४ । मार्दङ्गिकास्तु चत्वारो २८, घाशिकानां
चतुष्टयम् ३२ ॥ ३९२ ॥ एव चोत्तमवृन्द स्यात्, कर्त्तव्य च सदा बुधै । मध्यम स्यात्तद्वेन,
तद्वेन लघु स्मृतम् ॥ ३९३ ॥

[इति द्वात्रिंशद्विध नाटक लौकिकम् ॥]

उसहे भरहो १ अजिए सगरो २ मघव ३ सणकुमारो य ४ । धम्मस्स य सतिस्स य, जिणत्तरे
चक्कवट्टिदुग ॥ ३९४ ॥ सती ५ कुयू अ ६ अरो ७, अरिहता चेव चक्कवट्टी अ । अरिमहीअंतरे
पुण, हवइ सुभूमो ८ अ कोरवो ॥ ३९५ ॥ मुणिसुवप नमिम्मि य हुति दुवे पडमनाह ९ हरि-
सेण १० । नमिनेमिसु जयनामो ११, अरिट्ठपासतरे वभो १२ ॥ ३९६ ॥ अट्टेव गया मोक्कर,
१ सुभूमो वभो य २ सत्तमि पुढविं । मघव १ सणकुमारो २, सणकुमार गया सग्ग ॥ ३९७ ॥
मीमनामो १ महामीमो २, रुद्रनामा तृतीयक ३ । महारुद्रश्च ४ कालश्च ५, महाकाल ६ ख्वतु-
सुंय ७ । नरवक्त्र ८ कच्छुलाख्यो ९, वैते नारदा स्मृता ॥ ३९८ ॥ जत्य न दीसति गुरु,
पञ्चसे उट्टिऊण सुपसता । तत्थ वह जाणिज्जइ, जिणवयण अमिअसारिन्ठ ॥ ३९९ ॥ न हणइ १
न हणावेइ २, हणत नाणुनाणई ३ । न पयइ ४ न पयावेई ५, पयत नाणुजाणई ७ ॥ ४०० ॥
न निणइ ७ न निणावेई ८ निणत नाणुनाणई ९ । जो भिक्खू तस्स त होई, नवकोठीविमुद्धय
॥ ४०१ ॥ दसानानि पडेवाहु-नँ १ मीसासक २ तथा । धौद्र ३ नैयायिक ४ वैशेषिक ५ साह्य-
द मिति क्रमात् ॥ ४०२ ॥ पद्यकराण १० मभिग्गह ४, सिकरा ७ तव १२ पडिम ११ भावणा
१२ रिक्त १४ । घम्भो ४ पूया य तथा १७, गिहिउत्तरगुणइगुणनवई ८९(९१) ॥ ४०३ ॥ जो अवि-
रओ वि सपे, भत्ति तिथुन्नइ सया फाल । अविरइसम्महिट्ठी, पमावगो सावगो सोऽवि ॥ ४०४ ॥
आउट्टियूलहिंसाइ-मज्जमसाइ धायओ । जहण्णो सावओ बुत्तो, जो नमुकारधारओ ॥ ४०५ ॥
घम्मजुग्गगुणाइण्णो, छकनो धारसावओ । गिहत्थो असवायारो, सावओ होइ मज्झिमो ॥ ४०६ ॥

१-पदम०-जाप्रति गीतार्थं प्रज्ञापनादिसुत्रगुणेन जाप्रति, तृतीये यामे शुद्ध रात्रि जाप्रति शुद्धस्त्व शेते, अन्यथा
निद्रावशेन व्याख्यानादि कसु न शक्यन्ति । २-भत्ते०-अतिशीते १ मध्यमे शीतकाले तु द्वौ पानीयस्य तु त्रयो माणा
मध्यमे २ मध्यमे उष्णकाले द्वौ पानस्य त्रयो मध्यमे ३, अत्यन्ते शक्ये त्रय पानीयस्य द्वौ मध्यमे ।

उक्कोसेणं तु सद्धो उ, सच्चित्ताहारवज्रओ । एगासणभोई य, वंभयारी तद्देव य ॥ ४०७ ॥ अह न
सक्केइ काउं, एगभु[भ]त्तं सया पुणो । दिवसत्स अट्टमे भागे, तओ भुंजे सुसावओ ॥ ४०८ ॥ जिण-
भवणं १ जिणविवं २, जिणभत्तो राय ३ जिणमओ मंती ४ । साइसया आचरिया ५, पंचुज्जोआ
जिणमंयंमि ॥ ४०९ ॥ आवीइ १ ओहि २ अंतिअ ३, वलायमरणं च ४ विसट्टमरणं च ५ । अतो-
सहं ६ तच्चभव ७, वालं ८ तह पंडिअं ९ सीसं १० ॥ ४१० ॥ छउमत्थमरण ११ केवलि १२
विहाणसं १३ गिद्धपिट्टमरणं च १४ । मरणं भत्त १५ (भत्तपच्चक्खणं), इंगिणि १६, पाओव-
गमणं च १७ ॥ ४११ ॥ पण्णा १ ऽण्णाण २ परीसह, नाणावरणंमि हुंति दो चेव । इक्को अ
अंतराप, अलामपरीसहो चेव ॥ ४१२ ॥ अरई १ अचेव २ इत्थी ३, निसीहिआ ४ जायणा य ५
अक्कोसा ६ । सक्कारपुरक्कारे ७, चरित्तमोहंमि सत्तेव ॥ ४१३ ॥ दंसणमोहे दंसण, परीसहो निअमया
हवइ इक्को । सेसा परीसहा खलु, इक्कारस वेअणिज्जंमि ॥ ४१४ ॥ वावीसं वायरसंपराइ चउदस
य सुहुमरागंमि । छउमत्थवीअरागे, चउदस इक्कारस जिणंमि ॥ ४१५ ॥ वीस उक्कोसपप, वट्टंति
जहण्णओ अइक्कं च । सी-उसिण-चरिअ-निसीहिआ य जुगवं न वट्टंति ॥ ४१६ ॥ ईसीपच्चा-
राए, उवरिं खलु जोअणस्स जो कोसो । कोसस्स य छच्चाए, सिद्धाणोगाहणा भणिआ ॥ ४१७ ॥
तिण्णेव धणुसयाइं, धणुत्तित्तीसं च धणुत्तिभागो अ । इअ एसा उक्कोसा, सिद्धाणोगाहणा भणिआ ॥ ४१८ ॥
सिज्जंति जत्तिया खलु, इहहिं ववहाररासिमज्जाओ । इंति अणाइवणत्सइ-मज्जाओ तत्तिया चेव
॥ ४१९ ॥ चउहा अणंतजीवा, उवरिं उवरिं अणंतगुणिआओ । अभविअ १ सिद्धा २ भविआ ३,
जाईभवा ४ चउत्थाओ ॥ ४२० ॥ जमालि १ तीसगुत्तो २, आसाढो ३ आत्ममित्त ४ गंगोअ ५ ।
रंहगुमित्त ६ गुत्त ७ माहिल ८, अट्टेव य निहवा भणिआ ॥ ४२१ ॥ सेणिअ १ सुपास २ पुट्टिल ३,
सीखो ४ संयगो ५ उदाइ ६ पेढालो ७ । सुलसा ८ रेवइजीवो ९, नव जीवा वद्धमाणस्स ॥ ४२२ ॥
गयकुंमि १ संखमज्जे २, मच्छमुहे ३ वंसि ४ वराहडाढासु ५ । सप्पसिरे ६ तह मेहे ७, सिप्पउरे
८ सुत्तिया हुंति ॥ ३२३ ॥

॥ जहिं नत्थि सारणा वारणा य पडिचोअणा य गच्छम्मि । सो अ अगच्छो गच्छो मोत्तवो
संजमत्थीहिं ॥ ४२४ ॥

[इति स्थानाद्भवृत्तां ॥]

उववाएण सायं १, नेरइओ देवकम्मणा वावि । अज्जवसाणनिमित्तं ३, अहवा कम्मणु-
भावेणं ॥ ४२५ ॥

[इति जीवाभिगमसूत्रे, एवमेव श्रीवसुदेवहिण्डावपि ॥]

नेरइआणुप्पाओ, उक्कोसं पंचजोअणसयाइं । दुक्खेणभिहुआणं, वेअणसहसंपगाढाणं ॥ ४२६ ॥

[जीवाभिगमवृत्तो ॥]

तेआकम्मगसरीरा, सुहुमसरीरा य जे अपज्जत्ता । जीवाण मुक्कमेत्ता, वचंति सहस्सतो भेअं ॥ ४२७ ॥

[जीवाभिगमे ॥]

१-मरण द्वेषा-सविचारम् अविचार च, सहविचारेण चेष्टया वर्तते यत्सविचार, तद्विपरीतमविचारम्, तत्र सविचार
द्वेषा-भक्तप्रत्याख्यानम् इगिनीमरणं च । इगिनीमरणं च विविना प्रपद्य शुद्धस्थण्डिलस्थ एतन्नयेव क्लृप्तचतुर्विधाहारप्रत्याख्यान
स्वण्डिलस्यान्तं छायात उष्णे उष्णावस्थाया स्वयं सकामति, तथा चाह-इंगियमरणविहाणं, आपच्चज्जं तु
वेयणं दाउं । संलेहणं च काउं, जहा समाही जहा कालं ॥ १ ॥ पच्चक्खन्ति आहारं, चउद्विहं
नियमं गुरुसगासे । इंगियदेसंमि तहा, चिट्ठंमि हु इंगियं कुणइ ॥ २ ॥ इंगितां-तत्कालयोग्या चेष्टाम् ।
२-तिण्णेव-३३३ वनुप, १ हाथ, ८ अङ्गुलं सिद्धस्यावगाहनामान पञ्चगतवनुर्देहमान यदा त्रिभागोनं क्रियते तदा
एतद्भवति त्रिभागमान १६६ धनुप, २ हाथ, अङ्गुल १६ । ३-एतस्या व्याख्यानं जघन्यत उत्पातो गव्यूतमात्रम्, एतच्च
संप्रदायादवसीयते ॥

यथा लोहं सुवर्णत्व, प्राप्नोत्यौषधयोगतः । आत्मध्यानात्तयैवात्मा, परमात्मत्वमभुवे ॥ ४२८ ॥

[इति सहाचारवृत्तौ ॥]

दिसि-पवण-नाम-सूरिय-छायाएँ पमज्जिऊण तिकसुतो । अस्तोगाहोत्ति काऊण वोसिरे आयमेजा वा ॥ ४२९ ॥

उत्तरपुत्रा पुत्रा, जन्माएँ निसिअरा अभिवडति । घाणाऽरिसा य पवणे, सूरिअगामे अवण्णो व ॥ ४३० ॥

[इति श्रीभोषनियुक्तिसूत्रे १२५-पत्रे पञ्चवस्तुक सूत्रे २५७ पत्रे ॥]

इदानीं 'छायाए'ति व्याख्यानपञ्चाह-

ससत्तगहणी पुण छायाए निगगायाय वोसिरई । छायाऽसइ उण्हमि वि, वोसिरिअ मुहुत्तग चिट्ठे ४३१

[इति श्रीभोषनियुक्ति सूत्रे १२५ पत्रे पञ्चवस्तुक सूत्रे २५७ पत्रे ॥]

चउद्धिअणता जीवा, उवरिं उवरिं अणतगुणणाए । अभविअ १ सिद्धा २ भविआ ३, जाई भविआ ४ चउत्था य ॥ ४३२ ॥ सिद्धा सिद्धिं पत्ता १, सेसा तिण्णेव सयललोगमि । किंतु अभवा १ जाईभवा २, न कयाइ सिज्जति ॥ ४३३ ॥

[इति गाथाद्वय जीवाभिगमे ॥]

अँवलविऊण कज्ज, ज किंचिवि आयरति गीअत्था । योवाऽवराहवहुगुण, सत्तेसिं व पमाणति ॥ ४३४ ॥

[इति सहाचारवृत्तौ ३९४ पत्रे ॥]

तन्हा सवपयत्तेण, जो नमुकारधारओ । सावओ सोऽवि दट्ठवो, जहा परमवधवो ॥ ४३५ ॥

[सहाचारवृत्तौ ३७१ पत्रे ॥]

जो जीवइ वरिससय, दिणे दिणे माणगमि एगमि । छप्पन्न हुति मूढा, चालीसा चेव सेईओ ॥ ४३६ ॥

[उपदेशरसालग्रन्थे ३९४ पत्रे ॥]

वारावलादिहु १-रयेन्दुवीर्यां दिवाकर सक्रममाण उक्त २ । मद्वाश्च सर्वेऽपि बलेन भानो, - भवन्त्य ३-शस्ता अपि सुप्रशस्ता ॥ ४३७ ॥

[रत्नमालायाम् ॥]

बैलक्षपश्चादिगते हिमाशौ, शुभे शुभ पक्षमुदाहरन्ति १ । सितेतरादावशुभे शुभ च २, पश्चाव- निष्टौ भवतोऽन्वया तौ ॥ ४३८ ॥ राशौ राशौ द्वादशेन्दोरवस्था, प्रोक्ता कैश्चित्सूरिभिः । प्रोपि- तायाः । यात्राजन्मोद्वाहकालेषु नून, सञ्ज्ञा तुल्य तत्फल चिन्तनीयम् ॥ ४३९ ॥

सार्तां मामासि-

१-'दिसि०'-उत्तरार्धं पूर्वायां च दिसि वृष्ट न दातव्य लोकरिरोधात्, तयैव पवनप्राप्तसूर्याणा च वृष्ट दत्ता न स्युन्वजनीय लोकरिरोधादेव तथा छायायां प्रमार्पित्वा 'विकसुतो' कारभय निर्लेपन वा पानकेन एवमेव कुर्यात् । राशौ दक्षिणार्धं दिसा उत्तरार्धं दिशि देवा प्रयाति इति लोके श्रुति ॥ २-उत्तरपूर्वां च लोके पूज्या सर्वप्रामो वृष्टदानेऽवर्णवाद् । ३ संस्रकपद्मे कृमिसंलपोदर इत्यर्थे । यदा असौ साधुर्भवेत् तदा वृष्टच्छायायां निर्गतायां व्यत्सृजति । अथ छाया न भवति तत्र च स्युन्वज्य सहूर्तमान तिष्ठेत् येन ते कृमय स्वयमेव परिणमते ॥ ४-अवलम्ब्य-आभिल धार्य यत्किञ्चिदाच रन्ति केवन्ते गौतार्यां भागमरिद्- स्तोत्रपरपथ बहुयुग मासकल्पविहारवर्षवैवां जिनमनानुसारिणां तत्रमाणमेव उत्तरार्धपवादरू- पत्वादागमस्येति स्यादर्थ ॥ ४३४ ॥ इति पञ्चकवस्तुकवृत्तौ ॥ ५-यल्लह०-पुत्रप्रतिपत् । ६-सिते० वृष्णप्रतिपत् । ७-यदि वृष्णप्रतिपदि चन्द्रोऽग्रमद्यरा च पशोऽप्यनिष्ट, अथ वृष्णप्रतिपदि यदि चन्द्र द्युमसदा च पशोऽनिष्ट ।

प्रवास १ नष्टाख्य २ मृता ३ जयाख्या ४, हास्यं ५ रति ६ क्रीडित ७ सुप्त ८ भुक्ताः ९ ।
ज्वराह्वया १० कम्पित ११ सुस्थिते च १२, द्विपट्टसंख्या हिमगोरऽवस्था ॥ ४४० ॥

श्रीरत्नमालायाम्-

सम्मत्तंमि अ लद्धे, पल्लिअपुहत्तेण सावओ हुज्जा । चरणोवसमखयाणं, सागरसंखंतरा होंति ॥ ४४१ ॥
[पञ्चाशकवृत्तौ ॥]

जम्हा दंसणनाणा, संपुण्णफलं न दिति पत्तेयं । चारित्तजुआ दिति, विसेस एतेण चारित्तं ॥ ४४२ ॥
[इति संस्तरकवृत्तौ ॥]

सिअकमल १ कलस २ सत्थिअ ३, नंदावत्त ४ वरमल्ल ५ दामाणं ६ । तेसिंपि मंगलाणं,
संथारो मंगलं अहिअं ॥ ४४३ ॥

[इति संस्तरकप्रकीर्णके ५४ पत्रे ॥]

जं वद्धमसंखिज्जाहिं असुहं भवसयसहस्सकोडीहिं । एगसमएण विहणइ, संथारं आरुहंतो अ ॥ ४४४ ॥
[इति संस्तरक प्रकीर्णके गा० १०८ ६० पत्रे ॥]

भौवजिणप्पमुहाण वि, सवेसिं जइवि वंदणा तह वि । जिणचेइआणं पुरओ, कीरइ चिइवंदणा
तेण ॥ ४४५ ॥ जिणविंवाभावे पुण, ठवणागुरुसक्खिया वि कीरंती । चिइवंदणञ्चिअ इमा,
तत्थवि परमिद्धि ठवणाओ ॥ ४४६ ॥ अहवा जत्थ व तत्थ व, पुरओ परिकप्पिऊण जिणविम्बं ।
कीरइ बुहेहिं एसा, नेआ चिइवंदणा जम्हा ॥ ४४७ ॥

[इति गाथात्रयं बृहत्कल्पभाष्योक्तं श्रीसहचारवृत्तौ १३ पत्रे ॥]

ऊँस्सग्गओ नेव सुअं पमाणं, न वाऽपमाणं कुसला वयंति । अंधो य पंगुं वहते स चावि, कहेति
दोण्हं पि हिआय पंथं ॥ ४४८ ॥

[बृहत्कल्पभाष्ये उ० २ ॥]

पंचण्ह मोहसण्णा १, हेऊ सन्ना वेदिआईणं । सुरनारयगन्धुम्भव-जीवाणं कालिगी सण्णा
॥ ४४९ ॥ छउमत्थाणं सन्ना, सम्मदिट्ठीण होइ सुअणाणं । भइवावारविमुक्का, सण्णारहिआ य
केवलिणो ॥ ४५० ॥ जत्तिअतुमित्ता वारा, तु वंधते मुंचते जत्तिआ वारा । जत्ति अक्खर लिहई,
तत्तिअ लहुगा य आवज्जे ॥ ४५१ ॥

[बृहत्कल्पभाष्ये ॥ उ० ३]

१-अश्विन्यादीनीन्दुभुक्तानि भानि पष्टि (६०) हृतानि स्वभुक्तनाडीसंयुक्तं द्विघ्नं नन्द ९ हत त्रिधा अशादि त्रिंशद्भागस-
राद्यादि जायते चेष्टकालक । उदयादिष्टकालस्तु षट्गुणस्तत्र योजयेत् ॥ २-यदा चन्द्रो मेपरागौ स्यात्तदा प्रवासाद्गणनीयं,
यदा वृपरागौ तदा नष्टाद्गणनीयम् । एवं मिथुनादिराशिषु मृतादिभ्यो गणनीयम् । ३-यावत्या हि कर्मस्थितेः सम्यक्त्वं लभते
तस्या पत्न्योपमष्टयक्त्वे क्षीणे देशविरत श्रावको भवेत् ततः सरयातेषु सागरेषु क्षीणेषु सर्वविरतिचरणं लभ्यते ॥
४-ननु भावार्हदादीनामप्यत्र वन्दना क्रियते तत्कथं चैलवन्दना ? इत्युच्यते-सखं प्रायेणाऽस्याथैत्याग्रे करणात् तथा च
बृहद्भाग्यं तथाहि भावेति । ५-'ठवणा जिणाण' इति पाठान्तरम् । ६-उत्सर्गतं = सामान्येन श्रुतं = सूत्रं नैव प्रमाणं न वा
अप्रमाणं किन्तु पूर्वापराऽविरुद्धवृद्धसप्रदायागतेन अर्थेन युक्तं प्रमाणम्, अन्यथा पुनरप्रमाणमित्येव कुशला = तीर्थङ्करगणधरा
वदन्ति, तथाहि-यथा किल कश्चिदन्वो देशान्तर गन्तुमना स्वयं मार्गमपश्यन् पशु गन्तुमशक्तं चक्षुष्मत्तया स्कन्धे निवेश्य
वहति, स चापि पशुर्द्वयोरपि = आत्मनस्तस्य हिताय = गर्ताप्रपाताद्युपद्रवरक्षणाय पन्थानं = मार्गम् तं कथयति एवं परमार्थेनाऽ-
प्रबोधितं यदन्धस्थानीयं सूत्रं, तद यदा पशुस्थानीयमर्थमात्मन उपरि कृतं वहति तदा सोऽप्यर्थः सूत्रनिश्रया गच्छन् सम्य-
ग्विषयविभागदर्शितया निष्प्रलपायं सुकिमार्गमुपदिशतीत्यतः = अर्थमव्यपेक्षमेव सूत्रं प्रमाणमिति ॥

विती उ सुवर्णस, चारम अद्ध च सयमहस्ता । ठावइअ चिअ कोडी, पीईवाण तु चकीण
॥ ४५२ ॥ एत चेव पमाण, नवर रयय तु केसवा द्विति । मडलिआण सहस्ता, विती पीई
सयसहस्ता ॥ ४५३ ॥ भत्तिविमजाणुस्व, अत्रे वि अ द्विति इममाईया । सोऊण जिणागमण,
निउत्तमनिओइएसु वा ॥ ४५४ ॥

[श्रीवृहत्कल्पमाप्ये गा० १२०७-९ ३७४ पत्रे ॥]

इकेण सुद्ध अच्छ, निलेण इअरेहिं दोहिं उववासो । नवकारसदिएअहिं, पणयालीसेहिं
उववासो ॥ ४५५ ॥

[योगविधौ ॥]

गच्छमि एस कप्पो, वासावासे तहेव उहुनद्धे । गाम-नगर-निगमेसु, अइसेसी ठावए सट्ठी ॥ ४५६ ॥
किं कारण चमठणा, दव्वल्लपओ उगमो वि य न सुद्धे । गच्छमि नियय कज्ज, आयरिय १ गिलाण २
पाहुणए ३ ॥ ४५७ ॥

[श्रीवृहत्कल्प माप्ये गा० १५८३-४ ॥]

रयणियर १ दिणयरण २, नक्खत्ताण ३ महाग्गाहाण च ४ । चारविसेसेण भवे, सुद्धुक्खविही
मणुत्ताण ॥ ४५८ ॥

[जीवामिगमसूत्रे ३३७ पत्रे वृत्तं च सूरप्रज्ञसौ २-३ प्राच्यते च ॥]

पैडिणीअ १ तेण २ सावय ३, उ-मामग ४ गोग ५ साण ६ अणप्पज्जे ७ । सीअ च दुरधिआस
८, दीहा ९ पक्खीव १० सागरिए ११ ॥ ४५९ ॥ अहिं १ सावय २ पच्चतियसु ३, गुरुगा सेसेसु
हुति चउलहुगा । तेणे गुरुगा, लहुगा आणाइ विराहणा दुविहा ॥ ४६० ॥

[वृहत्कल्पमाप्यवृत्तौ गा० २३५८-६० ६६८ पत्रे ॥]

दढकवाडे मयवरे अ सहरणया सरीरत्थे । भासाजोगनिरोहे, सेलेसी सिद्धणा चेव ॥ ४६१ ॥

[विचारग्रन्थे ॥]

वैरणसविग्गाण, आहारादीहिं तप्पय जो ङ । नीआवित्तणुतपी, तप्पक्खिअ वण्णवाई अ ॥ ४६२ ॥

[-यवहारमाप्ये ३ ङरेचके ॥]

१-'अइसेमी'ति, अतिशोभां श्लिष्यमयुद्रव्याणि यत्र प्राप्य ते तानि कुर्वन्ति अतिशोभानि 'सद्धि'ति दानप्रदा
यन्ति एवविधानि इत्यनि स्थापयेत् आवाय । २-किमित्थाह—'किं कारण'मित्यादि । कुत्स्थापना नियते स्थापनाकुलेषु एक
शीतार्थसंपादक मुक्त्वा येनान्ये साधवो न प्रविशन्ति ॥ ४-आह—किं तच्छरण येन द्वारे पिधीयते ? उच्यते—'पडिणीये'-
त्यादि, उद्घाटिते द्वारे प्रलनीक प्रविश्य हननमपद्रावण वा कुर्यात् १ स्तेना—शरीरस्तेना उपपिक्षेना वा प्रविशेयु
२ एव श्वपदा विह्वलान्नादय ३, उद्गमनश्च—पारदारिका ४ गौबलीवर्दे ५ श्वा—प्रतीत ६ एते वा प्रविशेयु । 'अणप
प्पजेति—अनामवग—श्लिष्यविधादि स द्वारेऽपिहिते सति निगच्छेत् ७, शीतवा दुरधिसह हिमकणानुपक निपतेत् ८, शीघ्रा
वा—मरा ९, पक्षिणे वा श्वकृशोतप्रभृताय विभेयु १०, सागारिको वा कज्जितप्रियमुद्गादितद्वारं दृष्ट्वा तत्र प्रविश्य शपीत
वा विभ्रान वा श्वीयान् ११ । ४-अहिं० अदिपु १ श्वपदेयु २ प्रार्थियु ३ वा प्रलनीकषु प्रत्येक चकारो गुरुगा, शोषेयु
उद्गमनश्चरितु सागारिकान्द्वेषु चतुर्भुज, स्तेनयु गुरुध लघुश्वध भवति तत्र शरीरभ्येनपु चतुर्गुरुध उपपिक्षेनपु
चतुर्भुज । अज्ञादवध दोषा । विपथनाथ सयम विपथना—आमविपथना द्विविधा तत्र सयमविपथना—स्तेनैश्चरणावपद्रव ।
एतद्रहस्यमिमेवेन वा कुर्वन्ति सागारिकद्वयो वा तदाऽशोकोत्कल्या प्रविशण सन्तो नियदन शयनादि कुर्वाणा बहूना
प्रजानीगानामुपमदन क्यु आमविपथना तु प्रलनीकदिभि परिस्तुत् ७ । ५-शरणं० शरणेषु=अधियाऽन्नादर्शोदिपु
शुष्पिमनां सुखवदानमाहारादिभिर्नार्पित प्रत्यर्पणं कृतवान्, तथा य सविमाना नीचर्तुतैरतन यस्य स तथा, किमुक
भवति ? स तान् कन्दत न पुनश्चापयति तथा अकल्प किमपि प्रतिष्यन् अनुपधात् 'हा दुष्ट एत हा दुष्ट कारित'
मित्यदिरूपेण तदति सन्तापमनुभवतीत्येवधीत्येऽनुतापी, तथा तथा सविमानां पपस्यत्स, तत्र भवत्यात्मिकं सुख

विहवाणुसारो पुणं, सट्टेणं संजयाण दायव्वं । गुणविरहिआणमुच्चिअं, सगुणाण पुणो सुभ-
त्तीए ॥ ४६३ ॥

[जीवानुशासनसूत्रे ६ अधिकारे २७ पत्रे ॥]

तित्याइसेससंजय १, देवी वेमाणियाण २ समणीओ ३ । भवणवइवाणमंतर २, जोइसियाणं
च देवीओ ॥ ४६४ ॥ भवणवई १ जोइसिया २, बोधवा वाणमंतरसुरा य ३ । वेमाणिया य १
मणुया २, पयाहिणं जं च निस्साए ॥ ४६५ ॥ केवलिणो तिउण जिणं, तित्यपणामं च मग्गओ
तस्स । मणमाईवि णमंता, वयंति सट्टाण सट्टाणं ॥ ४६६ ॥ इंतं महड्डिअं पणिवयंति ठियमवि वयंति
पणमंता । नवि जंतणा न विकहा, न परोप्परमच्छरो न भयं ॥ ४६७ ॥ विरओ जो पुण जाणं,
कुणति १ अजाणं च अप्पमत्तो व २ । तत्थवि अज्झत्यसमा, संजायइ निज्जरा न चओ ॥ ४६८ ॥
अस्सायमाइआओ, जावि अ असुहा हवंति पगडीओ । निवरससलवोव पए, न होंति ता असुहया
तरस ॥ ४६९ ॥

[इदं (४६४-४६९) गायपङ्क श्रीवृहत्कल्पभाष्ये आवश्यकनिर्युक्ति-वृत्तौ २३२ पत्रे ॥]

इअ वीसं वावन्नं, च जिणहरे गिरिसिरेसु संयुणिमो । इंदाणरायहाणिसु, वत्तीसं सोलसयं वंदे ॥ ४७० ॥

[नन्दीश्वरस्तोत्रे ॥]

चत्वारोऽञ्जनशैलगा दधिमुखोत्तंसश्रियः षोडश, द्वात्रिंशच्च निदेशतो रतिकरेष्वेवं द्विपञ्चाशतम् ।
इन्द्राणां वरराजधान्युपगता द्वात्रिंशतोऽमूश्वतु, -र्युक्ताशीतिमहं जिनेन्द्रनिलयान् वन्दे सु नन्दीश्वरे ॥ ४७१ ॥

[नन्दीश्वरस्तोत्रवृत्तौ ॥]

एगारस अंगाइं, कालिअसुत्तं [वयंति] भणंति तत्तन्नू । दिट्ठीवाओ सबो, न होइ कालियसुअं
निअमा ॥ ४७२ ॥ कालिअसुअस्स कालो, भणिअं अज्झयणगुणणविसयाइं । दिवसस्स पढम-
पच्छिम-जामा एवं तिजामाए ॥ ४७३ ॥

[इदं गायपङ्क यतिदिनचर्यायां ८४ पृ० ॥]

एसा जिणाण आणा, खिंत्ताईआ य कम्मणो भणिआ । उदयाइकारणं जं, तम्हा सत्तय जइ-
अवं ॥ ४७४ ॥

[श्रीसूर्यप्रज्ञसिद्धे पञ्चवस्तुके जीवाभिगमवृत्तौ ३३९ पत्रे च ॥]

प्रभास्वं १ ब्रह्महत्या च २, दरिद्रस्य च यद्धनम् ३ । गुरुपत्नी ४ देवद्रव्यं ५, स्वर्गस्वमपि
पातयेत् ॥ ४७५ ॥

[इति श्राद्धविधौ ७७ पत्रे ॥]

विप्रपादिक इत्यर्थः, तथा वर्णवादी श्लाघाकारी विहितानाम् । तत किम् ? इत्याह—“पावस्स उच्चियस्स वि
पडिसाउणे”—त्यादि, एवममुना प्रकारेण सविभ्रतर्पणादिना अद्यापि पार्श्वस्थेन सतोपनीतं तथापि तस्य पापस्य परिगातनभारं
करोति, इत्यादि व्यवहारभाष्यवृत्तौ ३ उद्देशके ॥ १-विहवा० विभवानुसारतो निज द्रव्यौचित्येन पुनः श्राद्धेन
भावकेन संयतेभ्य साधुभ्यो दातव्यं देयं किमविशेषेण ? इत्याह-गुणविरहितानां ज्ञानादिगुणशून्यानामुचितं योग्यं, सगुणानां
पुनर्विदिष्टज्ञानादिव्रता सुभक्त्या आन्तरप्रीत्येति गायार्थं ॥ २-खित्ता० शुभक्षेत्रे शुभा दिशमभिसुखीकृत्य शुभतिथिनक्षत्र-
सुहृत्तार्थं प्रमाजनव्रतारोपणादि कर्तव्यं नान्यथा । अपि च क्षेत्राद्योऽपि कर्मणामुदयादिकारणं भगवद्विरुक्ता, ततोऽशुभद्रव्य-
क्षेत्रादिसामग्रीं प्राप्य कदाचिदशुभवेद्यानि कर्माणि विपाकं गत्वा उदयामासादयेयुः, तद्दये च गृहीतव्रतमहादिदोषप्रसङ्गः ।
शुभद्रव्यक्षेत्रादिसामग्र्यां तु प्रायो नाशुभकर्मविपाकसंभव इति निर्विघ्नं सामायिकादिपालनं नियमादवश्यं छद्मस्थेन सर्वत्र
शुभक्षेत्रार्थं यतितव्यम् ॥ इति श्रीसूर्यप्रज्ञसिद्धौ ॥ ३ साधारणद्रव्यम्-इत्यर्थं ॥

आयरिण गच्छमि अ, कुलगणसधे अ चेइअविणासे । आलोइअपडिकतो, सुद्धो अ निजरा विजला ॥ ४७६ ॥

[श्रीगृहसूक्तभाष्ये ३ खण्डे गा० २९६३-८३७ पत्रे ॥]

मुल्ल विणा जिणाण, उवगरण चमरछत्तकलसाई । जो वावरेइ मूढो, निअकजे सो हवइ दुहियो ॥ ४७७ ॥ नीअगोज रवे कम्म, उच्चगोअ निअघई [ए] । सिटिल कम्मगठिं तु, वृदणेण नरो करे ॥ ४७८ ॥

[इद गाथादय धीरकरोस्तरसुरिकृते आद्विविधप्रकरणे ७९ पत्रे ॥]

गुरुवदणमवि तिविह, त फिट्टा १ छोम २ वारसावत्त ३ । सिरिनमणाइसु पढम १, पुण्णसमा-समणदुगि धीअ ॥ ४७९ ॥ तइअं तु वदणदुगे ३, नमिहो आइम सयलसधे । धीअ तु दसणेण य, पयट्टिआण च तइअ तु ॥ ४८० ॥

[इद गाथादय भाष्यसत्क आद्विविधप्रकरणे ॥]

अविसहणाऽतुरिअगई, अणाणुवत्ती अ अवि गुरूणपि । राणमित्तपीइरोसा, निहिचच्छलया य सचइआ ॥ ४८१ ॥

[गृहसूक्तभाष्ये ॥]

सपाइमरयरेणू, पमज्जणट्टा वयति मुहपोत्तिं । नास मुह च धघइ, तीए वसहिं पमज्जतो ॥ ४८२ ॥

[इति एजापद्याशके ॥]

आययण निस्सकड, पवविहीसु च कारणे गमण । इअराभावे तस्सत्ति भाववुद्धित्यमोसरण ॥ ४८३ ॥ पूरिति समोन्नरण, अज्जासइ निस्सचेइएसु पि । इहरा लोणविरुद्ध, सद्धामगो असद्वाण ॥ ४८४ ॥

[इति चैत्यवदनकुलकट्टी ४९ पत्रे ॥]

वित्थयरो चउनाणी, मुरमहिओ सिज्झियधे य धुवन्मि । अणिगूहिअवलविरिओ, सवत्थामेण उज्जमई ॥ ४८५ ॥

[इति तपागच्छीयधीरकरोस्तरसुरिकृते धीमाचारप्रदीपे ॥]

पौणीहि च ससत्ता, पडिलेहा होइ केवलीण तु । ससत्तमसंसत्ता, छउमत्थ्याण तु पडिलेहा ॥ ४८६ ॥ असत्तइ धुवमेय, अपेहिअ तेण पुत्र पडिलेहा । पडिलेहिअमि ससत्तइति ससत्तामेव जिणा ॥ ४८७ ॥

[श्रीशोचनित्तुंकी १०५ पत्रे ॥]

१-आयरिण० आचार्यस्य वा गच्छस्य वा कुलस्य वा चैत्यस्य वा विनाशे उपस्थिते सति सहस्रशोधिप्रभृतिना स्ववीर्य महापदता तथा पराक्रमशील यथा तेषामाचार्यादीनां विनाशो नोपजायते, स च तथा पराक्रममाणो यद्यपराधमापन्नस्तथापि अलोचितप्रतिक्रमणं शुद्धं शुद्धमहमालेयं मिथ्यादुष्कृतदानमापेणैवातीतं शुद्ध इति भावः, कुत ? इत्याह—यद्यस्मात्परराणादिपुत्रा मरुती निर्जैत कर्मक्षयलक्षणा तस्य भवति पुण्यलम्बनमवलम्ब्य भगवदाज्ञया प्रवर्तमानत्वादिति ॥ २-मुल्ल० देवसूक्तं च इन्द्रीमेयोदि शुष्णमपि सङ्घसापि घाडेन न चायम् । केचिद्वाहु—पुण्यलम्बने यदि देवसूक्त्या व्यापार्यते तदा पूर्वं बहुनिष्कृत्यो देवस्य मोत्यो यन—'मुल्ल०'मित्यादि । ३-अविसहणा० संवसाधूनामवर्णवादमाह—अहो अमी साधवोऽविपहणा न कम्प्यापि परामव सह त अपि तु स्वपक्षपरपण्यमाने संजाते सति देशान्तरे गच्छति । 'नुरियगई'ति अकारप्रच्छेयाद्वरितगतयः मायया होद्यवत्रनाय मन्दगामिन अननुवर्तितं प्रहृत्स्वैव निपुत्रा शुष्णमपि महतामपि आस्तां सामान्यलोक्स इत्यपि च द्यार्य । द्वितीयोऽपि शब्द संभावनायां, समाम्यन्ते एवविधा अपि साधव इति क्षणमात्रप्रीतिरोपा तदैव शशास्त्रद्वैव च गुण अनवस्थितचित्ता इत्यर्थः, गृहिवन्सत्तसैस्त्रैधाटुवचनैरात्मानं गृह्यन्स रोचयन्ति अतिसंचयित सुगदुवन्नकम्पत्यादिसंभ्र-दधीन् छोम बहुला इति भावः । इति गृहसूक्तभाष्ये ॥ ४-अनयोऽतिस्तत्र—केवटिनं प्रत्युपेक्षणां प्रतिपादयन्माह—'आययण०'मित्यदि । ५-'पौणीहि'प्राणिभिः संसक्तं यस्म्य तद्विषया प्रत्युपेक्षणा भवति केवटिनां । संसत्तद्व्यविषया १ अंसत्तद्व्यविषया २ च छापस्थानं प्रत्युपेक्षणा भवति । ६-अन्येन वा कारणेन केवटिनं प्रत्युपेक्षणां कुर्वन्तीति दर्शयन्—'संचियद्— संसज्जयते प्राणिभिः सह संसज्जगमुपप्राप्ति'धुवम्'—अवश्यमेतद् वप्रादि अप्रत्युपेक्षितं सन् तेन पूवमेव

भुंजइ अणंतरेणं, दुन्नि उ वेलाउ जो निओगेणं । सो पावे उववासा, अट्टावीसं तु मासेणं ॥४८८॥
दसवरिससहस्साउं, भुंजइ जो अण्णदेवचाभत्तो । पलिओवमेकोडी पुण, होइ ठिई जिणवरतवेणं ॥४८९॥

[इदं गाथाद्वयं श्रीपद्मचरित्रे श्राद्धविधिकामुखां श्रीरत्नशेखरसूरिणाऽपि उक्तं तथा ॥]

संघाढगस्स गुच्छो, अणेगजीवो उ होइ नायवो । पत्ता पत्तेअजीधा, दुन्नि अ जीवा फले
भणिआ ॥ ४९० ॥

[श्रीप्रज्ञापनायां प्रथमे पदे, वनस्पतिसप्ततिकायां च ॥]

महु १ मक्खण २ संघाढग ३ गोरसजं विदल ४ जाणिअमणंतं ५ । अण्णायफल ६ वयंगण ७,
पंचुवरिमवि ८ न भुंजंति ॥ ४९१ ॥

[श्रीजिनवज्रभसूरिकृतश्राद्धकुलके श्रावकाणामभक्ष्यनियमाधिकारे श्रीचन्द्राचार्यकृतयोगविधावपि]

जं नाण १ दंसण २ चरित्त ३ भावओ तद्विवक्खभावाओ । भवभावओ य तारेइ, तेण तं
भावओ तित्थं ॥ ४९२ ॥ दाहोवसमादिसु वा, जं तिसु थिय महचदंसणाईसुं । तो तित्थं संघो बिअ,
उभयं च विसेसणविसेसं ॥ ४९३ ॥ अह्वा सम्मदंसण-नाणचरित्ताइं तिन्नि जस्सऽस्था । तं तित्थं-
पुवोदिअमिहमत्यो वत्थुपज्जाओ ॥ ४९४ ॥

[इदं गाथात्रयं श्रीस्थानाङ्गटीकायां प्रथमाध्ययने ३३ पत्रे ॥]

उवसामिगसेढिगयस्स होइ उवसामिअं तु सम्मत्तं । जो वा अकयतिपुंजो, अखविअमिच्छो लहइ
सम्मं ॥ ४९५ ॥ खीणंमि उदिण्णंमि, अणुदिज्जंते असेसमिच्छत्ते । अंतोमुहुत्तकालं उवसमसम्मं
लहइ जीवो ॥ ४९६ ॥

[इति श्रीस्थानाङ्गवृत्तौ २ स्थाने ४८ पत्रे]

संकप्पो संरंभो १ परितावकरो भवे समारंभो । आरंभो उह्वओ ३, सुद्धनयाणं तु सव्वेसिं ॥४९७॥

[स्थानाङ्गे ३ स्थाने १ उद्देशके वृत्तौ १०८ पत्रे ॥]

सुअनाणम्मि अभत्ती १ लोगविरुद्धं २ पमत्तल्लणा य ३ । विज्जासाहणवेगुण्ण ४ धम्मया ५
एव मा कुणसु ॥ ४९८ ॥

[स्थानाङ्गवृत्तौ ४ स्थाने २ उद्देशके २१४ पत्रे ॥]

जिनाः-केवलिन. प्रत्युपेक्षणां कुर्वन्ति, यदा तत् पुनरेवं सविद्यते इदमिदानीं वज्रादिकं प्रत्युपेक्षितमपि उपभोगकाले संसज्यते
तदा संसक्तमेव जिना-केवलिन. प्रत्युपेक्षन्ते न त्वनागतमेव पलिमन्यदोपादिति ॥ १-भुंजइ० भोजनताम्बूलजलव्या-
पारणादौ हि प्रत्यहं प्रत्यहं घटीद्वय-घटीद्वय-सभवे मासे एकोनत्रिंशद्घटीचतुष्टय भवेत्, अष्टाविंशतिरुपवासा, यदुक्त
पद्मचरित्रे-‘भुंजइ०’ इत्यादि गाथाद्वयम् । २-भावतीर्थं सहो यतो ज्ञानादिभावेन तद्विपक्षादज्ञानादितो १ भवाच्च
२ भावभूतात्तारयतीत्याह-‘जंणान०’ इत्यादि । ३-त्रिषु वा क्रोधाग्निदाहोपशम १ लोभतृष्णानिरास २ कर्ममलापनय
३ लक्षणेषु ज्ञानादिलक्षणेषु वा अर्थेषु तिष्ठतीति त्रिस्थम्, आह-‘दाहोव०’ ४-त्रयो ज्ञानाद्योऽर्था वस्तूनि यस्य तद् अर्थम्,
आह च ‘सम्मं’ इत्यादि ५-इहोपशमिकीं श्रेणिमनुप्रविष्टस्यानन्तानुबन्धिना दर्शनमोहनीयत्रयस्य चोपशमाद्यौपशमिकं भवति
१ यो वा अनादिमिथ्यादष्टिरकृतत्रिपुञ्जक एवाक्षीणमिथ्यादर्शनोऽक्षपक इत्यर्थं, सम्यक्त्व प्रतिपद्यते तस्मात्पशमिकं भवतीति, ॥
आरम्भः पृथिव्याद्युपमर्दनम् १ सरम्भः पृथिव्यादिविषये एव मनःसङ्गेन २, समारम्भस्तेपामेव सन्ताप ३ अथवा
कृतत्रिपुञ्जकः ॥ अरिहन्त १ सिद्ध २ चेइय ३ सुए य ४ धम्मे य ५ साहुवग्गेय ६ आयरिय ७ उवज्जाप,
८ पवयणे ९ दंसणे विणओ ॥ १ ॥ इति दग्गविधो विनय २ । वायण १ पुच्छणा २ चैव, तहेव
परियट्ठणा ३ अणुप्पेहा ४ धम्मकहा ५, सज्झाओ पंचहा भवे ॥ २ ॥ इति पद्मविध स्थाव्याय. २ । ऊणो-
दरियं पणहा, समासेण वियाहियं दव्वओ १ खित्त २ कालेणं ३ भावेणं ४ पज्जवेहि ५ य ॥ ३ ॥
इति ऊनोदरीयप्रकारः ६ । उत्तरा० । अकाले स्थाव्यायकरणे एतानि दूषणानि ‘सुअनाणे’त्यादि—

रणिउते १ सधिते २ छिन्ने, ३ रके ४ रौद्रे च ५ वाससि । दान १ पूजा २ होम ३, स्नाप्यायो ४ विफल भवेत् ॥ ४९९ ॥

[श्री उमाल्वातिवाचकविनिर्मितपूजाप्रकरणे १६ गाथा ॥]

आलोयण १ पढिकमणे २, मीस ३ विवेगे ४ तहा विउरसगो ५ । तव ६ छेअ ७ मूळ ८ खणवट्टिया अ ९ पारचिए १० चेव ॥ ५०० ॥

[इति दशविधप्रापत्रिच ॥]

पढिकमणे १ सज्झाण २, काउत्मगगा ३ वराह ४ पाहुणप ५ । आलोअण ६ सवरणे ७, उत्तमट्टे अ ८ वटणय ९ ॥ ५०१ ॥

[हेतुगर्भे श्रीभावश्यकनिर्मुक्तौ च ॥]

जाहेवि तह न घरे, ताहे निविट्टेग पाउणे खोमे । तेण वि असथर तो, वो खोमि पाउणे ताहे ॥ ५०२ ॥

[सहावि असथर तो उद्दअ ओषिण पाउणेइति ॥]

[श्रीभोचनियुक्तौ भाष्ये, एव स-देहदोलावलीसूत्रेऽपि ६९ पत्रे । तथाहि]

उत्सगमनयेण साउगस्त परिहाणसाहगादवरं । कपपइ पाउरणार्हं, न सेसमववायओ तिन्नि ॥ ५०३ ॥ एव कयसाभइआवि साविगा पढमनयमण्णेह । कडिसाहग १ कचुय २ मुत्तरिअ ३ वत्याणि घारेइ ॥ ५०४ ॥

[स-देहदोलावल्यां गा० ४६-४७ ६८-६९ पत्रे, पुनस्तत्रैव गा० ४८ ॥]

मीअपएण तिणहुवरि, तिहि उ बत्थेहिं पाउअगी उ । सामाअअवय पालइ, तिपय परिहरइ पढि-कमणे ॥ ५०५ ॥ जो पुण सिलिआइविणा, सुहसुद्धिमित्य काउमसमत्थो । सो वडुअकसायरस, सिलिअ गिण्हइ न से भगो ॥ ५०६ ॥

अ अँम्राणी वम्म, खवेइ यहुआहिं घासकोडीहिं । त नाणी तिहिं गुत्तो, खवेइ ऊत्तासमित्तेण ॥ ५०७ ॥

[श्रीसमवायाङ्गसूत्रे वृहत्कव्यभाष्ये गा० ११७० पञ्चवस्तुक सूत्रे २६२ पत्रे ॥]

ओसरणे १ जिणभवणे २, उच्छुवणे ३ खीरदक्खणवणउडे ४ । गमीरसाणुणाए, एमाइपसत्य-सिन्धमि ॥ ५०८ ॥

[पञ्चवस्तुसूत्रे गा० १०९ ॥]

सो हँ तवो कायघो, जेण मणोऽमगल न चिंतेई । जेण न इदिअहाणी, जेण य जोगा न हायति ॥ ५०९ ॥

१-जाहे० धावक. सामयिकव्य उत्तर अत्रावरण एव तिष्ठति तदानीं तस्य यतीभूतत्वात् । अत्रावाद्यु षीं सदाह धीनारिचरणाधिल त्रीणि उत्तरीयाणि प्रावरीतु कल्पते नाथिकानि तावपि काउप्रतिदेयितानि यतिवृत्तिव्यान्, यतीनां च धीनापवादो कल्पयस्य त्रमेण प्रावरणसुखम् 'ओष' यत एत प्रावरणपरिभोग अपवादिकोऽत एवासी परिधानादन्वद्वर्ष धीतुचनसकदिचरणत प्रतिदेयितुत्रय एव सामायिकप्रहणक्षणे प्रावरण संदेसयति नान्यथा यथा उष्णमलादी ॥ २-कृत समयिकप्रानिग्रया वप्रसुसगत, अपवादे तु परं प्रतिग्रमेण आवादिक्वञ्चत्रयं परिहरति ॥ ३-'अ अँम्राणी०' यदानीं वर्म क्षपययसंयगाद्दीभिर्वपकोटीमिसन् इानी तिष्ठभिपुम सन् गुप्तिमि क्षपयन्त्युद्गाधमात्रेणेति गाथार्थं ॥ ५०७ ॥ पञ्चवस्तुपट्टौ श्रीहरिभद्रसुरिहृतायाम् । ५-वन्मिन् क्षेत्रादी प्रग्रया दातव्या इत्येतान्हा 'ओसरणे०' समवसणे भगवद्व्यतिष्ठ क्षत्रे वृत्ते तद्गात्री वा १ निनभवने=अहदायतने २ 'इच्छवने' प्रतीते ३ क्षीरवृक्षवनसाम्पे=अत्रावादि वृक्षसमूहे ४ गम्भीरसानुनादे महाभोगप्रतिश-दवति ५ एवमादी प्रसखेक्षेत्रे, आधिगान् प्रदनिणवर्तजल-पर्यन्त इति गाथार्थं ॥ ५०८ ॥ ६-'सो हँ' तदित्य क्तव्यमशनादि यन मनोमङ्गलम्=अमुदरं न चित्तपति शुभान्तरगायितिमिन्व्यान् वर्मभयस्य तथा येन नन्दिरयनिच्छन्नाये प्रानुपेक्षापचमात्तान् येन नव योगा चक्रया उममावर्त्यन्तर्गतं स्थानात् न हीयते इति गाथार्थं ॥ ५०९ ॥

नै य किञ्चि अणुनायं, पडिसिद्धं वावि जिणवरिदेहिं । तित्थगराणं आणा, कजे सवेण
होअवं ॥ ५१० ॥

[श्रीपद्मवस्तुकसूत्रे २५१ पत्रे ॥]

जो हुज्ज उ असमत्थो १, वालो २ वुड्डो व ३ रोगिओ वावि । सो आवस्सयजुत्तो, अच्छिज्जा
निज्जरापेही ॥ ५११ ॥

सम्मत्तमि उ लद्धे, पलिअपुहुत्तेण सावगो हुज्जा [होइ] । चरणोवसमखयाणं, सागरसंखंतरा
होई ॥ ५१२ ॥

[पंचवस्तुकसूत्रे २५८-२७५ पत्रे प्रवचनसारोद्धारेऽपि ॥]

जे दंसणवावन्ना, लिंगगहणं करिति सामण्णे । तेसिं पि अ उववाओ, उक्कोसो जाव गोविज्जे ॥५१३॥
[पद्मवस्तुकसूत्रे २८० पत्रे ॥]

उद्दिट्ठकडं मुंजइ १, छक्कायपमद्दणो २ घरं कुणइ ३ । पच्चक्खं च जलगए, जो पियइ ४ कहण्णु
सो साहू ॥ ५१४ ॥

[पद्मवस्तुकसूत्रे १२०२ गाथा २८६ पत्रे ॥]

सुवइ य वयररिसिणा, कारवणंपि हु अणुद्धिअमिस्स । वायगगंथेसु तहा, एअगया देसणा
चेव ॥ ५१५ ॥

[पद्मवस्तुकसूत्रे गाथा १२२७ २८७ पत्रे ॥]

एअगुणविप्पमुक्को, जो देइ गणं पवत्तिणिपयं वा । जोऽवि पडिच्छइ नवरं, सो पावइ आण-
माईणि ॥ ५१६ ॥

वूढो गणहरसद्दो, गोअमपमुहेहिं पुरिससीहेहिं । जो तं ठवइ अपत्ते, जाणंतो सो महापावो
॥ ५१७ ॥ कालोच्चिअगुणरहिओ, जो अ ठवावेइ तह निविट्ठंपि । णो अणुपालइ सम्मं, विसुद्ध-
भावो ससत्तीए ॥ ५१८ ॥ एव पवत्तिणिसद्दो, जो वूढो अज्जचंदणाईहिं । जो तं ठवइ अपत्ते,
जाणंतो सो महापावो ॥ ५१९ ॥

[पद्मवस्तुकसूत्रे गा० १३१८ तः गा० १३२१ २९० पत्रे ॥]

आवस्सि १ णिसीहि २ सिच्छा ३, पुच्छण ४ मुवसंपयंसि गिहिएसु ५। अण्णा सामायारी, न
होइ से सेसिआ पंच ॥ ५२० ॥ आवस्सिअं १ निसीहिअ २ मोत्तुं उवसंपयं च गिहिएसु ३। सेसा
सामायारी, न होइ जिणकप्पिए सत्त ॥ ५२१ ॥

[पद्मव० गा० १४२३-१४२४ २९४ पत्रे ॥]

आयारवत्थु तइअं, जहण्णयं होइ नवमपुव्वस्स । तहियं कालण्णाणं, दस उक्कोसेण भिण्णाइं
॥ ५२२ ॥ पैढमिद्दुयसंघयणा, धिईए पुण वज्जुकुडूसामाणा । पडिवज्जंति इमं खलु, कप्पं सेसाओ
ण उ कयाइ ॥ ५२३ ॥

[पद्मवस्तुकसूत्रे गाथा १४२९-१४३० २९४ पत्रे ॥]

१-नैव किञ्चिदनुज्ञातम् एकान्तेन प्रतिपिद्धं वापि जिनवरेन्द्रैर्भगवद्भिः किन्तु तीर्थङ्कराणामाह्वेयम् यदुत कार्ये सत्येन भवितव्यं
न मातृस्थानतो यत्किञ्चिदवलम्बनीयमिति गाथार्थं ॥ ५१० ॥ २-सहननद्वारमाश्रित्याह—'पढ०' प्रथमेऽह्नकसंहनना =
ऋषभनाराचसहनना इत्यर्थः । धृत्वा पुनर्वज्जुकुडुसमाना प्रधानवृत्तय इति भावः, प्रतिपद्यन्ते एनं खलु कल्पमधिकृतं जिनकल्पं,
शेषा न तु कदाचित्तदन्यसहननिन इति गाथार्थः ॥ ५२३ ॥ पद्मवस्तुकवृत्तौ ॥

मास निवसद् रिप्ते, छवीहीओ अ कुणइ तत्थवि अ । एगेगमडइ कम्माइवज्जणत्थ पइदिण तु ॥५२४॥ (प गा १४५८) ॥ एंगाएवसहीए, उक्कोसेण वसति सत्त जणा । अवरोप्परसमास, वज्जिता क्हवि जोएण ॥५२५॥ (प गा १४७८) ॥ वीहीए एकाए, एको छिअ पइदिण अडइ एसो । अण्णे भणति भयणा, सा य ण जुत्तिकरमा णेआ ॥ ५२६ ॥ (प गा १४७९) ॥ विसेंघाइ १ रसायण २ भगलत्थ ३ विणए ४ पयाहिणावत्ते ५। गुरुए ६ अडज्ज ७ उकुत्थे ८, अट्ट सुवण्णे गुणा हुति ॥ ५२७ ॥ (प गा ११९२) ॥ ईअ मोहविस पायइ १, सिवोवएसा रसायण होइ २ । गुणओ अ भगलत्थ ३ कुणइ ४ विणीओ ५ अ जोगत्ति ॥५२८॥ (प गा ११९३) ॥ मंग्गानुसारि पयाहिण ७, गमीरो गुरुअओ तहा होइ । कोहग्गिणा अडज्जो, अकुत्थ सइ सीलमावेण ॥ ५२९ ॥ (प गा ११९४) ॥ जिणा वारसरुणाणि, थेरा चोइसरुविणो । अज्जाण पणवीस तु, अओ उट्ट उवगहो ॥५३०॥ (प गा ७७१) ॥ पत्त १ पत्तानघो २, पायट्टवण च ३ पायकेसरिया ४। पडडाई ५ रयत्ताण ६, गोच्छओ ७ पायनिज्जोगो च ॥५३१॥ (प गा ७७२) ॥ तिण्णेव य पच्छागा ३, रयहरण चेव होइ सुहपोत्ती । एसो दुवालसविहो, उवही जिणकप्पियाण तु ॥५३२॥ (प गा ७७३) ॥ विअतिअचउ-क्कपणग, नवदस एकारसेव धारसग । एए अट्ट विगप्पा, उवहिंमि उ हुति जिणकप्पे ॥ ५३३ ॥ (प गा ७७५) ॥ एए चेव दुवालस, मत्तग अइरेग चोलपट्टो अ । एसो चोइसविहो, उवही पुण थेर कप्पमि ॥ ५३४ ॥ (प गा ७७९) ॥ एए चेव उ तेरस, अभिज्जरुवा ह्यति विण्णेआ । उवहि-विसेसा नियमा, चोइसमे कमठए चेव १४ ॥५३५॥ (प गा ७८१) ॥ उगहइ १५ णतगपट्टो १६, अट्टोरुअ १७ चळणिआ १८ य बोधवा । अग्गितर १९ थाहिनिअसणी य २० तह क्कुए चेव २१ ॥ ५३६ ॥ (प गा ७८२) ॥ ओकच्छिअ २२ वेकच्छिय २३ सघाठी २४ चेव रघकरणी २५ अ । ओहोवहिंमि एए, अज्जाण पणवीस तु ॥५३७॥ (प गा ७८३) ॥ तिज्जि विहत्थी चउ रंगुल च भाणस्त मज्जिम पमाण । एत्तो हीण जहज, अइरेगयर तु उक्कोस ॥५३८॥ (प गा ७९२) ॥ इणमन्न तु पमाण, निअगाहाराओ होइ निप्फत्त । कालप्पमाणसिद्ध, उदरपमाणेण य वयति ॥५३९॥ (प गा ७९३) ॥ पंचावधपमाण, भाणपमाणेण होइ कायव । जह गठिन्मि कयमी, कोणा चउरगुला

१-मासकृपद्धारवपर्यामाह-‘मासु’ मासं निवसति क्षेत्रे एक, पद्वीधी करोति गृहपङ्क्तिरूपा परिकल्प्य तत्रापि वीथीकदम्बके एकैकमट्टति वीथी कर्मादिवज्जनार्यम् अनियद्धतया प्रतिदिनमिति गाथार्यं ॥ ५२४ ॥ २-‘एगाए’ एकस्यां वमनौ वाद्याया दट्टट्टतो वसन्ति सत जना, कयमित्थाह-परस्परं संभाषण वर्जयत सन्त कथमपि योगेनेति गाथार्यं ॥ ५२५ ॥ ३-‘वीहीए’ वीथ्यां त्वेकस्यामेक एव प्रतिदिनमन्ति एष जिनकल्पिक, अन्ये मन्ति-भजना, सा च न शुक्तिमा हेयाअ वत्तुनीति गाथार्यं ॥ ५२६ ॥ ४-‘वीस’ सुवर्णगुणानाह-विपयाति सुवर्णम् १, तथा रसायन-वय स्तम्भनम् २, ‘महलार्थं महलप्रयोजनम् ३, विनीत-कथादियोगयतया ४, प्रदक्षिणावत् अमित्त प्रह्वया ५, ग्रह सारत्तया ६, अदाय सारतयैव ७, अनुयनीयमत एव ८, एवमनौ सुवर्ण गुणा भवन्ति असाधारण इति गाथार्यं ॥ ५२७ ॥ ५-दाष्टान्तिक्कपिड्ढसाह-‘इहमो’ इति मोहविष पातयति केपांचिद शिवोप-वेद्यात् १, तथा रमायन भवति० अत एव परिणतान् मुख्य २ गुणतश्च महलार्थं करोति प्रह्वया विनीतश्च योग्य इति इत्था एव गाथार्यं ॥ ५२८ ॥ ६-‘मग्गा’ मार्गानुसारित्व सवत्र प्रदक्षिणावर्तता गन्मीरथेतसा गृहस्तया भवति कोपमिना अनाद्यो ज्ञेय, अनुयनीय सदोचितेन शीलमावेनेति गाथार्यं ॥ ५२९ ॥ ७-पानाधीनि उपपिमुपुञ्जते इति काश्यपेय, एव ‘स्वयि’ पात्रादि १४ उपपिहपवन्त आर्थाणा संयतीनां पथविशतिरेव अत ऊध्वम् औपग्रहिक उपपिः ॥ अया अपिड्ढसाह-‘पत्त’ गाहा ‘पत्ता’ १-पात्रवधप्रमाण किम् २ इत्याह-भाजनप्रमाणेन करणभूतेन भवति कर्तव्यम् । किंविशिष्टम् ? इत्याह-यावद् प्रयो ह्ये सति कोणौ चन्द्रकुलौ भवत त्रिकालविषयत्वान्मस्यसापवादिकमिदं राशु प्रत्यभावात् इति गथार्यं ॥ ५३० ॥

होति ॥ ५४० ॥ (पं. गा. ७९८) ॥ पत्तगठवणं १ तह गोच्छओ अ२ पायपडिलेहिणी ३ चैव ।
तिण्हंपि ऊ पमाणं, विहत्थि चउरंगुलं चैव ॥ ५४१ ॥ (पं. गा. ७९९) ॥ जैहि सविचा न दीसइ,
अंतरिओ तारिसा भवे पडला । तिण्णि व पंच व सत्त वा, कयलीपत्तोवमा सुहुमा (लहुया) ॥ ५४२ ॥
(पं. गा. ८०३) ॥ गिम्हासु तिन्नि पडला, चउरो हेमंत पंच वासासु । उक्कोसगा एए एत्तो पुणमज्झिमे
वोच्छं ॥ ५४३ ॥ (पं. गा. ८०५) ॥ अड्डाइज्जा हत्था दीहा वत्तीसअंगुला रुंदा । विइअं परिग्गहाओ,
ससरीराओ उ निप्फन्नं ॥ ५४४ ॥ (पं. गा. ८०६) ॥ माणं तु रयत्ताणे, भाणपमाणेण होइ निप्फन्नं ।
पायाहिणं करिंतं, मज्जे चउरंगुलं कमइ ॥ ५४५ ॥ (पं. गा. ८०८) ॥ कप्पा आयपमाणा, अड्डाइज्जा
उ आयया हत्था । दो चैव सुत्तिआ, उन्निओ तइओ मुणेअवो ॥ ५४६ ॥ (पं. गा. ८१२) ॥ वत्ती-
संगुलदीहं, चउवीसं अंगुलाइ दंडो से । सेस दसा पडिपुन्नं, रयहरणं होइ माणेणं ॥ ५४७ ॥ (पं. गा.
८१४) ॥ चउरंगुलं विहत्थी, एअं मुहणंतगस्स उ पमाणं । वीओ वि अ आएसो, मुहप्पमाणाउ
निप्फन्नं ॥ ५४८ ॥ (पं. गा. ८१६) ॥ जो मागहओ पत्थो, सविसेसयरं तु मत्तगपमाणं । दोसुवि
द्वग्गहणं, वासावासे अ अहिगारो ॥ ५४९ ॥ (पं. गा. ८१८) ॥ दुगुणो चउग्गुणो वा, हत्थो चउरस्स
चोलपट्टो उ । येरज्जुवाणाणऽट्ठा, सण्हे थुल्लंमि अ विभासा ॥ ५५० ॥ (पं. गा. ८२१) ॥ कमठपमाणं
उदरप्पमाणओ संजईण विण्णेअं । सइगहणं पुण तस्सा, लहुसगदोसा इमासिं तु ॥ ५५१ ॥
(पं. गा. ८२४) ॥ दोन्नि तिहत्थायामा, भिक्खट्ठा एक एक उच्चारे । ओसरणे चउहत्था, निसण्ण-
पच्छायणे मसिणा ॥ ५५२ ॥ (पं. गा. ८३१) ॥ पीढग-निसिज्ज-दंडग; पमज्जणी घट्टए डगलमाई ।
पिप्पलग सूइ नहरणि, सोहणगदुगं जहण्णो उ ॥ ५५३ ॥ (पं. गा. ८३४) ॥

[एता. त्रिशद्गाथाः ३० श्रीपद्मवस्तुके ॥]

ओअण १ वंजण २ पाणग ३, आयामु ४ सिणोदगं ५ च कुम्मासा ६। डगलग ७ सरक्ख
८ सूई ९, पिप्पलमाई १० उ उवओगो ॥ ५५० ॥

[श्रीपिण्डनिर्युक्तौ गाथा ३७-१७ पत्रे ॥]

जह कारणं तु तंतू, पडस्स तेसिं च हुंति पम्हाइं । नाणाइतिगस्सेवं, आहारो मोक्ख नेमस्स ॥ ५५१ ॥

[इति पिण्डनिर्युक्तौ गा० ७०-२८ पत्रे ॥]

निच्छयनयस्स चरणायविचाए नाणदंसणवहोऽवि । ववहारस्स उ चरणे, हयंमि भयणा उ सेसाणं ५५२

[पिण्डनिर्युक्तौ १०५-४२ पत्रे ॥]

आणाए चिअ चरणं, तच्चभंगे जाण किं न भगंति ? । आणं च अइक्कोतो, कस्सा एसा कुणइ
सेसं ॥ ५५३ ॥ जो जहवायं न कुणइ, मिच्छदिट्ठी तओ हु को अत्तो । वडुइ अ मिच्छत्तं, परस्स
संकं जणेमाणो ॥ ५५४ ॥

[इति गाथाद्वयं 'निच्छय०' गाथा वृत्तिगतं ६९ पत्रे ॥]

१-यात्रस्थापनम् ऊर्णमयं, तथा गोच्छरुश्च पात्रप्रतिलेखनी चैव मुहपोत्ती, एतेषा त्रयाणामपि प्रमाणं प्रस्तुतं वितस्तिश्च-
तुरद्वलं चैव षोडशाहुलानीति ॥ ५४१ ॥ २-'जैहि०' यै सविता आदित्यो न दृश्यते अन्तरित सामान्येन तादृशानि भवन्ति
स्वरूपेण पटलानि तानि च त्रीणि वा पत्र वा सप्त वा, कालापेक्षया कटलीगर्भोपमानि मसृणःश्लङ्गानि लघूनि बहुलकानीति
गाथार्थं ॥ ५४२ ॥ ३-'गिम्हासु०' मामान्येन तादृशानि भवन्ति स्वरूपेण पटलानि तानि च त्रीणि वा, त्रीण्येषु सर्वेष्वेव त्रीणि
पटलानि भवन्ति कालस्यात्यन्तरुद्धत्वाद् इतं पृथिवीरज प्रभृतिपरिणते, तेन पटलमेदायोगादिति, चत्वारि पटलानि हेमन्ते
काश्य श्लिग्धत्वान् विमर्देन पृथिवीरज प्रभृतिपरिणते, तेन पटलमेदस्यभावादिति, पत्र वर्षासु सर्वास्त्वेव पटलानि भवन्ति
कालस्यात्यन्तस्मिग्धत्वान् अतिचिरेण रज प्रभृतिपरिणते, तेन पटलमेदयोगादिति, 'उत्कृष्टान्येतानि' तत् स्वरूपपेक्षया
चेद्दोषदृष्टत्वपरिग्रहः, अत्यन्तगोभनानि पटलान्येव भवन्ति अतः पुन अत ऊर्द्धं मध्यमानि स्वरूपेण पटलानि यावन्ति भवन्ति
तावन्ति वक्ष्य इति गाथार्थं ॥ ५४३ ॥

इधण-धूमे गवे, अवयवमाइहिं सुहुमपूईउ सुदरमेय पूई चोयग भणिए गुरू भणइ जेसिं तु एस पूई, सोही नवि विज्णए तेसिं ॥ ५५५ ॥ (पिं० २५८) इधणअगणीअवयव, धूमो वण्णो अ अन्नगघो अ । सन्न कुसति लोअ, भन्नइ सन्न तओ पूई ॥ ५५६ ॥ (पिं० ५९) इत्थसय सल्लु देसो, आरेण होइ देसदेसो य । आइअमि उ तिगिहा, ते चिअ उवओगपुत्रगा ॥ ५५७ ॥ जा जय माणस्त भवे, विराहणा सुत्तविहिसमगस्त । सा होइ निज्जरफळा, अञ्जत्यप्रिसोहिजुत्तस्त ॥ ५५८ ॥

[पिण्डनियुक्तौ गा० ११०-१७१८५ पत्रे ॥]

निरया उ नरभवम्मि अ, देवो होऊण पचमे कप्पे । तत्तो चुओ समाणो, वारसमो अमम तित्वयरो ॥ ५४९ ॥

[इति रत्नसङ्घे ॥]

वाइ अ १ यमासमणे २, दिवायरे ३ चायग ४ ति णगट्टा । पुध्वगयमि अ सुत्ते, एए ४ सद्दा पठट्टति ॥ ५६० ॥

आसाठनहुलपन्ते १, भद्वए २ कत्तिए य ३ पोसे य ४ । फग्गुण ५ वइसाहेसु य ६, नायघा ओमरत्ताउ ॥ ५६१ ॥

[श्रीउत्तराध्ययने २६ अध्ययने १५ गाथा ॥]

निस्सग्गु १ वएमरई २, आणारइ ३ सुत्त ४ वीयरुइमेव ५ । अमिगम ६ पित्याररुइ ७, किरिया ८ सत्तेय ९ धम्मरई १० ॥ ६६२ ॥

[श्रीउत्तराध्ययने २८ अध्ययने १६-१७ गाथा ५६३ पत्रे ॥]

नत्थि चरित्त सम्मत्तविहूण वसणे उ भइअध । सम्मत्तचरित्ताइ जुगव पुत्र व सम्मत्त ॥ ५६३ ॥ नादसणित्तम नाण, नाणेण विणा न होइ चरणगुणा । अणुणित्तम नत्थि मोक्खो, नत्थि अमो कत्तस्त नियाण ॥ ५६४ ॥

[श्रीउत्तराध्ययने २८ अध्ययने २९-३० गाथा ५६६ पत्रे ॥]

अवरण्हे सिद्धिगया, सभव १ पडमाभ २ सुपिहि ३ वसुपुज्जा ४ । सेसा-उसभाईआ ८ सेय-सता य पुध्वण्हे ॥ ५६५ ॥ धम्म १ अर २ नमी ३ वीरा ४, अवरत्ते पुत्ररत्तए सेसा ॥

[इति मिद्धम्राप्त्ये ॥]

वेदीसईसूअगडे, रूनाहिणसु सुरेमु अ । जे भिक्खू जयइ निच, से न अच्छइ मटले ॥ ५६६ ॥

[श्रीउत्तराध्ययन ३१ अध्ययने १६ गाथा ६१२ पत्रे ॥]

ण्वल्लपुट्टौ वया-

भवण १ वण २ जोइ ३ वेमाणिया य दस अट्ट पच एगरिहा । इइ चळवीस देवा, वेई पुण विंति अरिहता ॥ ५६७ ॥ पुटवि १ दग २ अगणि ३ मारअ ४, धणस्मइ ५ नि ६ ति ७ चउ पणिदिअ ९ अजीवा १० । पहो ११ पेह १२ पमज्जण १३, परिठवण १४ मणो १५ वई १६ फए १७ ॥ ५६८ ॥

[श्रीउत्तराध्ययने ३१ गाथा लघुट्टौ १७ असयममेदा ॥]

चन्दारतिसोवाण, मज्जे मणिपीठय जिणत्तणुष । दो धणुमयपिट्ठु दीह, सट्टुदुक्कोसेहि धरणि-अला ॥ ५६९ ॥

[श्रीउत्तराध्ययने ३३ उपदेशे ॥]

यत्तदेशेऽस्ति बौशान्या, शतानीकसहोदरी । कर्मतो वालविषया, जयन्ती परमाहती ॥ ५७० ॥

[श्रीउत्तराध्ययने कमलसयम्रीट्टौ ॥]

भारण्डपक्षिणः ख्यातास्त्रिपदा मर्त्यभाषिणः । द्विजीवा द्विमुखा एकोदरा मित्रफलैषिणः ॥ ५७१ ॥
[प्रतिक्रमणवृत्तौ तपाकृतायाम् ॥]

धायरपुढवी १ जल २ जलण ३ पवण ४ पत्तेअवण ५ निगोएसु ६ । सत्तरिकोढाकोडी, अय-
राणं नाह ! भमिओहं ॥ ५७२ ॥

[कायस्थितिस्त्रे ९ गाथा ॥]

पुढवी १ आउ २ वणस्सई ३, गन्धयपज्जत्तसंखजीवेसु ५ । सगगुआणं वासो, सेसा पडिसे-
हिआ ठाणा ॥ ५७३ ॥ मद्य १ मांसाशनं २ रात्रिभोजनं ३ कन्दभक्षणम् ४ । ये कुर्वन्ति वृथा
तेपां, तीर्थयात्रा १ जप २ स्तपः ३ ॥ ५७४ ॥ वृथा चैकादशी प्रोक्ता ४, वृथा जागरणं हरेः ५ ।
वृथा च पौष्करी यात्रा ६, वृथा चान्द्रायणं तपः ७ ॥ ५७५ ॥ यस्मिन् गेहे सदाऽऽयर्थं, मूलकः
पच्यते जनैः । श्मशानतुल्यं तद्वेश्म, पितृभिः परिवर्जितम् ॥ ५७६ ॥ मूलकेन समं चान्नं, यस्तु
भुञ्जेन्नरोऽधमः । तस्य शुद्धिर्न विद्येत, चान्द्रायणशतैरपि ॥ ५७७ ॥ मूलकं भक्षयित्वा यः, कुरुते
विष्णुपूजनम् । व्यर्थं तद्वैष्णवं पुण्यं, कृतं वर्षशतेन च ॥ ५७८ ॥

[इति श्रीमहाभारते शान्तिपर्वणि मूलकपरिहारः ॥]

यस्तु वृन्ताक १ कालिङ्ग २ मूलका ३ ऽलावु ४ भक्षकः । अन्तकाले स मूढात्मा, न स्मरिष्यति
मां प्रति ॥ ५७९ ॥ भुक्तं हालाहलं तेन, कृतं वाऽभक्ष्यभक्षणम् । येन क्रव्यादनं देवि !, कृतं मूलक-
भक्षणम् ॥ ५८० ॥ नीलीं च वापयेद्यस्तु, मूलकं यस्तु भक्षयेत् । वृन्ताकभक्षणादेव, नरो यात्येव
रौरवम् ॥ ५८१ ॥ पलाण्डु १ गृञ्जनं २ चैव, रसोनं ३ सूरणं ४ तथा । मत्स्यं मांसं च नाभी-
यात्, मूलकं तु विशेषतः ॥ ५८२ ॥

[मानवीस्मृतौ वृन्ताकादीनां परिहारः ॥]

मृते स्वजनमात्रेऽपि, सूतकं जायते किल । अस्तंगते दिवानाथे, भोजनं क्रियते कथम् ॥ ५८३ ॥
उदकमपि न पातव्यं, रात्रावत्र युधिष्ठिर ! । तपस्विना विशेषेण, गृहिणा तु विवेकिना ॥ ५८४ ॥

[पद्मपुराणे ॥]

रात्रौ ये सर्वदाऽऽहारं, वर्जयन्ति सुमेधसः । पक्षोपवासस्य फलं, ध्रुवं मासेन जायते ॥ ५८५ ॥
चतुर्मासे तु संप्राप्ते, रात्रिभोज्यं करोति यः । तस्य शुद्धिर्न विद्येत, चान्द्रायणशतैरपि ॥ ५८६ ॥ स्नानाद्यं
वर्ज्यते यत्र, तथा वह्नेश्च तर्पणम् । देवपूजा तपो दानं, भुज्यते तत्र किं निशि ॥ ५८७ ॥

[इति महाभारते रात्रिभोजनपरिहारः ॥]

सप्तप्राप्तेषु यत्पापं अग्निना भस्मसात्कृते । तस्य तद्भवति पापं, मधुविन्दुप्रभक्षणे ॥ ५८८ ॥ यो
ददाति मधु श्राद्धो, मोहितो धर्मलिप्सया । स याति नरकं घोरं, खादकैः सह लम्पटैः ॥ ५८९ ॥
मेदमूत्रपुरीषाद्यै, रसाद्यैर्वर्जितं मधु । छर्दिलालामुखस्त्रावै, नभक्ष्यं ब्राह्मणैर्मधु ॥ ५९० ॥

[इति महाभारते मधुभक्षणपरिहारः ॥]

नवसमपहिं जहन्नं तु, सुहुतं एगएगुड्डीए । एगसमएण ऊणं, उकिट्टं जाव दोघडिअं ॥ ५९१ ॥
[विचारसत्तरीग्रन्थस्यावचूर्णौ श्रीमहेन्द्रसूरिविरचितायाम् ॥]

रत्तो १ दुट्टो २ मूढो ३, पुषिं वुग्गाहिओ अ चत्तारि । एए धम्मा अणरिहा, अरिहो पुण होइ
मज्झत्थो ॥ ५९२ ॥

[तपारत्तशेखरसूरिकृतश्राद्धविधिप्रकरणे ॥]

[ददस्त्रान्नं नराधिप-। आशु प्रीतिकरं लोके किं दत्तेनापरेण ते ॥] अन्नं वै प्राणिनां प्राणाः, अन्नमोजः
सुखौषधे । तस्मादन्नसमं दानं, न भूतं न भविष्यति ॥ ५९३ ॥ मिथ्यादृष्टिसहस्रेषु, वरमेको ह्यणुप्रती ।

अत्रिभिराद्यैः, धर्मैको महाप्रति ॥ ५९७ ॥ महाप्रतिदत्तैः, धर्मैको द्वि कारिवकः । कारिवकैः
 मम पात्रं, न मूय न भविन्नति ॥ ५९४ ॥ इत्युत्तरे षोडश, हाभाषारत्तौ मयम् । मनोबधन-
 वात्ता, हृत्वात्तात्तात्ता भवेत् ॥ ५९६ ॥ एकेद्विगन् पदे दृष्टे, इत्युत्तरेषु द्वि । भवकोटि
 मन्त्रेण, पात्रेभ्य प्रकृतये ॥ ५९७ ॥ अष्टिह्यारिभि पात्रे-भयकोटिद्वैरिति । पुत्राणे द्वौ-
 न्दत्त, मन्त्रानामु विदुष्यते ॥ ५९८ ॥ इत्या पात्रमदत्तानि, इत्या एतुत्तयायति । इद सीयं
 मन्त्रात्त, त्रिपद्योऽपि रिप मन्त्रः ॥ ५९९ ॥ पन्वोरममदत्त सु, प्पानात्तमममिदत्तम् । पुत्रं
 हीनत नो, मात्तयेपनउंमिदम् ॥ ६०० ॥ इत्युत्तरे त्रिने दृष्टे, दुर्गादिद्विप द्विपेत् । मागमां
 मत्त सु, वृत्तात्तप्रिधानतः ॥ ६०१ ॥ तयो १ पात्र २ भोजन ३-वात् ४ र्दीमोग ५
 इत्ता ६ विद्वत् ७ । इत्युत्तरे चार ९ जूम् १०, यत्र त्रिपमरित्तमते ॥ ६०२ ॥ तमनी १
 मवामदेतं २, परिहारि ३ पुत्राय ४ मन्त्राय ५ य । यन्ममपुत्रे ६ जाहारम ७ य ७ य
 कोऽ संतत ॥ ६०३ ॥ इत्युत्तरे १ पात्राय २ धमे ३, जूत् ४ रयो म ५ मुनिग ६ यके अ ७ ।
 यत्र ८ पुत्रे ९ यत्तात् १०, इम दिद्वि मत्तुत्तमे ॥ ६०४ ॥ मुपेयाः वेत्तीनेता, त्रिपेता
 म्मन्त्रात्तम् । मन्त्रमात्तमदत्तैः, इत्युत्तरे वात्तमात्तमोत्तम् ॥ ६०५ ॥ १ ॥ योत्तयेक १ यद्योत्तये २
 मेत्तमात्त पुत्राय ३ मः । इत्यात्तमात्त ४ यत्तम, माग र्दीमदत्तमत्तम् ॥ ६०६ ॥ २ ॥

इति मन्त्रासूची ।

मन्त्रो महात्तमम् १, मन्त्रमत्तुः कहेद् मन्त्रो २ । तमम् निगदत्तौ ३, मन्त्रमपि निगदत्तौ-
 मन्त्रो ४ ॥ ६०६ ॥

मन्त्रासूची ।

त्रिपदा यत्तमत्तम्, यत्तमत्तानि मेरिनीम् । त्रिपमत्तमव पौरे मन्त्रमत्तमत्तम् ॥ ६०७ ॥
 इत्युत्तरे मन्त्रोत्तम् ।

अत्रिभिराद्यैः, इत्यात्तम्, -मन्त्राः ३ इत्ता ४ इत्ता ५ । इत्तये ६ यत्तम् ७, मन्त्रो ता
 इत्तः मन्त्रो ॥ ६०८ ॥ इत्तये अत्रिभिराद्यैः-यत्तम् १ परिप सु इत्तमत्तम् २ । मेत्तं योत्त-
 मत्तम् ३, यत्तमत्तम् परिपेत्तम् ॥ ६०९ ॥

इति इत्तम् ।

इत्तमत्तम् इत्तम्, इत्तमत्तम् इत्तमत्तम् । इत्तमत्तम् इत्तम्, वेत्तमत्तम् इत्तम् मन्त्रो
 ॥ ६१० ॥ १ इत्तम् इत्तमत्तम्, वेत्तमत्तम् इत्तम् इत्तम् । २ इत्तम् इत्तमत्तम्, मन्त्रमत्तम् इत्तम्
 इत्तम् ॥ ६११ ॥ इत्तमत्तम् इत्तम्, इत्तम् इत्तम् इत्तम् । ३ इत्तम् इत्तमत्तम्, इत्तम्
 इत्तम् इत्तम् ॥ ६१२ ॥ मन्त्रो १ इत्तमत्तम् २, इत्तम् ३ इत्तम् ४ इत्तम् ५ ।
 इत्तम् इत्तम् इत्तम् इत्तम् इत्तम् ॥ ६१३ ॥ इत्तम् इत्तम् १ मन्त्रो वा २, इत्तम् इत्तम् इत्तम् ३
 इत्तम् इत्तम् । इत्तम् इत्तम् इत्तम्, इत्तम् इत्तम् इत्तम् ॥ ६१४ ॥ इत्तम् इत्तम्, मन्त्रो
 इत्तम् इत्तम् इत्तम् । इत्तम् इत्तम् इत्तम्, इत्तम् इत्तम् इत्तम् ॥ ६१५ ॥ इत्तम् इत्तम् इत्तम्,
 इत्तम् इत्तम् इत्तम् इत्तम् । इत्तम् इत्तम् इत्तम्, इत्तम् इत्तम् इत्तम् ॥ ६१६ ॥ इत्तम् इत्तम् इत्तम्
 इत्तम् इत्तम् इत्तम् इत्तम् इत्तम् ५ । इत्तम् इत्तम् इत्तम् इत्तम् इत्तम् इत्तम् ६
 ७ ॥ ६१७ ॥ इत्तम् इत्तम् इत्तम्, इत्तम् इत्तम् इत्तम् इत्तम् इत्तम् इत्तम् ९, इत्तम्
 इत्तम् इत्तम् १० ॥ ६१८ ॥

श्रीभद्रबाहुस्वामिकृता दशनिर्मुक्तयस्तप्रतिपादकमिदं गाथाद्वयं ज्ञेयम् ।

वीर १ सहाण २ पमाओ, अंतमुहुत्तं १ तद्देव अहोरत्तं २ । उवसग्गा पासस्स य १ वीरस्स २
य न उण सेसाणं ॥ ६१९ ॥

इति प्रमादकाल उपसर्गाश्च ।

आरिअमणारिण्णुं, पढमस्स य १ नेमि २ पास ३ चरिमाणं ४ । सेसाण २० आरिण्णुं,
छउमत्थत्ते विहारो अ ॥ ६२० ॥

इति विहारभूमिः ।

सुमइस्स निच्चभत्तं १, मल्ली २ पासाण २ अट्टमो आसी । वसुपुज्जस्स चउत्थं, वयंमि सेसाण
छट्टतवो ॥ ६२१ ॥

इति २४ जिनव्रततपः ।

वसुपुज्जो छसयजुओ १, मल्ली २ पासो ३ नरतिस्सयसहिआ । चउसहस्सजुओ उसहो ४, इग
वीरो ५ सेस १९ सहस्सजुआ ॥ ६२२ ॥

इति २४ जिनव्रतपरिवारः ।

सुमई १ सिअंस २ मल्ली ३, -नेमी ४ पासाण ५ दिक्ख पुवण्हे । सेसाण १९ पच्छिमण्हे, जायं
च चउत्थमणनाणं ॥ ६२३ ॥

इति २४ जिनानां व्रतज्ञानं च ।

सक्को अ लक्खमोहं, सुरदूसं ठवइ सब्बजिणखंघे । वीरस्स वरिसमहिअं, सया वि सेसाण तरस्स
ठिई ॥ ६२४ ॥

इति २४ जिनदेवदूप्यं तस्य कालश्च ।

अट्टमभत्तंमि क्रए, नाणुंसह १ मल्लि २ नेमि ३ पासाणं ४ । वसुपुज्जस्स चउत्थे ५, सेसाणं १९
छट्टभत्ततवे ॥ ६२५ ॥

इति २४ जिनज्ञानतपः ।

उसहस्स दससहस्सा १, विमलस्स य छव २ सत्त अणंतस्स ३ । सतिस्स नवसयाई ४, मल्लि ५
सुपासाण ६ पंचसया ॥ ६२६ ॥ पउमस्स तिसयअड्हिय ७, नेमिजिणंदस्स पणसयछत्तीसा ८ ।
धम्मस्स अड्हिअसयं ९, छसयाई वासुपुज्जस्स १० ॥ ६२७ ॥ पासस्स तिच्चीसु मुणि ११, वीरस्स
य नत्थि १ सहससेसाणं १२ । अड्ढीससहसचउत्सय, पणसीई सब्बपरिवारे ॥ ६२८ ॥

इति २४ जिनमोक्षपरिवारः ।

देसिअ १ राइअ २ पक्खिअ ३, चउमासिअ ४ संवच्छरीअ ५ नामाओ । दुण्हं पण पडिकमणा,
मज्झिमगाणं २२ तु दो पढमा ॥ ६२९ ॥ साहूण सिद्धिगमणं, असंख १ अड २ चउ ३ ति ४
संख ५ पुरिसा जा । संजायमुसह १ नेमी २ पासं ३ अंतिम ४ सेस ५ मुक्खाओ ॥ ६३० ॥

इति २४ जिनानां युगान्तकरभूमिः ।

तेसिं चिअ नाणाओ, मुणीण गयक्कम्मयाणं सिद्धिगओ । अंतमुहुत्ते दु २ ति ३ चउ ४, वरिसेसुं
इगदिणाईसु ॥ ६३१ ॥

इति २४ जिनानां पर्यायान्तकरभूमिः ।

सड्ढुवालसकोठी, सुवण्णवुट्ठी अ होइ उक्कोसा । लक्खा सड्ढुवालस, जहणिआ होइ
वसुहारा ॥ ६३२ ॥

इति वसुभाराप्रमाणम् ।

जह वहि अ असमत्यो, होइ मरीरम्म दिवनेगेण । तो उत्तरपालि हु, पूरिजा असद-
भापो उ ॥ ६२३ ॥

इति ज्ञानमन्त्रपिच्छरे ।

आरूहणे ओरूहणे, निमिअण गोगाइण च गाग्गहा । मुम्माहारण्टेदे, उक्कमेणय परिणामो ॥६३४॥
पठिक्कमओ गिदिहो वि हु, मग्गेला पचवेइ इरस्स । पूनासु तिसझासु अ, होइ निवेला जहमेण
॥ ६३५ ॥ यत्तीस थिर कयठा आहारो कुट्टिपूरओ भणोओ । पुरिमम्म महिलियाय, अट्ठारीस
भवे कयला ॥ ६३६ ॥ कयलाण य परिमाण, कुप्पुहअडगपमाणमेत्त तु । जो वा अविगिअवयणो,
कयणम्मि कुट्टेज वीमत्यो ॥ ६३७ ॥ सुत्तयविकु लक्कणण-जुत्तो गच्छस्स मेदिभूओ अ । गणतत्ति-
विष्णुणो, अत्य वायेइ आयरिओ ॥ ६३८ ॥ सम्मत्तनाणदसण-जुत्तो सुत्तयतदुभयविदिहू ।
आयरिअट्ठानोणो, सुत्त वाण उक्कजाओ ॥ ६३९ ॥

[सन्धोपमकरणे गा० १८९-२५ पत्रे ॥]

वरमनमनोमेसु, जो जोगो तत्य त पयट्टेइ । अमहु च नियत्तेई, गणतत्तिलो पविच्छीओ ॥६४०॥

[सन्धोपमकरणे गा० १९१-२५ पत्रे ॥]

थिरकरण पुण येरो, पविच्छि व पारिणमु अरथेसु । जो जत्य सीअई जई, सतयलो त थिर
हुणइ ॥ ६४१ ॥

[सन्धोपमकरणे गा० १८९-२५ पत्रे]

नियधम्मो ददधम्मो, मणिगो वज्जुओ अ वेपसी । सगहकुमलो सुत्तयविकु गणाहिचई ॥६४२॥
पट्ठावणा पहावण, वेत्तोयहि, मग्गणामु अमिसाई । सुत्तयतदुभयविकु, गणवत्थो एसो होई ॥६४३॥

[सन्धोपमकरणे गा० १९४-२९ पत्रे ॥]

मत्तविआरण पायअणतगुणिअं च एकभूअस्स । भूअस्स असररगुण, पाय इष्म पाणरस ॥ ६४४ ॥
परिअ तंदिअ चठरिदी तह य वेथ पचिदी । लक्कसहस्स तह सय-गुण च पाय मुणेयच्च ॥ ६४५ ॥
ओरात्थिअ च रिच, मणवयकणण करणनोणेण । अणुमोअणकारावण-परणेणट्ठारसा यम ॥ ६४६ ॥
दो पयपला महुपल, ददिअस्समट्ठाअय थिरिअवीस । दसरपडगुलपलाइ, एमो रसाळ् निवइनोणो
॥ ६४७ ॥ अज्जाण माविआण च, अकालचारित्तणोसभावाओ । ओमरणमि ण गमण, दिवसविजामे
तिसि कहता ॥ ६४८ ॥ विट्ठ्ठाई मुरहिं जल्लयलयदिक्कुमुमनीहारिं । पयरति समतेण, दसद्वयध
मुमुतयास ॥ ६४९ ॥

संघाचारवृत्ती भागमगायधमिति प्रोक्तमिति [१९ पत्रे] ।

चिइधदणा तिभेआ, जहसिआ १ मणिमा य २ ञ्कोसा ३ । इविणमि तिभेआ, जहम्ममग्गिनि-
अञ्जोमा ॥ ६५० ॥ ण्णाणुणारेण, चिइधदणया जहम्मयतहमा । पट्टु णमुणारेहिं अ, नेआ
उ जहण्णमग्गिणिया ॥ ६५१ ॥ मणिअ मक्कययता, जहण्णउणोसिआ मुणेअट्ठा ३ । नमुणाराइ चिय

१-आरूहणे ० इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय अरूहणरररहा च तथा यमिन् वृत्तानि
वृत्तानि ॥ १ ॥ २-असमत्यो इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय असमत्यो इति वृत्तानि
वृत्तानि ॥ २ ॥ ३-उत्तरपालि इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय उत्तरपालि इति वृत्तानि
वृत्तानि ॥ ३ ॥ ४-पूरिजा असदभापो इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय पूरिजा असदभापो
इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ ४ ॥ ५-इति ज्ञानमन्त्रपिच्छरे इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय इति
ज्ञानमन्त्रपिच्छरे इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ ५ ॥ ६-आरूहणे ओरूहणे इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय
आरूहणे ओरूहणे इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ ६ ॥ ७-मुम्माहारण्टेदे इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय
मुम्माहारण्टेदे इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ ७ ॥ ८-उक्कमेणय परिणामो इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं
भूय उक्कमेणय परिणामो इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ ८ ॥ ९-पठिक्कमओ गिदिहो इति वृत्तं वृत्तं च
वृत्तं च वृत्तं भूय पठिक्कमओ गिदिहो इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ ९ ॥ १०-मग्गेला पचवेइ इरस्स इति
वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय मग्गेला पचवेइ इरस्स इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ १० ॥ ११-पूनासु
तिसझासु अ इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय पूनासु तिसझासु अ इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ ११ ॥
१२-यत्तीस थिर कयठा आहारो इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय यत्तीस थिर कयठा आहारो
इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ १२ ॥ १३-कुट्टिपूरओ भणोओ इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय कुट्टिपूरओ
भणोओ इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ १३ ॥ १४-पुरिमम्म महिलियाय इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं
भूय पुरिमम्म महिलियाय इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ १४ ॥ १५-अट्ठारीस भवे कयला इति वृत्तं
वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय अट्ठारीस भवे कयला इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ १५ ॥ १६-कयलाण य परिमाण
इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय कयलाण य परिमाण इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ १६ ॥ १७-कुप्पुहअडगपमाणमेत्त तु
इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय कुप्पुहअडगपमाणमेत्त तु इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ १७ ॥ १८-जो वा
अविगिअवयणो इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय जो वा अविगिअवयणो इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ १८ ॥
१९-कयणम्मि कुट्टेज वीमत्यो इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय कयणम्मि कुट्टेज वीमत्यो इति वृत्तानि
वृत्तानि ॥ १९ ॥ २०-सुत्तयविकु लक्कणण-जुत्तो गच्छस्स मेदिभूओ अ इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं
भूय सुत्तयविकु लक्कणण-जुत्तो गच्छस्स मेदिभूओ अ इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ २० ॥ २१-गणतत्ति-
विष्णुणो इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय गणतत्ति-विष्णुणो इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ २१ ॥ २२-अत्य
वायेइ आयरिओ इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय अत्य वायेइ आयरिओ इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ २२ ॥
२३-सम्मत्तनाणदसण-जुत्तो सुत्तयतदुभयविदिहू इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय सम्मत्तनाणदसण-
जुत्तो सुत्तयतदुभयविदिहू इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ २३ ॥ २४-आयरिअट्ठानोणो इति वृत्तं वृत्तं च
वृत्तं च वृत्तं भूय आयरिअट्ठानोणो इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ २४ ॥ २५-सुत्त वाण उक्कजाओ इति
वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय सुत्त वाण उक्कजाओ इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ २५ ॥ २६-वरमनमनोमेसु
इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय वरमनमनोमेसु इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ २६ ॥ २७-जो जोगो तत्य त
पयट्टेइ इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय जो जोगो तत्य त पयट्टेइ इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ २७ ॥
२८-अमहु च नियत्तेई इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय अमहु च नियत्तेई इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ २८ ॥
२९-गणतत्तिलो पविच्छीओ इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय गणतत्तिलो पविच्छीओ इति वृत्तानि
वृत्तानि ॥ २९ ॥ ३०-सन्धोपमकरणे गा० १९१-२५ पत्रे ॥ इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय सन्धोपमकरणे
गा० १९१-२५ पत्रे ॥ इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ ३० ॥ ३१-थिरकरण पुण येरो इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च
वृत्तं भूय थिरकरण पुण येरो इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ ३१ ॥ ३२-पविच्छि व पारिणमु अरथेसु इति वृत्तं
वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय पविच्छि व पारिणमु अरथेसु इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ ३२ ॥ ३३-जो जत्य सीअई
जई इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय जो जत्य सीअई जई इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ ३३ ॥ ३४-सतयलो त
थिर हुणइ इति वृत्तं वृत्तं च वृत्तं च वृत्तं भूय सतयलो त थिर हुणइ इति वृत्तानि वृत्तानि ॥ ३४ ॥

दंडग-इगथुई मज्झिमजहण्णा ४ ॥ ६५२ ॥ मंगल मकत्थय चिअदंडकथुईहि मज्झिममज्झिमिया ५।
मज्झिमउक्कोसा पुणे, सच्चिअसिलोगतित्रिथुईहिं ॥ ६५३ ॥ उक्कोसजहण्णा पुण, सच्चिअसकत्थयाइ
संजुत्ता । जा थुइजुअलदुगेणं, दुगुणिअ चिइदंडयाइ पुणो ॥ ६५४ ॥ उक्कोसमज्झिमा सा ८,
उक्कोसुक्कोसिआ य पुण नेआ । पणिवायपणगपणिहाण-तिअगथुत्ताइसंपुण्णा ९ ॥ ६५५ ॥ एसा
नवप्पयारा, आइण्णा वंदणा जिणमयंमि । कालोचिअकारीणं, अणग्गाहाणं सुहा सवा ॥ ६५६ ॥
उक्कोसा तिविहा वि हु, कायवा सत्तिओ उभयकालं । सेसा पुण छन्नेआ, चेइअपरिवाडिमाईसु ॥६५७॥

एता अष्टौ गाथा बृहन्नाप्यस्य संवाचारवृत्तौ [१७६ पत्रे] उक्तरूपतया लिखिताः सन्ति ।

मइनाणं १ सुअनाणं २, ओही ३ मणनाण ४ केवलन्नाणं ५ । पढमदुनाण परोक्खा, नाणतिगं
जीवपच्चक्खं ॥ ६५८ ॥ सामण्णेण छ दवा, मइसुअनाणी अ दो वि जाणंति । ओहीनाणी पुग्गल-
दवं जाणेइ नो अन्नं ॥६५९॥ मणपज्जवनाणी पुण, मणाचिंतिअपज्जवे वि आणेइ । केवलनाणि छदवा,
चाणइ पासइ सपज्जाया ॥ ६६० ॥ उग्गह १ ईह २ अवाओ ३, अ धारणा ४ एव हुंति चत्तारि ।
मइनाणे एआइं, भेआ वत्थू समासेणं ॥६६१॥ उग्गह इक्कं समयं ईहावाओ ३ महुत्तमेगं (मद्वं-मन्तं
इति पाठान्तरम्) तु । कालमसंखं संखं, च धारणा होइ नायवा ॥६६२॥ पंचहि वि इंदिएहिं, मणसा
अत्थुग्गहो मुणेअवो । चक्खिअदिअमणरहिअं, वंजणमीहाइअं छद्दा ॥६६३॥ उप्पत्तिआ १ वेणयिआ
२, कम्मइआ ३ पारिणामिआ ४ । वुद्धी चउव्विहा वुत्ता, पंचमा नोवल्लभई ॥६६४॥ मइनाणस्म
य भेआ, उग्गहमाई चउव्विहं तं तु । इंदिअनोइंदिपुढो, नवरं वंजणचउत्तभेअं ॥ ६६५ ॥ छ चउक्का
चउवीसं, वंजणचउक्केण अट्टवीसं तु । सुअनिरिसिअं तु एअं, वुद्धिचउक्केण वत्तीसं ॥ ६६६ ॥ बहुविह
खिप्प अणिसिअं, संदिद्धधुवाण सेअराणं च । वारसगुणट्टवीसा, चउवुद्धिजुआ तिसयचाला ॥६६७॥

[एवं मइनाणं सम्मत्तं ॥ १ ॥]

अक्खर १ सण्णी २ सम्मं ३, साईअं ४ खलु सपज्जवसिअं ५ च । गमिअं ६ अंगपविट्ठं ७,
सत्तवि एए सपडिवक्खा ॥ ६६८ ॥ अक्खरसुअमिह तिविहं, घडसरिसो सण्णिअक्खरो होई ।
वंजणभासासहो, लद्धक्खरमत्थपडिवोहो ॥ ६६९ ॥ ऊससिअं नीससिअं, निच्छूढं खासिअं च
छीयं च । निस्सिअयिमणुसारं, अणक्खरं छेलिआईअं ॥ ६७० ॥ सण्णा मणविन्नाणं, जेसिं सा
अत्थि ते च सण्णित्ति । मणविण्णाणविमुक्का, असण्णिणो मंडुकाईआ ॥ ६७१ ॥ हेऊवाउवएसा,
जह कीडिअ दीहकालउवएसा । तक्कालकरणचिंता, सम्मजुए दिट्ठिवाया य ॥ ६७२ ॥ मिच्छा सम्मे
पत्ते, साइ सुअं होइ सम्मदिट्ठिस्स । अभविअजीवे अ पुणो, अणाइअं सुअं अनाणं तु ॥ ६७३ ॥
पज्जवसाणेण जुअं, केवलिनाणस्स होइ सुअनाणं । सुअमण्णाणमभवे, अपज्जवसिअं मुणेअवं
॥ ६७४ ॥ अंगपविट्ठं गमिअं, सुगमं पडिवक्खसंजुअं सम्मं । इअ चउदसभेअजुअं, सुअनाणं
विवरीअं नेअं ॥ ६७५ ॥

[एवं सुअनाणं सम्मत्तं ॥ २ ॥]

अणुगामि अणुगामी, अवट्ठिअमणवट्ठिअं च विन्नेअं । तह हीअमाणयं वड्डमाणयं वोहि चउ-
भेअं ॥ ६७६ ॥ तप्पागारे पल्लग-पडहन्नल्लरिसुअंगपुप्फच्चये । तिरिअमणुएसु ओही, नाणाविह-
संठिओ भणिओ ॥ ६७७ ॥

नेरइअ भवण वणयर-जोइसकप्पालयाणमोहिस्स । गेविज्जणुत्तराण य, हुंतागारा जहासंखं ॥६७८॥
अहवा बहुप्पयारं, असंखलोअप्पएसपरिमाणं । लोगगयरूविदवा-णं तत्ताओ अणंतविहे ॥ ६७९ ॥

[एवं ओहीनाणं सम्मत्तं ॥ ३ ॥]

रिउमइविउलमईहि अ, मणपञ्जवनाणवन्नण समए । अङ्गुइअगुल्लण, पढम धीअं तु नरखेत्त ॥६८०॥

[॥ एव मणपञ्जवनाण सम्मत्त ॥ ४ ॥]

केवल १ मिग २ मसहाय ३, असॉह्वरण ४ मणत ५ मपरिसेस ६ च । केवलसदस्स इमे,
अत्या छुधेव नायघा ॥ ६८१ ॥ आइतिनाण तुरिआ, मणनाण छट्टया उ खीणत । केवलमतदु-
गमी, मिस्से मिस्स तु आइतिग ॥ ६८२ ॥ पचण्ह नाणाण, वक्खाणसिण समासओ भणिअ ।
छवीसागाहाहिं, रइअं हरिमइसूरीहिं ॥ ६८३ ॥

[॥ इति ज्ञानपञ्चकविवरणप्रकरण श्रीहरिमद्रसूरिकृतम् ॥]

ससारहेतुमूताया, य क्षय कर्मसन्तते । निर्जेरा सा पुनह्वेधा, सकामाकामभेदत ॥ ६८४ ॥
धमणेपु सकामा स्यादकामा शेपजन्तुपु । पाक स्वव उपायाच, कर्मणा स्याद् यथाऽऽन्नवत्
॥ ६८५ ॥ कर्मणा न क्षयो भूयादित्याशयवता सताम् । वितन्वता तपस्यादि, सकामा शमिना
मता ॥ ६८६ ॥ एकेन्द्रियादिजन्तूना, सञ्ज्ञानरहितात्मनाम् । शीतोष्णवृष्टिदहनच्छेदभेदादिभि
सदा ॥ ६८७ ॥ वष्ट वेदयमानाना, य शाट कर्मणा भवेत् । अकामनिर्जेरामेना—मामनन्ति
मनीषिण ॥ ६८८ ॥ तप प्रभृतिभिर्वृद्धि, व्रजन्ति निर्जेरा यत । ममत्व कर्म ससार, ह्यात्ता
भावयेत्त ॥ ६८९ ॥

इद गायपङ्क श्रीप्रवचनसारोदारे ६८ कारणद्वारे (पत्र १५९) तत्रापि तृतीये भावनाख्ये भवान्तरद्वारे, श्रुतौ
तु एव तथाहि—'अथ निर्जेरा भावना' इति ।

पासत्याइविवोहिअ केइ जिया वयइ कारावइ जिणमदिरु तम्मयभाविअइ त किर निइसाचेइओ
अवचाई ण भणिओ तिहिं पघतिहिहिं कीरइ ववणु कारणिओ ॥ ६९० ॥ (३३ गाथा) ॥ धम्मिउ
धम्मुकल्लु साहवउ, परु मारइ कीरइ जुञ्जवउ । तु वि तसु धम्मु अत्थि न हु नासइ, परमप्रइ निवसइ
सो सासइ ॥ ६९१ ॥ जइ किर फुहइ लम्भइ मुड्डिण तो वाडिअ न करहि सहु वूविण । थावर
परहइइ न करावहि, जिणधणु सगह्व करि न वद्धारहि ॥ ६९२ ॥ जइ किर कु वि मरतु घरहइइ,
देइ त लिज्जहि लहणावट्टइ । अह कु वि भत्तिहि देइ त लिज्जहि, तन्माहयधणि जिण पूइज्जइ ॥ ६९३ ॥
हास गिइ हुइ वि वज्जिअहिं, सहु पुरिसेहि वि केलि न विज्जहिं । रत्तिहिं जुवइपवेसु निवारहिं,
न्दवणु नदि न पइह्व करावहिं ॥ ६९४ ॥

[इद वृषपञ्चक (२६-२८-२९-३०) श्रीनिन्दत्तसूरिकृतोपदेशरसायनप्रथमस्य ४२ पत्रे । तस्य व्याख्या तु
पृथगुक्तिवित्तविशेषनवमपत्रादवसेया ॥]

एत्तोषिअ पडिसेहो, दढ अजोगाण वन्निओ समए । एअस्त पाइणोऽविअ, धीअति विहि एस
इसइणा ॥ ६९५ ॥

[इति श्रीहरिमद्रसूरिकृतवस्तुके गा० ५११-२११ पत्रे । चारित्रमङ्गेषु चारित्रदानं नाम ॥]

पच्छओ मोत्तव, जइणा दाणाओ पडिनिअत्तेण । तुच्छगजाइअदाणे, वघो इहरा पदोसाइ ॥ ६९६ ॥

[वस्तुके गा० १९१, ६४ पत्रे ॥]

एपसि धयपमाण, अट्ट समाउत्ति वीअरागेहिं । भणिअ जइन्नय रउलु, उक्कोस अणवगहोत्ति
॥ ६९७ ॥ वदहो परिमवत्तिअ, न धरणभावोऽविपायमेपसिं । आह्वभावकइग, सुच मुथ होइ
गाय ॥ ६९८ ॥

एष पूर्वपक्षः, उत्तरमाह—

भण्णइ खुड्डगभावो, कम्मखओवसमभावपभवेणं । चरणेण किं विरुच्चइ, जेणमजोगत्ति-
सग्गोहो ॥ ६९९ ॥

एतदेव स्पष्टयति—

तक्कम्मखओवसमो, चित्तनिवंधणसमुद्भवो भणिओ । न उ वयनिवंधणो थिय, तन्हा एआणम-
विरोहो ॥ ७०० ॥

इत्थं चैतदङ्गीकर्त्तव्यमिति दर्शयति—

गयजोव्वणावि पुरुसा, वालुव्व समायरंति कम्माणि । दोग्गाइनिवंधणाइं, जोव्वणवंताऽवि ण च
केवि ॥ ७०१ ॥

[इदं गायापञ्चकमपि पञ्चवस्तुकसूत्रस्य गा० ५०, ५१, ५६-५९-१०-१३ पत्रे ॥]

अत्रापष्टवर्षेभ्योऽर्वांगपि दानं प्रोक्तम्—

चउट्ठसिं १ पण्णरसिं च २, वज्जेजा अट्ठमिं च ३ नवमिं ४ च । छट्ठिं च ५ चउट्ठियं ६ वारसिं
च सेसासु दिज्जाहि ॥ ७०२ ॥

एवासु तिथिषु दीक्षा न देया—

तिसु उत्तरासु तह रोहिणीसु कुज्जा उ सेहनिक्खमणं । गणिवायए अणुण्णा, महव्वयाणं च
आरुहणा ॥ ७०३ ॥

एतेषु नक्षत्रेषु दीक्षादिदानं कार्यम् । वर्जनीयनक्षत्राण्यहाह—

संझागयं १ रविगयं २, विड्डेरं ३ सग्गहं ४ विलिंविं च ५ । राहुगयं ६ गहमिन्नं च ७, वज्जए
सत्त नक्खत्ते ॥ ७०४ ॥

[पञ्चवस्तुके गा० १११-३, २० पत्रे ॥]

एतानि सप्त नक्षत्राणि दीक्षायां वर्जनीयानि । एतेषामर्थो यथा—

अत्यमणे संझागयं १, रविगयं जहिं ठिओ उ आइच्चो २ । विड्डेरमवहारिअ ३, सग्गह कूरग्ग-
हठिअं ४ तु ॥ ७०५ ॥ आइच्चपिट्ठओ जं, विलिंवि ५ राहुगयं तु जहिं गहणं ६ । मज्जेणं जस्स
गहो, गच्छइ तं होइ गहमिन्नं ॥ ७०६ ॥

एतेषां फलं यथा—

संझागयंमि कलहो १, आइच्चगए अ होइ निव्वाणि २ । विड्डेरे परविजओ ३, सग्गहम्मि अ
विग्गहो होइ ४ ॥ ७०७ ॥ दोसो अभंगयत्तं, होइ कुभत्तं विलिंविनक्खत्ते ५ । राहुगयंमि अ मरणं
६, गहमिन्ने सोणिउग्गालो ७ ॥ ७०८ ॥

[पञ्चवस्तुकटीका २० पत्रे ॥]

[इति दीक्षाविषये गाथा. ॥]

चिइवंदण रचहरणं, अट्टा सामाइयस्स उत्सग्गो । सामाइतिगकड्डुण, पयाहिणं चेव तिक्खुत्तो
॥ ७०९ ॥ गुरवो वामगपासे, सेहं ठाविच्चु अह वए दिंति । इक्किं तिक्खुत्तो, इमेण ताणसुव-
वच्चत्ता ॥ ७१० ॥

[इदं गाथाद्वयं पञ्चवस्तुके (२२ पत्रे) वारत्रयं सामायिकोच्चारप्रतिपादकम् ॥]

सच्चित्तं १ दव्व २ विग्गेइ ३, वाणहि ४ तंवल ५ वत्थ ६ कुसुमेसु ७ । वाहण ८ सयण ९
त्रिलेवण १०, वंभ ११ दिसि १२ न्हाण १३ भत्तेसु १४ ॥ ७११ ॥

[एतस्या विवरणं विशेषसङ्गहे ८५ द्वारे ॥]

चतुर्भिरुदय प्रोक्त-शतुर्जपैश्च अष्टुलम् । चतुर्भिरुदयैर्मुष्टि-शतुर्मुष्टिमित कर ॥ ७१२ ॥
 चतुर्भिरुदय दण्डः श्वान्, क्रोशतीर्द्धिमहलके । चतुर्भि क्रोशकैश्चाय, योजन परिकीर्तितम्
 ॥ ७१३ ॥ शतयोनो वैश स्वाश्रितदेश तु मण्डलम् । शतमण्डल रण्ड स्वाश्रयरण्डा
 यमुपरा ॥ ७१४ ॥

[इति गाथाप्रथमगीते ॥]

अन्तरहारापहृगं,-परिहारपरायाः । कामत्रोषटोभमान,-मदहर्षां जनी मता ॥ ७१५ ॥
 पुत्रमये सो वेच्छद्, इव दो तिमि जाय नयम या । उषरिं तस्व अविमओ, सभायओ
 जाइसरारम् ॥ ७१६ ॥

[इन्द्राचार्यहृत्रयोगविधौ ॥]

षादम यामाणि तया, निगेण उष्पाटिअस्व नागस्व । सो यहुतराण दिट्ठी, सायत्पीए
 सनुपन्ना ॥ ७१७ ॥ जेहा मुदसणजमान्णिणोञ्ज सायत्पिय तेंदुगुजाणे । पचसया य सहस्व, उषेण
 जमानि मोक्षुण ॥ ७१८ ॥

[इति प्रथमो जमातिनिहवः ॥ १ ॥]

मोक्ष यामाणि तया, निगेण उष्पाटिअस्व नागस्व । जीवपणसियदिट्ठी, उषमपुरमी सनुपन्ना
 ॥ ७१९ ॥ रायगिह गुणसिउए, यमु चोरमपुत्रि तीसगुत्ताओ । आमलकप्पा णयति, मित्तिसिरी
 पूरपिडाई ॥ ७२० ॥

[इति द्वितीयद्विप्यगुसनिहवः ॥ २ ॥]

षोडा दो यामसया, तइया सिद्धिं गयस्व वीरस्व । अद्यत्तयाण दिट्ठी, सेयवियाए सनुपन्ना
 ॥ ७२१ ॥ सेअपि षोडासादे, जोगे तद्विषसद्विअयसूले अ । सोहम्मि ननिणिगुम्मे, रायगिहै
 मुरिअ यउमरे ॥ ७२२ ॥

[इति आपाशाचार्यसिप्यगन्तृनीयो निहवः ॥ ३ ॥]

षीसा दो यासमया, तइआ सिद्धिं गयस्व वीरस्व । सामुच्छेइअदिट्ठी, मिहिलपुरीए सनुपन्ना
 ॥ ७२३ ॥ मिहिलाए उच्छिपरे, महगिरिकोदिणा आसमित्ते अ । नेठगियाणुपयाए, रायगिहै
 राहरण्णा य ॥ ७२४ ॥

[इति अथमिन्द्रभनुषो निहवः ॥ ४ ॥]

जहारीमा दो याससया, तइआ सिद्धिं गयस्व वीरस्व । दो किरिआण दिट्ठी, चनुगतीरे
 सनुपन्ना ॥ ७२५ ॥ महरेहणय उणुग, महगिरिधुगुत्त अजगने अ । किरिआ दो रायगिहै,
 महाअयो तीरनिगाण ॥ ७२६ ॥

[इति गण्डयनिहवः पञ्चमः ॥ ५ ॥]

पचसया चोआळा, तइआ सिद्धिं गयस्व वीरस्व । पुरिमवर्जिआए, वेरासियदिट्ठि उष्पन्ना
 ॥ ७२७ ॥ पुरिमवर्जि उष्पुए, षट्ठिमिरे सिरियुत्त रोदुत्ते अ । परिषापपोट्टाम्णे, घोमणपरि-
 णेत्ता अ ॥ ७२८ ॥

[इति रोहपुत्राणां षष्ठो निहवः ॥ ६ ॥]

दसमया पुष्पीणा, तइआ सिद्धिं गयस्व वीरस्व । [अर्षादि] अद्यत्तियाण दिट्ठी, दमपुनपरे
 सनुपन्ना ॥ ७२९ ॥ दमपुरे नागगुपरे, अन्तरकिराअणुममित्तित्तम य । गोहाणाहिल नचमहो

सु पुच्छा य विज्ञस्स ॥ ७३० ॥ पुटो जहा अवद्धो, कंचुइणं कंचुओ समन्नोइ । एवं पुट्टमन्नद्धं,
जीवं कम्मं समन्नेह [इ] ॥ ७३१ ॥

[इति गोष्ठामाहिलः सप्तमो निह्वः ॥ ७ ॥]

छवास सयाइं नवुत्तराहिं सिद्धिं गयस्स वीरस्स । तो वोडिआण दिट्ठी, रहवीरपुरे समुपन्ना ॥ ७३२ ॥

[इति दिग्म्वरमतप्रवर्तकः सहस्रमल्लनामा सर्वविसंवादी अष्टमो निह्वः ॥ ८ ॥ आ. चू. पृ. ४२७]

एताः षोडश गाथाः श्रीआवश्यकचूर्णितो लिखिताः सन्ति । आसां व्याख्या सम्बन्धसहिता
मत्कृतविशेषसङ्ग्रहतो ज्ञेया ॥

हत्वा नृपं पतिमवेक्ष्य मुजङ्गदष्टं, देशान्तरे विधिवशाद्रणिकाऽस्मि जाता । पुत्रस्य संगमधिगम्य
चित्तां प्रविष्टा, शोचामि गोपगृहिणी कथमद्य तक्रम् ॥ ७३३ ॥

आहाकम्मपरिणओ, फासुअभोईवि वंधओ होइ । सुद्धं गवेसमाणो, आहाकम्मेवि सो
सुद्धो ॥ ७३४ ॥

[इति पिण्डनिर्युक्तौ २०७ गाथेयम् ७४ पत्रे ॥]

जह जह पएसिणी जाणुगंमि पालित्तओ भमाडेइ । तह तह सीसे वियणा, पणत्सइ मुक्कं
डरायस्स ॥ ७३५ ॥

[इति पिण्डनिर्युक्तौ ४९८ गाथासम्बन्धः श्रीमलयगिरिकृतवृत्तौ पृ० १४२]

मिक्खं पविट्ठेण मएऽज्ज दिट्ठं, पमयासुहं कमलविलासनेत्तं । वक्खित्तचित्तेण न सुद्धु नायं, सक्कुं-
डलं वा वयणं नवत्ति ॥ ७३६ ॥ फलोदणं मि गिहे पविट्ठो, तत्थासणत्था पमया मि दिट्ठा ।
वक्खित्तचित्तेण न सुद्धु नायं, सक्कुंडलं वा वयणं नवत्ति ॥ ७३७ ॥ मालाविहारंमि मएऽज्ज दिट्ठा
उवासिया कंचणभूसियंगी । वक्खित्तचित्तेण न सुद्धु नायं, सक्कुंडलं वा वयणं नवत्ति ॥ ७३८ ॥
खंतस्स दंतस्स जिइंदियस्स, अज्जप्पओगे गयमाणस्सत्स । किं मज्झ एएण विचित्तिएणं, सक्कुंडलं वा
वयणं नवत्ति ॥ ७३९ ॥ उल्लो सुक्को अ दो दूढा, गोलचा मट्ठिआमया । दोऽवि आवडिआ [कुइ]
भित्ते, जो उल्लो तत्थ [सोध्य] लग्गाई ॥ ७४० ॥ एवं लग्गंति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा ।
विरत्ता उ न लग्गंति, जहा से सुक्कगोलए ॥ ७४१ ॥

[आचाराङ्गनिर्युक्तौ चतुर्याध्ययने द्वितीयोद्देशकप्रान्ते १७० पत्रे गाथापङ्कम् ॥]

नेसप्पे १ पंडुयए २, पिंगलए ३ सब्बरयण ४ महपउसे ५ । काले अ ६ महाकाले ७, माणवग
८ महानिहीं संखे ९ ॥ ७४२ ॥

[इति नवनिधिनामानि ॥]

चक्रट्टपइट्ठाणा, अहुस्सेहा य नव य विक्खंभे । धारस दीहा मंजूससंठिआ जण्हवीए सुहे ॥ ७४३ ॥

[इति याम्यः सकाशान्नव निधानानि निस्सरन्ति तासां मञ्जूपाणां मानम् ॥]

वेरुलिअमणिकवाडा, कणयमया विविहरयणसंपुण्णा । ससिसूर चक्कलक्खण अणुसमवयणो
ववत्तीया ॥ ७४४ ॥

[इति मञ्जूपास्वरूपम् प्रवचने ५०६ ॥]

[अंतमुहुत्तं, जहन्निओ किट्ठिओ असंखिज्जं । सेवंति विसयसेवा, नायवा सब्बदेवाणं ॥ १ ॥
एवं देवाणु खल्लु, उज्जअ हाणी उ जइवि संभवइ । तइआओ रुवसंपय, अखंखरुणयाओ देवाणं
॥ २ ॥ वक्खोए वैमाणिय, कंठे तह होइ जोइसाणं तु । भुइमा भवणयराणं, सीसट्ठाणेसु भुवणाई
॥ ३ ॥ सामन्ना य तायत्तीसा य, पारयियारक्खलोअपाला य । अणीयपइन्नभिओगा, किव्विसियं

दस भवण वेमाणी ॥ ४ ॥ सरेण भवणगासी, वितरदेवा य पटहसरेण । उट्टति ससमता, जोइ-
मिया सिहनादेण ॥ ५ ॥ कप्पाहि वाणि चलिया, पटनाएण बोहिया सता । सबहुसमुदएण, इति
इह माणुस गित्त ॥ ६ ॥

पुक्कलरइ-विनए, पुत्रविदेहमि पुडरगिरिए । कुयु अरहतरंमि य, जाओ सीमपरो भयव ॥ १ ॥
मुग्गिमुग्गयत्तिण नमिज्जिण अतररज्ज च इत्त निकलतो । सिरिउदयदेव पेडालअतरे पावइ मुक्क ॥ २ ॥

(इति सीमपरेण जन्मो मोक्षस्य च काल)

आरी मयैवाऽयमर्हापि नून, तन्नो वदेमामवहीलितोऽपि । इति ध्रमादङ्गुलिपवणाऽपि,
सृष्टयेत नो दीप इवाऽवनीप ॥ ७४५ ॥ कम्म १ मम्म २ जम्म ३, तित्रि वि एयाइ मा भणि-
जासु । मन्माइसु विट्ठो पुण, मारिज्ज सय मरिज्जा वा ॥ ७४६ ॥ चक्खुजुअ चउरिदिंसु, त
चिअ वारस पणिदि तसकाए । जोए वेए सुक्काए भवसतीसु आहारे ॥ ७४७ ॥ सतोऽप्य-
सन्नोऽपि परम्य दोषा, नोत्ता धुता वा गुणमावहति । वैराणि वहु परिवर्द्धयन्ति, श्रोतुश्च
तन्वन्ति परा कुवुद्धिम् ॥ ७४८ ॥ वाचको १ वञ्चको २ व्याधि ३, पञ्चत्व ४ मर्मभापक ५ ।
योगिनामप्यमी पञ्च, प्रायेणोद्वेगकारका ॥ ७४९ ॥ कएवि अत्रसुवयारजाए, कुणति जे पशु-
वयारजुम्म । न तेण तुहो विमलोवि चदो, न चेय भाणू नहि देवराया ॥ ७५० ॥ स्वामि-
मत्तो १ महोत्साह २, कृतज्ञो ३ धार्मिक ४ शुचि ५ । अकर्कशः ६ कुलीनश्च ७, शास्त्र
८ सत्यभापक, ९ ॥ ७५१ ॥ विनीत १० स्थूललक्षश्चा ११ ऽव्यसनी १२ वृद्धसेवक १३ ।
अद्भूत १४ सत्त्नसपन्न १५, प्राज्ञ १६ शूरो १७ ऽचिरक्रिय १८ ॥ ७५२ ॥ पूर्व परीक्षितः
सर्वोपयामु १९ निजदेशज २० । राजार्थ-स्वार्थ-लोकार्य-कारको २१ निरग्रह २२ शमी
२३ ॥ ७५३ ॥ अमोघरचन २४ कल्पः २५, पालितादोषदर्शन २६ । पात्रौचित्येन सर्वज्ञ,
नियोजितपदकम्म २७ ॥ ७५४ ॥ आन्वीक्षिषीत्रयीवार्त्ता-दण्डनीतिकृतश्रम २८ । प्रमागतो २९
विक्रिपुत्रो ३०, भवेन्मन्त्री न चापर ॥ ७५५ ॥

इति श्रीकुमारपालचरित्रे उदयनमन्त्रिस्वापने ३० गुणा ॥

विना गुरुभ्यो गुणनीरधिभ्यो, जानाति धर्मं न विचक्षणोऽपि । आकर्णदीर्घोऽवललोचनोऽपि,
दीप विना पश्यति नाऽयकारे ॥ ७५६ ॥ नाऽह स्वर्गफलोपभोगवृषितो, नाभ्यर्धितस्त्व मया,
सत्तुष्टसृणमक्षणेन सतत, साधो । न युक्त तव । स्वर्गे यान्ति यदि त्वया विनिहता, यज्ञे ध्रुव
प्राणिनो, यज्ञ किं न करोपि मातृपितृभि, पुत्रैस्त्वया धा यवै ॥ ७५७ ॥ कामराग १ स्नेहरागा
२, रीपत्करनिवारणो । दृष्टिरागस्तु पापीयान्, दुरुच्छेद सतामपि ॥ ७५८ ॥ नवीनजिनगेहस्य,
विधाने यत्कल भवेत् । तस्माददृगुण पुण्य, जीर्णोद्धारेण नायते ॥ ७५९ ॥ सन्मृत्तिका १ ऽमल-
जिह्वावत् २ रूप्य ३ दाद ४, सौवर्ण ५ रत्न ६ मणि ७ चन्दन ८ चारुपिम्बम् । कुर्वन्ति जैनमिह
ये स्वधनानुरूप, ते प्राप्नुवन्ति नृसुरेषु महामुग्गानि ॥ ७६० ॥ धृष्ट्यानापमुता मुनक्षपरिता जजी-
रिता मुग्गिता, ह्युत्सामा रुदती विधाय पदयोरन्तर्गता देहलीम् । कुत्सापान् प्रहरद्वयव्यपगमे शूर्पन्व
कोणे गित्तान्, दद्यात्पारणक वदा भगवत सोऽथ महाभिमह ॥ ७६१ ॥ सन्त्यक्त्यधारी १
पथि पादधारी २, सञ्चित्तधारी ३ वरदीपधारी ४ । भूस्वापधारी ५ मुठ्ठी सदैकाऽऽहारी ६
विमुक्ता विदधाति यात्राम् ॥ ७६२ ॥ दशशुनासम चर्त्री, दशपत्रिसमो ध्वज । दशपञ्चजनना
वेश्या, दशवदयामनो नृप ॥ ७६३ ॥ वेश्या रागवती सदा उदनुगा पद्मी रसैर्भोजन, पुत्र

धाम मनोहरं वपुरहो नद्यो वयःसङ्गमः । कालोऽयं जलदागमस्तदपि चः कामं जिगाथाऽऽदरात्,
 तं वन्दे युवतीप्रबोधकुशलं श्रीस्थूलभद्रं मुनिम् ॥ ७६४ ॥ हस्तात्प्रस्वलितं १ क्षिप्तौ निपतितं २ लयं
 तथा पादयोः ३, यन्मूर्द्धोर्द्ध्वगतं ४ धृतं कुवसने ५ नाभेरधो यद्धृतम् । स्पृष्टं दृष्टजनै ७ धनैरभि-
 हृतं ८ यद्दूषितं कीटकैः, स्त्याज्यं तत्कुसुमं १ फलं २ दलमपि ३ श्राद्धैर्जिनार्चाक्षणे ॥ ७६५ ॥
 आदौ मज्जनचारु चीरतिलकं नेत्राञ्जनं कुण्डलं, नासामौक्तिकपुष्पहारकुण्डलं झङ्कारकं नूपुरम् । अङ्गे
 चन्दनलेपकञ्चुकमणी क्षुद्रावली घण्टिका, ताम्बूलं करकङ्कणं चतुरता शृङ्गारकाः षोडश ॥ ७६६ ॥
 त्तानं १ कुन्तलधूपनं च २ कवरीगुम्फः ३ करे वीटकं ४, चीरं ५ चन्दनलेप ६ कञ्चुक ७ रदोद्योता
 ८ ज्ञना ९ ऽलक्तकम् १० । ताम्बूलं ११ तिलकं १२ च पत्रलतिका १३ कर्पूरपूर १४ स्थाया,
 पुष्पाणां मुकुटो १५ नखेषु रचना १६ शृङ्गारकाः षोडश ॥ ७६७ ॥

प्रकारान्तरम्—

क्षौरं १ मज्जन २ वस्त्र ३ शीर्षतिलकं ४ गात्रे विलेपार्चनं ५, कर्णे कुण्डल ६ मुद्रिका च ७
 मुकुटं ८ पादौ च चर्मोर्जितौ ९ । हस्ते खड्ग १० पटाम्बरं ११ कटिद्वारी १२ विद्याविनोदो १३
 मुखे, ताम्बूलं १४ करकङ्कणं १५ चतुरता १६ शृङ्गारकाः षोडश ॥ ७६८ ॥ कन्यागोशङ्गभेरी-
 दधिफलकुसुमं पावको दीप्यमानो, नागेन्द्रोऽधो रथो वा नृपतिरभिमुखः पूर्णकुम्भो द्विजो वा । वेद्या
 स्त्री सान्द्रमांसं जलचरयुगलं सिद्धमन्नं [यतिर्वा] शतायुः, प्रस्थाने प्रस्थितानां यदि भवति ध्रुवं सिद्धिरेवं
 नराणाम् ॥ ७६९ ॥ भेरीमृदङ्गमृगमर्दलशङ्खवीणा, वेदध्वनिः सधवमङ्गलगीतघोषा । पुत्रान्विता च
 युवतिः सुरभिः सवरसा, धौताम्बरश्च रजकोऽभिमुखः प्रशस्तः ॥ ७७० ॥ वार्त्ताकृत् १ पल्लवप्राही
 २, निद्राल ३ रतिचञ्चलः ४ । अनुत्थितसमुत्थायी ५, व्याख्यानाऽनर्हपञ्चकम् ॥ ७७१ ॥ न चौर-
 ग्राह्यं न च राजग्राह्यं, प्रयाणकाले न च भारवाह्यम् । एतद्धनं सर्वधनप्रधानं, विद्याधनं सत्पुरुषा
 वहन्ति ॥ ७७२ ॥ अमन्नमक्षरं नास्ति, नास्ति मूलमनौपधम् । अनाथा [निर्धना] पृथिवी नास्ति,
 आम्नायाः खलु दुर्लभाः ॥ ७७३ ॥ असारस्य पदार्थस्य, प्रायेणाऽऽडम्बरो महान् । नहि स्वर्णे
 ध्वनिस्तादृग्, यादृक् कांस्ये निरीक्ष्यते ॥ ७७४ ॥ कार्याणि बहुमित्राणि, दुर्बलानि बलानि च ।
 वने बद्धो महानागो, मूपकैः परिमोचितः ॥ ७७५ ॥ बहुभिर्न विरोद्धव्यं, दुर्जयो हि महाजनः ।
 स्फुरन्तंमपि नागेन्द्रं, भक्षयन्ति पिपीलिकाः ॥ ७७६ ॥ शक्यो वारयितुं जलेन हुतमुक् छत्रेण सूर्या-
 तपो,—नागेन्द्रो निशिताङ्गुशेन समदो दण्डेन गोगर्दभौ । व्याधिर्भेषजसङ्ग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विपं,
 सर्वस्यौपधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौपधम् ॥ ७७७ ॥ रे लोलोत्वणकहोल !, धिक् ते सागर !
 गर्जितम् । यस्य तीरे तृपाक्रान्तः, पान्थः पृच्छति कूपिकाम् ॥ ७७८ ॥ वाचको लभते लक्षं, लेखः
 कोटिं विशेषयेत् । दृष्टे कोटिशतं मूल्यं, निर्मूल्यः खेष्टसङ्गमः ॥ ७७९ ॥ सुअसायरो अपारो, आउं
 थोवं जिजा य दुस्मेहा । तं किंपि सिक्खियबं, जं कज्जकरं च थोवं च ॥ ७८० ॥ वासश्चर्मविभूषणं
 शवशिरो भस्माङ्गरागः सदा, गौरैकः स च सङ्गरेष्वकुशलः सम्पत्तिरेतादृशी । ईशं खं परिहृत्य
 याति जलधिं, रत्नाकरं जाह्ववी, कष्टं निर्धनकस्य जीवितमहो ! द्वारैरपि त्यज्यते ॥ ७८१ ॥ धर्मो
 यत्र धनं तत्र, समराशितया स्थिरम् । यत्राऽधर्मो न तत्रेदं, न च पञ्चमयोगतः ॥ ७८२ ॥ पुण्यादेव
 समीहितार्थघटना नो पौरुषात्प्राणिनां, यद्धानोर्भ्रमतोऽपि नाऽम्बरतले स्यादष्टमः सैन्धवः । स्वस्था-
 नात्पदमात्रमप्यचलतो विन्ध्यस्य चाऽनेकधा, जायन्ते मधुपालिपालितयशःश्रीलम्बिनः कुम्भिनः
 ॥ ७८३ ॥ अस्माकं वदरी चक्रे, युष्माकं वदरी गृहे । वादरायणसयोगाद्, यूयं यूयं वयं वयम्
 ॥ ७८४ ॥ पतिः १ श्वशुरता २ ज्येष्ठे, पतिर्देवरताऽनुजे । प्राण्डवैः सह पाञ्चाल्या,—स्त्रितयं

त्रितय त्रिषु ॥ ७८५ ॥ पञ्चानामपि नो भर्ता, न सा प्रकृति मानवी । सा वृकोदरपादेन,
एनादशचमूपतिम् ॥ ७८६ ॥

[इति कृष्णस्य भीम प्रत्युक्ति ॥]

वृत् प्रायः राज्यं जलधिबलये भूमिनिलये, सुप्तं मुक्तं कैश्चिद्भुवि नृपतिभिर्जन्म विदितम् । चर
प्राणैर्नीतं मरणमधुना वीरशयने, शिवा श्वा काको वा स्पृशतु यदि वा पाण्डुतनय ॥ ७८७ ॥

[इति दुर्बोधनस्य भीम प्रत्युक्ति ॥]

मूर्खस्यपत्नी राजेन्द्रो विद्वाश्च वृषलीपति । उभौ तौ तिष्ठतो द्वारे, कस्य दानं प्रदीयते ॥ ७८८ ॥

[इति युधिष्ठिर प्रति भीमोक्ति ॥]

सुखासेव्यं तपो भीम, विद्या कष्टदुरासदा । विद्वास पूजयिष्यामि, तपसा किं प्रयोजनम् ? ॥ ७८९ ॥

[भीम प्रति युधिष्ठिरोक्ति ॥]

श्रान्तचर्मगता गङ्गा, क्षीरं मघघटस्थितम् । [कु] अपात्रे पतिता विद्या, किं करोति युधिष्ठिर ! ॥ ७९० ॥

[युधिष्ठिर प्रति अञ्जनोक्ति ॥]

न विद्यया केवलया, तपसाऽपि च पात्रता । यत्र स्वातामिने चोभे, तद्वि पात्रं प्रचक्ष्यते ॥ ७९१ ॥

[युधिष्ठिरादीन् प्रति द्वैपायनोक्तिर्महामारते ॥]

दारिद्र्यानलसन्ताप, श्रान्तं सन्तोषवारिणा । याचकाशाविघातान्त-र्दाहं केनोपशान्त्यतु ॥ ७९२ ॥
यान्तु यान्तु घत प्राणा, -अर्थिनि व्यर्थता गते । पश्चादपि हि गन्तव्यं क्व सार्थं पुनरीदृशः ॥ ७९३ ॥

[माघवाक्यम्]

बाह्यारिभ्योऽपि तदुक्तं, -मन्तरङ्गारयोऽधिका । जीयन्ते शक्यतो बाह्या, -अन्तरङ्गाश्च शास्त्रतः
॥ ७९४ ॥ भेरीचर्जरकणाश्च, वयं प्रासादवासिनः । न चैते पक्षिणो राजन् !, ये यान्ति करता-
हनात् ॥ ७९५ ॥ वारिभ्य नृपति स तौ निचपतिस्तस्य प्रसादाद्भूद्, भैक्षं भोजनमशुक्लं दशदिश
सन्निधानि देवालयया । मद्भिद्वेषिणि लब्धसगतिरिति त्वप्याश्रिते ह्युपया, मद्भृत्या विनियोजितास्त्वर-
पत्न्येनाऽत्र न का गति ॥ ७९६ ॥ समा पट्टिर्द्विन्ना मनुजकरिणा पञ्चरुनिशा (१२० व दिनः),
ह्याना द्वारिदात् ३२, ररकरभयो पञ्चकृति २५ । द्विरूपा सैवायुर्वृषमहिपयो १२, द्वौदश शुनः,
स्मृतं छागार्दीना दश च परमं पङ्क्तिरधिकम् ॥ ७९७ ॥ पश्य लक्ष्मण ! मयाया, धक् परमघा-
मिकं । शनैः शनैः पदं घते, जीवानां वधशङ्कया ॥ ७९८ ॥ वैर १ वैश्वानर २ व्याधि-वाद् ४
व्यसन ५ लक्षणा । महानर्थाय जायन्ते, वफारा पञ्च वार्धिता ॥ ७९९ ॥ शून्यसप्ताह्वहस्ताश्च,
चत्रे दुवसुवह्वय (३८११२०७०) । एतत्सह्याह्वनिर्विष्टो, -घनमारं प्रकीर्तितं ॥ ८०० ॥
चत्वारं पुष्पिता मारा, अष्टौ च फलपुष्पिता । वरुणो मारपटू च, वासुदेवप्रकीर्तितम् ॥ ८०१ ॥

महारा मारा पुनरनेन प्रकारेण्यऽपि—

धन्पट्टम् १ पारिजात २ महारा ३ हरिचन्दन ४ सन्तान ५ घट ६ पिप्पल ७ विंशति ८
उडुपर ९ विंशति १० वीचभोय ११ वृक्ष १२ फलभोय १३ मूलभोय १४ सर्वभोज्य
१५-१६ काष्ठभोय १७ पत्रभोज्य १८ इति ॥ ८०२ ॥ ये लेखयन्ति तिनशासनपुस्तकानि,

व्याख्यानयन्ति च पठन्ति च पाठयन्ति । शृण्वन्ति रक्षणविधौ च समाद्रियन्ते, ते मर्त्यदेवशिव-
शर्म नरा लभन्ते ॥ ८०३ ॥ दीपो ज्ञानमयो यस्य, वर्तिर्यस्य तपोमयी । ज्वलते शीलतैलेन, न
तमस्तस्य तिष्ठति ॥ ८०४ ॥ वाल्मीमन्दमूर्खाणां, नृणां चारित्रकाङ्क्षिणाम् । अनुग्रहायं तत्त्वज्ञैः
सिद्धान्तः प्राकृतः कृतः ॥ ८०५ ॥ मायासीलह माणुमां, किमुसां किमु पत्तिज्ज ण जाइ । नीलकंठ
महुर उलवइ, सविस भुजंगम खाइ ॥ ८०६ ॥ शिरमा धार्यमाणोऽपि, सोमः सोमेन शम्भुना ।
तथापि कृशतां धत्ते, कष्टं खलु पराश्रयः ॥ ८०७ ॥ अलिअं जंपेइ जणो, पुत्तो जं होइ तायसा-
रिच्छो । अत्थमिए रविदिवे, खणमिक्कं किं तवउसणी ॥ ८०८ ॥ जम्मंतीए सोगो वडुंतीए च वडुए
चिंता । परिणीआए दंडो, जुवइपिया टुक्खिओ निच्चं ॥ ८०९ ॥ न विना मधुमासेन अन्तरं पिक-
काकयोः । वसन्ते च पुनः प्राप्ते, काकः काकः पिकः पिकः ॥ ८१० ॥ यवागूजरणे जाड्यं, मोद-
कानां तु का कथा । वचनेऽपि दरिद्रत्वं, घनाशा तत्र कीदृशी ॥ ८११ ॥ वायुना यत्र नीयन्ते,
कुञ्जराः पट्टिहायनाः । गावस्तत्र न गण्यन्ते, मशकस्य च का कथा ॥ ८१२ ॥ अतिपरिचयादवजा,
भवति विशिष्टेऽपि वस्तुनि प्रायः । लोकः प्रयागवासी, कूपे स्नानं समाचरति ॥ ८१३ ॥ अपस-
रणमेव युक्तं, मौनं वा तत्र राजहंसस्य । कट्टु रटति निकटवर्ती, वाचालष्टिट्ठिभो यत्र ॥ ८१४ ॥
रे वालकोकिल करीरमरुस्थलीपु, किं दुर्विदग्ध ! मधुरध्वनिमातनोपि । अन्यः स कोऽपि सहकार-
तरुप्रदेशो, यस्मिन् जयन्ति तव विभ्रमभापितानि ॥ ८१५ ॥ अस्मान् विचित्रवपुपश्चिरपृष्ठलमान्,
कस्माद्विसुञ्चसि विभो ! यदि वा विमुञ्चेः । हा हेति केकिवर ! हानिर्गिर्वं तवैव, भूपालमूर्द्धनि पुनर्भ-
विता स्थितिर्नः ॥ ८१६ ॥ शैलं नाम गुणस्तवैव तदनु स्वाभाविकी स्वच्छता, किं ब्रूमः शुचितां
ब्रजन्ति सुवियः स्पर्शेन यस्याऽपरे । किं चाऽतः परमस्ति ते स्तुतिपदं यज्जीवितं देहिनां, त्वं चेन्नीच-
पदेन गच्छसि पयः कस्त्वां निरोद्धुं क्षमः ॥ ८१७ ॥ सत्यं चेत्तपसा च किं ? शुचि मनो यद्यस्ति
तीर्थे न किं ? सद्धिया यदि किं धनैः ? सुमहिमा यद्यस्ति किं मण्डनैः ? । लोभश्चेदगुणेन किं ?
पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः ? । सौजन्यं यदि किं निजै ? रपयज्ञो यद्यस्ति किं मृत्युना ? ॥ ८१८ ॥
अग्नि १ रायः २ स्त्रियो ३ मूर्खाः ४, सर्पो ५ राजकुलानि ६ पद् । नित्यं यत्रेन सेव्यन्ते, सद्यः
प्राणहराणि पद् ॥ ८१९ ॥ आयुषो १ राजवित्तस्य २, पिशुनस्य ३ धनस्य च ४ । खलस्त्रेहस्य ५
देहस्य ६, नाऽस्ति कालो विकुर्वतः ॥ ८२० ॥ त्रयः स्थानं न मुञ्चन्ति, काकाः १ कापुरुषा २
मृगाः ३ । अपमाने त्रयो यान्ति, सिंहाः १ सत्पुरुषा २ गजाः ३ ॥ ८२१ ॥ राजा १ कुलवधू २
विप्रा ३, नियोगि ४ मन्त्रिण ५ स्तथा । स्थानभ्रष्टा न शोभन्ते, दन्ताः ६ केशा ७ नखा ८ नराः
९ ॥ ८२२ ॥ उपाध्याय १ अथ वैद्यश्च २, प्रतिभू ३ मुक्तनायिका ४ । सूतिका ५ दूतिका ६ चैव,
सिद्धे कार्ये तृणोपमाः ॥ ८२३ ॥ चित्रकृत् १ काव्यकर्ता च २, कुवैद्यः ३ कुनरेश्वरः ४ । चत्वारो
नरकं यान्ति, पञ्चमो ग्रामकूटकः ॥ ८२४ ॥ आयुः १ कर्म च २ वित्तं च ३, विद्या ४ निधन-
मेव च ५ । पञ्चैतानि हि सृज्यन्ते, गर्भस्थस्यैव देहिनः ॥ ८२५ ॥ पट्टिर्गमनके दोषा, अशीतिर्म-
धुपिङ्गले । गतं च टुंटमुंटेपु, काणे संख्या न विद्यते ॥ ८२६ ॥ हस्ते नरकपालं ते, मदिरामांस-
भक्षिणि । भानुः पृच्छति मातङ्गि !, किं तोयं दक्षिणे करे ? ॥ ८२७ ॥

[इति भानुवाक्यम् ॥]

चण्ढाली प्राह—

मित्रद्रोही १ कृतघ्नश्च २, स्तेयी ३ विश्वासघातकः ४ । कदाचिच्चलितो मार्गो, तेनेयं क्षिप्यते
छटा ॥ ८२८ ॥

